टीका मानसदीपिका रामायण के साथ ॥
सपूरणता ग्रंथ की गौरी सुत के हाथ ॥१॥
रामायणसटीक

टीका मानसदीपिका रामायण के साथ ॥
सपूरण ता ग्रंथ की गौरी सुत के हाथ ॥१॥
रामायण सटीक
No
JAMMOO

Manasdeepka
Sambodhan Ramayana
by
Tulsidas

Nawal Kishore
1880.

मानसदीपिका

مانس دیپکا

(सम्बोधन रामायण) तुलसी दास कृत

जिसमें

उपोद्घात पुराण काव्य लक्षणादि का विस्तार और खड्ग बन्ध, नाल बन्ध, त्रिशूल बन्ध, नाग बन्ध, छत्र बन्ध, किरीट बन्ध, मयूर बन्धादि चित्रों के स्वरूप और विषय विस्तार पूर्व्वक वर्णित हैं

जिसको

श्री मन्महाराजाधिराज गुणि गण मण्डली मण्डन

श्री ईश्वरी नारायण सिंह जी बहादुर काशी नरेश की

आज्ञानुसार

कवि कुल यश वितन्त सिरोप नामक श्री ईश्वर कवि ने अतीव

परिश्रम कर बनाई॥

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई
दिसम्बर सन् १८८० ईस्वी

श्रीगणेशाय नमः अथ श्री सीताराम परम भक्त गोस्वामी तुलसी दास
कृतस्य श्री मत् भाषा रामायणस्य मानस दीपका सभाख्याया टीकाया
भूमिका लिख्यते। तत्रादौ मंगला चरणं दोहा परसुधरन संपति भरन
अवदरदरन गनेश विघन हरन मंगल करन रखहु शरन हमेश १ एकरदन
करिवर वदन सिद्धि सदन सुद दानि मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन
जिय जानि २ सिंदुर सह सिंधुर वदन रदन विशद द्युति भालि ईश्वरकवि
कवि वोनि रवि रवि पवि छवि दवि जाति ३ अथ संक्षेपतो राजं दश वर्णनं।
हरिपद छंद। परम तपस्वी तेजस्वी वरीरखदू मिश्र उजागर हुते वेद विद वदनीय
शुभ सत्य सुयश के सागर ४ गौतम गोत्र सुपात्र परिख पद पंकज पै शिर धरिकै
दये ग्राम वसु विंशति जिनको न्प्रबना रझल करिकै ५ क्यों छल कियो कौन
थल कैसे कौन लह्यो फल भारी बखुरि मिश्र जू को प्रभाव अरु वंशावली सुखारी
६ यह सब कथा कहांलगि कहिये सुनहु सुजन सुख दानी काशि राज चंद्रिका
ग्रंथमें सह विस्तरि बखानी ७ यह प्रसंग बस कहां कहीं ते वंशावली अद्यापित जाहि
रव्हे जगमें विशेष जेहि कियो वंश निज भूषित ८ बिदू मिश्र सुनीश्वर सुत के वंश
माहि प्रगटे हैं महा राज बरवंड सिंह जिन्ह प्रबल प्रतीप ठटे हैं ९ बने ठने परगने
छान वंगने घने मन भाये तिन्हें रखिव निज शरन शत्रु हति काशी राज कहाये १०
कहीं सत्य सुलवेसो सज्जन सावधान मन हूजो न्प बरिवंड समान जगतमें
न्पवरिवंड न हूजो ११ तासु धर्म अरु राज हूहू को अधिकारी सुत सुंदर न्पम
हीप नारायण प्रगटे मोहत पुहु मिपुरंदर १२ तिनके सुत भे तीनिहू सब प्रकार
सबलायक जिन्हको यश जहांन में जाहिर गान करत गुनगायक १३ तिन्ह
में ज्येष्ट श्रेष्ट काशी पति न्पति उदित नारायन तदनु दीप नारायण बाबू परम
पुन्य पारायन। तदनु प्रसिद्ध जगत में बाबू श्री प्रसिद्ध नारायण दान देत हरि
ध्यान धरति गुनगान करति रामायण १५ अथाति संक्षेप।। क्रमेण राज
श्री राजधानी राज सभा वर्णनं दोहा श्री काशी पति न्पति की अतिराज श्री
भाति रचित राज धानी रुचिर सुख दानी सरसाति १६ सभा भूरि शोभा भरी
भूषित प्रभा विभाति निजकर रची विरंचि जनु रंचन बरनी जाति १७ अथ सुख्य
प्रसंग वर्णनाहरि गीतिका छंद। लिहि सभाव रवि चराजगादी सत्यवादी मराज

ते न्टप उदित नारायण रहे मन मुदित नित्य विराजते अति सुमति प्रबल
प्रताप सुयश कलाप गुनगन धाम से जगमें उजागर शील सागर रूप आगर काम
से १८ तेह बंधु शोभा सिंधु बैठे एक दिन दिनमें रहे जनु धर्म राजस भीम अ
र्जुन पेखि छबि सब ही कहं तहां दास तुलसी रचित रामायन कथाके अर्थको लखि
औ प्रसंग सुढंग भाषे सबै अंग समर्थको १९ इहि हेत अंग समेत टीको निपट
नीको ई बने जिहि जगत सन माने सुधी शक बीरवृंद भलो भनै सुनि सभा
सदभे कंठ गदगद गिरा सुखप्रद सुदमई कहि जयति काशी राज आज अ
नूप यह अज्ञा भई २० चौपाई बाबू श्रीप्रसिद्ध नारायन भूसुर भक्त पुन्य पारा
यन कविको सिर्दहि महद मुद दायक भूप बंधु सबविधि सबलायक २१ भूपति
की आज्ञा अतिभारी अद्भुत अमित जगत हितकारी सुनत श्रवन निजशिर
परधारी समुझि सुखद सुरतरुकी डारी २२ क्यौंकि तिलक है न्टप विरचाये
जे अति अद्भुत जगत कहाये पहलो तिलक रामलीला वर जिहि लखि
परत नातिमिर कूपनर २३ सोरठादि दोहा समुदाई छंद अमंद चारु चौपाई
जाको जहां अर्थहै जैसो लीला ललित लखावति तैसो २४ दूजो तिलक स
कल मन भायो। रामायन सहचित्र लिखायो मूर्ति मंत जनु अर्थ विराजै
जिहिं लखि अर्थ कथन लजि भाजै २५ यद्यपि तिलक दिव्य येदोऊ अति
प्रसन्न इनतें सब कोऊ तदपि सकल पुर नगर निवासी जेहैं रामायन अ
भ्यासी २६ तिन्हैं नसुलभ सुलभ हू जिनको सो वन सदा नसब थल तिन
कौं तातें सुलभ सदा अरु सब थल तीजो तिलक करन मय अति भल २७ बनै
भूप यह आज्ञा कीन्हीं वांछित अति संपति जनु दीन्हीं दाहिने समुझि काम
तरु डारी न्टपति अनुज निजशिर परधारी २८ तब निज भक्ति समेत अ
नुज कहं पेखि भये न्टप प्रमुदित मनमहं षट्पदी प्रमुदित है न्टप नीति रीति
सब प्रीति अमित हित दान सबुधि सनमान ज्ञान भगवान ध्यान नित राग
रंग सतसंग संग जुत अति अभंग तहं परम धर्म लगि जग्य करत सर्वज्ञ न्टपति
कहं बढ़ वर्ष अमल उत्कर्ष अति हर्ष सहित वीतत भये लखि नेम सेम प्रद प्रेम
निज पूर्न तूर्न रघुपति दये २९ दो· काशिराज न्टपराज तव मनमें कियो विचार सब
प्रकार सामर्थ्य युत अब यह भयो कुमार ३० वयलघु अलघु प्रताप अति सुयशवंत

गंभीर। सील सिंधु शोभा उदधि धर्म धुरंधर धीर ३१ दयावंत दानी बड़ो सतगुन
वंत सुजान अस्त्र शस्त्र में विज्ञतर वर कृतज्ञ बलवान ३२ बहु विधि विधानि विधि
विधि बुधि सम्हहि निधान सत संगति रति समुझि अति नरपति मुदित महान
३३ नेहहि करि हरि चरनतें देहहि परिखि अनित्य सुतहितु सत सुव राजकै भूप
भये कृत कृत्य ३४ षटपदी तदनंतर शुभ करन सुमरि गुरु चरन चारु तर
सुनत दीहहु स्वदरन ग्रंथ गीतादि मुक्ति कर सकल सुबुध सनमान
साधु गुन गान ज्ञान रत करत दान हरि ध्यान धरत नहिं आन आचरत
कीते सु वर्ष बीते जबहिं तब प्रकर्ष हर्षहि लह्यौ है माप्त काम निज नाम।
करि परम धाम जैबो चह्यौ ३५ चौपाई अष्टा दश शत द्विनवति १८९२ सं
बत अति पुनीत रवि सौम्य गोलगति चैत्र शुक्ल षष्ठी शनि वासर मध्य
दिवस लहि समय शुद्धतर ३६ कवित्त लच्छन अगाय करि परम सुलच्छ
न की गाय वरवच्छन की पूरन पनन सौं के सकैं बखानि अलकेश कौसी
संपतहू काशि केश चहित दै वेद की भननि सौं काशी माहिं बैठ कमला सन
कुशासन पैं आसन समेटि कै समाधि की बननि सौं सत्य संध जस कै प्रबं
ध सुनि ह्वै कै मग ब्रह्म रंध्र तन छोड़ि छूटै बंधननि सौं ३७ चौपाई तब जुब
राज समय लखि शुभतर राज तिलक लहि सुख सुख माकर साज सका
य सत्य वादी वर बैठ राज राज गादी पर ३८ कवित्त बैठे राज ईश्वरीप्रसा
द नारायन सिंह दीपति द राज शुभ साज सजे तन नैहैं वैरी गन ओज न सौं
हीन बिन फौजन ह्वै भोजन विहाय वेगि भाजे बन बन हैं रजे कवि को
विद समूह जस साजे तिन बाजे बजे छाजे प्रजा वृंद छन छन हैं आये जे
यगान शीश जिनके नगन पाय मारो धनगन ह्वैगे मंगन मगन हैं दो
तव मंगन गन मगन ह्वै मौजें पाय विशेष कियो गौन जिन भौन प्रति
दै आशिषा अशेष ४० आशिषा यथा कवित्त राज भूप ईश्वरीप्रसाद
नारायन सिंह रावरे प्रतापन की पंगति भगी रहैं तंत करि दिगहू दिगंतर
परिजंत सची कंत सी सुकीरति अनंत उमगी रहैं ईश्वर विराजि राजकाजमें
परम छेम नेम सौं निबाहैं नीति प्रेम सौं पगी रहैं काशिराज संजुत समाज
जीवौ जुग जुग जासो जग जीवन की जीवका जगी रहैं ४१ दोहा। विद्यमान

मनुजेंद्रकहं जब सभेत न्टप नीति राज करति अति हर्ष सों कित्ते वर्षगे॰ बीति ४२ हरिगीतिका छंद तब परम धाम निवासकारी कासिराज न रेशकीजु विशेष आज्ञा शीशधारी ध्याय मूर्ति महेशकी गुनिभूपबंधु सुजान शोभा सिंधु सोई कहतभे वर विद्यमान नरेश काशी राज सुनि सुख लहतभे ४३ अवधेश भक्त सुव्यक्त विद्या जुक्त सतगुन संचयी॥ रघुनाथ दास बुधेंद्र पै मनुजेंद्रकी आज्ञा भई तिनदास तुलसी रचित रामायन सुटीका निमेई धरि नाम मानस दीपिका सब दीपजादीपित॰ भई ४४ दोहा मुद्रित मुद्रा अल रनि लच्छन स्वच्छ समेत दस नहेत स मत्त जतु अस्तथगिरनिकेत। सोरठा ईश्वरकवि कविराय भूरि भव्यह यभूमिका विरची आज्ञापाय विद्यमान मनुजेंद्रकी ४६ स्वस्तिश्रीका शिराज महाराजाधिराज श्री ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह स्याज्ञानुगा मिना काशि वासि मिश्रोपनामकेन ईश्वराख्येनकविना विरचिता गोस्वामी तुलसी दासकृत श्रीमद्रामायणस्य मानसदीपिका समाख्य याटीकाया भूमिका सम्पूर्णा॥ ॥ शुभमस्तु ॥

मानस दीपिका

श्री गणेशाय नमः दोहा गणपति सियपति गौरिपति गौरि प्रमापति पाय। वंदौं वंदन जगतके चंदन लौंसुखदाय १ दुरित दोष दूषन दलन जासु नाम भवसेतु ताहि सुमिरि टीका रचित काशिराज मुदहेतु २ यासभा में वि चार भयो पंडित अरु कविनसों श्री गोसाईंजी कृत रामायण ग्रंथ बहुत विख्यात है अरु याको तिलक बहुत महात्मौं कियो है बाबा राम च रण दास जी अयोध्या संत सिंह जी लहोर राजा गोपाल सरण सिंह चकार अरु स्वामीजी महाराज वर्तमान काशी जेनिज गुरु श्री विद्यारण्यतीर्थ स्वामी जी के नामते रामायण परिचर्या बनायो सो अति संक्षेपते सबको ज्ञा न नहीं होत ताको अरु विस्तार किये जाय अरु प्रथम उपोद घात॰

मे रामायण को है प्रकार को संदेह बर्णन कियो चाहिये एक सत्यत्व में दूसरो
प्रसंग के भेद सों एक वाक्यता पूर्वक बूझे सों आवै अरु स्मृति श्रुति ग्रंथांत
रको प्रमान न लिख्यो जाय हेतु किया ग्रंथ को सब कोऊ देखे गो याते श्री
गोसांई जू के ग्रंथन को प्रमान दियो जाय अरु श्री गोसांई जी अरु औरहू म
हात्मों को सम्मत एही हो कि ज्ञान भक्ति संपुट में नाम रत्न या रामायन में
सिद्धांत है औरहू रामायण विविध भांति प्रसिद्ध हैं रामायण सत कोटि अपा
र अरु अर्थ विषै जो सरल रीति अस रूप दन ते मान्य सोई मुख्य सो छाड़ि आ
न ही जो अर्थ नहीं है सो करि आपन अर्थ निकारत हैं ताही ते मतन सों अब
ऐसो विरोध है कि जैसे एक वाक्यता सब देवतन के परत्व में होत है सो
ऊ व्याप्ति अव्याप्ति करकै भी मतन में व्यात है कष्ट ते अरु यहि ग्रंथ में
अति आग्रह नाहीं राखत ताहेतु ते याको सब ग्रंथ मानत हैं अरु मत ग्रंथ
के आचार्य बड़े बड़े भए हैं वा में जो विचार कियो जाय तौ जा स्थान पर सि
द्धांत करत हैं कि एही अर्थ सत्य है आग्रह सो जो सिद्धांत है सो रहि जात है
सो पुरानादिक सों विरुद्ध भासत है परत्व सब पुरान में भिन्न है परंतु
एक वाक्यता होइ सकै है यथा मत वादन सो अरज यही कि अपने अपने
इष्टन को तुम व्यापक मानत हो किन ही उ व्यापक मानो तो इष्टन में
कतहूं न वैर विरोध चही नहि व्यापक वह तो वाहू में जीव दसा आय रही १
का निर्गुन कों मत में रहि है एकै बात सही सार भाग सबही को लीजे रस सेत
जिये छाछ मही २ दूसी वाद सार निज करनी वोल गए अस सार गही वेद
मंत्र दमड़ी के कारण जिन वेचो करि रही ४ ने चित चेतन कौ विचार मत परवि
चार सार नहिं सो चो पर उपकार सो नवनी ति विद्या दधि मथि तजि वारि बि
कार मति मदिरा अति पान किये ते होत सुमत मत वाद ५ सत विद्या सागर
सम सीतल करनी करै सम्हार ३ सुहृद निकट हृदय स्थ त्यागि कत बाहर क
रत प्रकार ४ ऐसो ई जो बात न कही जाय वाको कहत हैं अरु न देखो जाय ता
को देखतु हैं ताते प्रथम पुरानन शास्त्रन के लक्षण सिद्धांत कछु दृष्टांत अरु
द्वितीय वर्तमान काल में राम गुलाम जू पंडित रहे सर्व शास्त्र अरु पुरान याही
रामायन के दृष्टांत हेतु श्रम कियो रह्यो सो सर्व अर्थ विस्तर भय ते न लिखो जायहै

परंतु अर्थ जो शब्दते अरु जावत का व्यंग लक्षणा विंजना पूर्वक सह जानिकैं सोई सद् अर्थ है याहेतुतें कछु का यंग हू अरु त्रतीय सर्व श्रेय भक्ति जो नाममूल है श्रीरामायन के तिलक को सखी प्रसंग रीति करकै अरु याही में श्लोकन के अर्थ अरु नाम निरूपन मानस इत्यादि जहां जहां क्लिष्ट होय तहां तहां स्पष्ट अर्थ प्रसंग के अंतरगत अरु चतुर्थ बहुतेजन यामें कहूं कहूं संका करत हैं तातें कछु मुख्य मुख्य संका को समाधान हू अरु पंचम जावत यामें विषम विषम शब्द हैं ताको अर्थ मुख्य एक कोश करिकै ए पांचो अंग युक्त श्री रामायण को तिलक लिख्यो ॥ इति श्री मानस दीपिकायां उपोद्घात वर्णने प्रथमः प्रकाशः

श्रीगोसांई जी कह्यो है नाना पुराणनि गमा गम इत्यादि तातें कछु पुराणादि अंग लिखत हैं अथ प्रथम अंग दश लक्षण पुरानन के भागवत में कह्यो है सर्ग १ विसर्ग २ स्थान ३ पोषण ४ ऊति ५ मन्वंतर ६ ईशान कथा ७ निरोध ८ मुक्ति ९ आश्रय १० प्रथम सर्ग लक्षण महाभूत आकाशादि तन्मात्रा पंच शब्दादि इंद्री दश महत्तत्व अहंकार सब को ब्रह्म से गुण वैषम्य करिकै जो परिनाम वातें विराट स्वरूप अरु स्वरूप करिकै जो जन्म वाको नाम सर्ग १ विराट से जो भयो चराचर को जन्म सो विसर्ग २ भगवान के विजय पूर्वक सृष्टि को मर्यादा पालन करने से जो उत्कर्ष सो स्थान ३ अपने भक्त ऊपर अनुग्रह सो पोषण ४ कर्मन की बासना अरु वर्णाश्रम रूपा सो ऊति ५ अपने काल पर्यंत एक एक मनु सत धर्म को पालन करत हैं सो मन्वंतर ६ ईश भगवान को जो अनुचरित सोई ईशान कथा अथवा ईश जो सूर्य चंद्र वंश के राजा उन्ह की जो कथा सोई ईशान कथा कहिये ७ दुष्टन को मारनो वा हरि की जोग निद्रा के शक्ति सहित जीवन का लय सो निरोध ८ आरोपित कर्तृत्वादि त्यागि कै शुद्ध ब्रह्म स्वरूप जो स्थिति सो मुक्ति ९ जगत की उत्पत्ति अरु विनाश जाते ज्ञात होत हैं सो आत्मा परब्रह्म सबही को आश्रय १० अरु अपर पुराण के जो पंच लक्षण कहे हैं सो याही दश लक्षण के अंतरगत हैं अरु ये दश पांचो के अन्तर्गत हैं सो पांचों सर्ग १ विसर्ग २ वंश ३ मन्वंतर ४ वंशानु चरित ५ इति पुराण ❊ अथ शास्त्र षट् शास्त्र जो हैं वेद जानिवे को अंग ताको सिद्धांत बात कछू कछू पृथक पृथक लिखतु हैं प्रथम तो मीमां

सो शास्त्र याको आचार्य जै मिनि मुनि यामें यज्ञादि धर्म विषय है अरु
धर्म ज्ञानही प्रयोजन है फल उद्देशकरिकें प्रतिपाद्य जो अर्थ सोधर्म
कहिये स्वर्ग रूप फल केहेतु यज्ञकरिके अपूर्व को भावना करनो अरु भा
वनामें तीन अंशकी अपेक्षा है कारण १ कार्य २ इतिकर्तव्यता ३
कौन कारकें करनो याकारण अंशकी अपेक्षा है क्या करनो याकार्य अंशकी
अपेक्षा है कौन प्रकारसें करनो या इति कर्तव्यता अंश की अपेक्षा है अरु
भावना द्वै हैं एक आर्थी दूसरी शाब्दी अरु अपौरुषेय जो वाक्य सोवेद हैं वेद=
पंच प्रकारको है विधि १ मंत्र २ नामधेय ३ अर्थवाद ४ निषेध ५ भेदतें। सं
पूर्ण वेद जो है सो कोऊ साक्षात्तें कोऊ परंपरातें धर्म प्रतिपादक है विधि चार
प्रकारको है उत्पत्ति १ विनियोग २ अधिकार ३ प्रयोग ४ भेदतें अग्निहोत्र
करनो उत्पत्ति १ अंगको बोधक जो विधि सो विनियोग दधि करकें होम कर
नो इहां विनियोग है अंग द्वै हैं एक सिद्ध दूसरो साध्य दधि आदि सिद्धि
प्रयाजादि साध्य २ कर्म जन्य फलबोधक जो विधि सो अधिकार ३
स्वर्ग फलकेहेतु यज्ञ करनो यहां अंगको क्रमबोधक जो विधि सो प्रयोग
४ वेद संपादन करकें वेदी करत हैं याके सहकारीभूत छः प्रमाण हैं श्रुति
१ लिंग २ वाक्य ३ प्रकरण ४ स्थान ५ समाख्या ६ भेदतें निरपेक्ष जो श
ब्द सो श्रुति है १ सामर्थ जो अर्थ का बोधक होय सो लिंग २ एक अर्थको=
बोधक होय विभाग तें परस्पर आकांक्षा होय सो वाक्य ३ जहां दोऊ को
आकांक्षा है सो प्रकरण ४ जहां दोऊ में एककी आकांक्षा होय सो स्थान
५ समाख्या कही संकेत ६ पुनः विधि तीन प्रकारकी है अपूर्व १ नियम २
परिसंख्या ३ भेद ॥ अत्यंत अप्राप्त अर्थकी जो विधि सो अपूर्व १ अग्नि
होत्र करनौ इहां ॥ पक्षमें प्राप्त जो विधि नियम २ दधि करिकें होम
करनो इहां। स्वभावतें प्राप्त संता पुनः जो विधान सो परिसंख्या ३
पंच पंचनखा भक्ष्य इति। प्रसंसा वाक्य जो है सो अर्थ वाद है १ सो तीन
भांति गुण वाद १ अनुवाद २ भूतार्थ वाद ३ भेदतें ॥ प्रत्यक्षादि प्रमा
णतें विरुद्ध स गुणवाद १ सूर्य स्तंभ है सो प्रत्यक्षादि प्रमाणतें ज्ञान
जो अर्थ वाको बोधक जो सो अनुवाद २ वेत की जलतें उत्पत्ति भूतका=

लिक अर्थ को प्रतिपादक जो सो भूतार्थ वाद २ इंद्र देवतन में श्रेष्ठतर है
इति यज्ञकर्ता को जो संकेत तद्विसिष्टु सो मंत्र ३ यज्ञन को जो नाम सो
नामधेय ४ इच्छा तें अनिष्ट सों प्रवृत्त पुरुष को निवृत्त करनो सो निषेध ५
कलंज को नखानो और उदय होते सूर्य को नदेखनो इहां या रीति तें मीमां
सा परिसोधित तर्कतें वेद के पांचों प्रकार कों जानिकें यथोक्त कर्म के अनु
ष्ठान करिकें पुरुष कों परम पुरुषार्थ को लाभ होत है १८ अथ द्वितीय वैशे
षिक शास्त्र याको आचार्य कणाद मुनि यामें पदार्थ विषय है औ पदार्थ
तत्व ज्ञान प्रयोजन है पदार्थ दोय एक भाव दूसरो अभाव भाव छः हैं द्रव्य
१ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ एक पदार्थ के सामान
धर्म अरु विरुद्ध धर्म जानिवेतें अनेक पदार्थन के अनेक धर्म को ज्ञान
होत है अनेक धर्मों में एक निवृत्ति धर्म है निवृत्ति धर्म तें उत्पन्न जो आ
त्मा साक्षात्कार तातें मोक्ष होत है अभाव चार हैं प्राग भाव १ प्रध्वंसा
भाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ अरु द्रव्यत्व १ गुणत्व २ कर्मत्व
३ ई तीन जाति रूप धर्म हैं सामान्यत्व १ विशेषत्व २ समवायत्व ३ अभा
वत्व ४ ई चार उपाधि रूप धर्म हैं पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश
५ काल ६ दिशा ७ आत्मा ८ मन ९ ई नव द्रव्य हैं अरु पृथिवीत्व १ जल
त्व २ तेजत्व ३ वायुत्व ४ आत्मत्व ५ मनस्त्व ६ ई छः जाति रूप धर्म हैं आ
काशत्व १ कालत्व २ दिशात्व ३ ई तीन उपाधि रूप धर्म हैं रूप १ रस २
गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९
परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७
दुःख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार २४ ई चौबीस
गुण हैं और रूपत्वादिक चौबीसों जाति रूप धर्म हैं पृथवी में रूप १ रस २ गंध
३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपर
त्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं जल में रूप १ रस २ स्नेह ३
स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व
११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं तेज में रूप १ स्पर्श २
संख्या ३ परिमाण ४ पृथक्त्व ५ संयोग ६ विभाग ७ परत्व ८ अपरत्व ९

द्रवत्व १० संस्कार ११ ई ग्यारह गुण हैं वायु में स्पर्श १ संख्या २ परिमाण ३
पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ परत्व ७ अपरत्व ८ संस्कार ९ ई नव गुण हैं
आकाश में शब्द १ संख्या २ परिमाण ३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ ई
छ गुण हैं काल में अरु दिशा में संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग
४ विभाग ५ ई पांच गुण हैं जीवात्मा में संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३
संयोग ४ विभाग ५ बुद्धि ६ सुख ७ दुख ८ इच्छा ९ द्वेष १० प्रयत्न ११ धर्म
१२ अधर्म १३ संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं मन में संख्या १ परिमाण २
पृथक्त्व ३ संयोग ४ विभाग ५ परत्व ६ अपरत्व ७ संस्कार ८ ई आठ गुण
हैं ईश्वर में ज्ञान १ इच्छा २ प्रयत्न ३ संख्या ४ परिमाण ५ पृथक्त्व ६ संयोग ७ वि
भाग ८ ई आठ गुण हैं पृथ्वी १ जल २ वायु ३ तेज ४ ई चारों द्वै प्रकार के हैं एक प
रिमाण रूप दूसरो सावयव द्व्यणुकादि रूप अरु आकाश १ काल २ दिशा ३
आत्मा ४ ई चारों व्यापक रूप हैं मन अणुरूप सावयव अनित्य है बाकी सब नित्य
हैं सावयव के तीन भेद हैं शरीर १ इंद्रिय २ विषय ३ मृत्युलोक मों मिट्टी को श
रीर है वरुण लोक मों जल को सूर्य लोक मों तेज को वायुलोक मों वायु को
अरु घ्राण इंद्री पृथ्वी को रसना इंद्रिय जल को चक्षु इंद्रिय तेज को कर्ण
इंद्रिय आकाश को पृथ्वी मों सातों रूप रहत हैं जल मों स्वच्छ रूप तेज मों प्रका
श रूप अरु पृथ्वी मों छवों रस रहत हैं जल मों मधु रस रहत है अरु पृथ्वी मों
दूनो गंध रहतु हैं कर्म पांच हैं ऊर्द्ध क्रिया १ अधो क्रिया २ संकोच ३ विस्तार
४ गमन ५ ई पांचों कर्म द्रव्य मों रहत हैं अरु सामान्य कहै जाति जाति तीन
हैं व्याप्य १ व्यापक २ व्याप्य व्यापक ३ सत्ता जाति व्यापक है द्रव्य गुण कर्म
तीनों मों रहत हैं घटत्व जाति व्याप्य है द्रव्यत्व जाति व्याप्य व्यापक है नित्य
होय एक होय अरु अनेक मों रहै सो जाति अरु नित्य द्रव्य मों रहै नित्य द्रव्य मों
परस्पर भेद है जाति सो विशेष है समवाय कहिये नित्य संबंध अरु कार्य
के पूर्व जो अभाव प्राग भाव १ कार्य को जो नाश सो प्रध्वंसाभाव २ तीनों
काल मों जो अभाव सो अत्यंताभाव ३ परस्पर जो अभाव सो अन्योन्याभाव ४
अरु प्रमाण द्वै हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ अरु शब्द औ उपमान ई दोउ अनुमान
मों गतार्थ हैं इति तृतीय न्याय तर्क शास्त्र । याके आचार्य मुनि गौतम यामें

सोरह पदार्थ विषय हैं सोरह पदार्थ का ज्ञान प्रयोजन है वे प्रमाण १
प्रमेय २ संशय ३ प्रयोजन ४ दृष्टांत ५ सिद्धांत ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय
९ वाद १० जल्प ११ वितंडा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रह
स्थान १६ ए सोरह पदार्थ हैं या के तत्त्व ज्ञान में मोक्ष होतु है मिथ्या ज्ञा
न के नाश तें दोष को नाश दोष के नाश तें प्रवृत्ति को प्रवृत्ति के नाश तें
जन्म को जन्म के नाश तें दुःख को दुःख नाश मोक्ष है अरु प्रत्यक्ष १ अ
नुमान २ उपमान ३ शब्द ४ ए चार प्रमाण हैं इंद्रिय अरु अर्थ के संबंध
तें उत्पन्न जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष है १ जाके प्रत्यक्ष ज्ञान के अनंतर अनुमि
ति होय सो अनुमान २ जाके सादृश्य ज्ञान के अनंतर उपमिति होय सो
उपमान ३ यथार्थ ज्ञान को जो उपदेश सो शब्द ४ ॥ आत्मा १ शरीर २ इंद्रि
य ३ अर्थ ४ बुद्धि ५ मन ६ प्रवृत्ति ७ दोष ८ प्रेत्यभाव ९ फल १० दुःख ११ मो
क्ष १२ ए बारह प्रमेय हैं इच्छा १ प्रयत्न २ ज्ञान ३ द्वेष ४ सुख ५ दुःख ६ ए छः
आत्मा के लक्षण हैं १ चेष्टा १ इंद्रिय २ सुख ३ दुःख ४ ए चारों जामें रहैं
सो शरीर २ अरु घ्राण १ रसना २ चक्षु ३ त्वक ४ कर्ण ५ ए पांच इंद्रिय हैं सो
भूतन तें उत्पन्न हैं पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ ए पांच भूत
हैं गंध पृथ्वी को गुण रस जल को गुण स्पर्श वायु को गुण शब्द आकाश
को गुण गंध घ्राण को विषय रस रसना को रूप चक्षु को स्पर्श त्वचा को शब्द
कान को विषय विषय जो है सो अर्थ है ४ बुद्धि कहिये ज्ञान ५ एक काल
में एक आत्मा में अनेक ज्ञान की उत्पत्ति नहीं है याही हेतु तें अणुत्व मन को
लक्षण है ६ अरु वाणी १ बुद्धि २ शरीर ३ एतीन का जो प्रयत्न सो प्रवृत्ति ७ प्र
वृत्ति होय जातें सो दोष ८ सो दोष प्रीति द्वेष मोह रूप है अरु मरि के जन्म लेबो
प्रेत्यभाव है ९ प्रीति द्वेष मोह तें सुख दुःख का जो साक्षात्कार सो फल है १० दुःख
कहिये पीड़ा ११ दुःख नाश मो[illegible] है १२ एक में अनेक विरुद्ध धर्म को जो ज्ञान
सो संशय ३ जाके हेतु प्रवृत्ति होय [illegible]योजन ४ वादी अरु प्रतिवादी का
जो अर्थ में विरोध न होय सो दृष्टांत ५ सि[illegible] चार हैं सर्वशास्त्र १ एकशास्त्र २ नवीन ३
अधिकरण ४ जाके सिद्धि के अनंतर और अर्थ की सिद्धि होय सो अधिक
रण सिद्धांत है ६ अवयव पांच हैं प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय ४

निगमन ५ पर्वत मों वह्निहै ई ज्ञान प्रति ज्ञानहै १ धूमतें ई ज्ञान हेतु २
जहां धूम तहां बिन्ह जैसे रसोई घर्म्मी ई उदाहरण ३ रसोई के घर साहश्य
पर्वतहै ईज्ञान उपनय ३ धूम ज्ञानतें पर्वत मों बन्हिहै ईज्ञान निगमन
है ७ अरु कार्य अरु कारण का बिचार सो तर्क ८ निर्णय कहिये निश्चय ९
सिद्धांततें अविरुद्ध जो बादी प्रति बादी का दूषण भूषण सो बाद १० छला
दिकतें जो साधन में दूषण सो जल्प ११ अपने पक्ष के स्थापनों मों हीन =
जो दूषण सो वितंडा १२ हेत्वाभास पांचहैं व्यभिचारी हेतु १ विरोधी २ स
त्प्रति पक्ष ३ असिद्ध ४ बाधित हेतु ५ १३ छलतीन है बाक १ सामान्य २ उ
पचार ३ बक्ता के अभिप्रायतें अन्य अर्थ की जो कल्पना सो वाक छल १
जाति बिषयक जो छल सो सामान्य २ मुख्यार्थ में लक्षणतें जो छल उपचा
र १४ सामान धर्मतें अरु विरुद्ध धर्मतें जो दूषण कथन सो जाति १५ बादी
का बिरुद्धार्थ के चुप रहना सो निग्रह स्थान १६ ३ ४ ५ ६
अथ चतुर्थ योग शास्त्र याके आचार्य पातंजल मुनि यामों चित्त वृति
का रोकनो योग मों विषय है वृति पांचहैं प्रमाण १ विपर्जय २ बिक
ल्प ३ निद्रा ४ स्मृति भेदतें ॥ प्रमाण तीनहैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ आगम
३ भेदतें विपर्यय कहिये मिथ्या ज्ञान जैसे रस्सी में सर्पज्ञान २ शब्द ज्ञा
नतें पाछे होय अरु अर्थतें शून्य होय सो विकल्प ३ जैसे स्वपुष्पादि अ
भाव ज्ञान विषयक वृति निद्रा है ४ अनुभूति विषय को नभूलना स्म
तिहै ५ अभ्यासतें अरु वैराग्यतें पांचों को रोकनो समाधि है है एक स
वीज दूसर निर्वीज ईश्वर की भक्तितें समाधि सिद्ध हेतु है क्लेश १ कर्म
२ कर्म फल ३ वासना ४ ई चारोंतें रहित जो पुरुष विशेष सो ईश्वर है प्र
णव के जपतें अरु ईश्वर की भक्तितें समाधि का लाभ अरु बिघ्न का ना
श होतहै व्याधि १ सत्कर्म त्याग २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अवैरा
ग्य ६ भ्रम ७ जड़ता ८ अअस्थता ९ ए विक्षेप चित्त मों नाहीं रहत दुःख १
चित्त की चंचलता २ अंग कंप ३ प्रश्वास रेचक स्वास ४ ए विक्षेप के संगी हैं
याके दूर करने के हेतु ईश्वर में चित्त भली भांति लगावनो काहू को बु
रो न मानने विषय के निवृति होने संता अरु विचारतें अरु प्राणाया

मते चित्त एकाग्र होतुहै या उपायतें स्थिर चित्तमें परिमाणतें लेकें आकाश पर्यंत सव वस्य होतहैं याके अनंतर जव विचारतें सुद्ध चित्तहै तब स्थिर चित्तहै स्थिर चितमों सत्य युक्ति प्रज्ञा होतहै ताप्रज्ञातें सब कोदेखतुहैं इ सवीजसमाधिहै याकेरोकनेतें निर्बीज समाधि होतहै वा कालमें पुरुष मात्रै रहतुहैं व्रत १ मंत्रजप २ ईश्वर बिषै फलकासनात्यागि सर्व समर्पन ३ एतीन किया योगहैं अरु किया योगतें समाधिमें चित्त लगतुहै अरु क्लेश कमहोतहै अविद्या १ अहंकार २ राग ३ द्वेष ४ आग्रह ५ एपांच क्लेशहैं अविद्या कहिये अज्ञान १ पुरुष अरु अंतःकारण की एकता अहंकार २ सुख में तृष्णा राग ३ पूर्व अनुभूत दुःख स्मरणतें विरोध वृत्ति द्वेष ४ शरीर आदि बस्तु के स्थिरतामें तृष्णा आग्रह ५ स्थूल सूक्ष्म क्लेशन का अरु ताक्लेशनकी सुख दुःख मोह रूप वृतिनका ध्यानतें त्याग करनो अरु क्लेशजन्य अशुभ कर्मको फल याजन्ममें है वाजन्मांतरमें है बिबेकी को सवदुःखहीहै बुद्धि अरु पुरुष काजो संयोग सो संसारकोहेतुहै भोग अरु मोक्ष की उत्पादक बुद्धिहै पुरुष चेतन मात्रहै अरु बुद्धि रूपदर्पणमें प्रति बिंब संबंधस्वरूप आत्माहै एक बिबेकी पुरुष की अविद्यानष्टहोने तें औरसव पुरुषोंमें अबिद्या नष्ट नहीं होत बुद्धि अरु पुरुष का अविवेक अज्ञानतें होतहै अरु बिबेक ज्ञानतें अज्ञानको नाश होतहै एही पुरुष की मुक्तिहै अरु बिवेक ज्ञानतें पुरुषके सबीज समाधि पर्यंत सात प्रज्ञा उत्पन्न होतहैं हमसव पदार्थ जान्यो १ हमारे अविद्यादि क्लेश नाशभयो २ त्यागको उपाय जान्यो ३ हमको विवेक ज्ञानभयो ४ मेरी बुद्धि कृतार्थ भई बुद्धि वृत्ति अपने कारणमें लयह्वैगई पुनः उत्पन्न नहीं होयगी ५ हमारे स्वाधीन समाधिहै ६ अबनिर्विकार स्वरूप भयो ७ ई सातप्रज्ञाहैं संयोग करनेतें क्लेश क्षयहोत हैं अरु ज्ञानको प्रकाश होतहै यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ई आठो योगांगहैं अहिंसा १ सत्य २ अचौर्य ३ ब्रह्मचर्य ४ असंग्रह ५ ईपांच यमहैं सौच १ संतोष २ तप ३ मंत्रजप ४ ईश्वर निष्ठा ५ ई पांच नियम हैं स्थिर सुख आसनहै आसनतें सुख दुःखादि द्वंद्वको नाशहोतु है

स्वासप्रस्वास का जोग तिवि च्छेद सो प्राणा यामहै सो यातें चित मोंप्रका
श होतहै ४ इंद्रियन के विषयतें निवृत्त करके चित मों लगाव जो प्रत्या॰
हारहै ५ नासिका के अग्र भाग मों अरु नाभि चक्रादि वस्तु विशेष में चित्त
का स्थिर करना धारणाहै ६ चितका ध्येयविषयक जो वृतप्रवाह सो ध्यानहै ७
वृति आदि भेद शून्य अर्थ मात्र का भान होय जेहि मों सो समाधि है ८
धारणाध्यान समाधि एतीन एकमों होंहिं सो संजमहै अरु शब्द के सं
यमतें सब प्राणी का शब्द ज्ञान होतहै अरु संस्कार संजमतें संस्कार सा
क्षात्कार करने से पूर्व जन्म को ज्ञानहोतहै परचित विषें संजमतें परचि
त का ज्ञानहोत है अरु शरीर के रूप में संयमतें योगी अंतर्ध्यानहोत है
पुरुष में संयमतें पुरुषको ज्ञानहोतहै अरु प्रकृति १ बुद्धि २ अहंकार
३ रूप ४ रस ५ गंध ६ स्पर्श ७ शब्द ८ चक्षु ९ रसना १० कर्ण ११ नासि
का १२ त्वचा १३ वाक १४ पाणि १५ पाद १६ पायु १७ उपस्थ १८ मन
१९ प्रथ्वी २० जल २१ तेज २२ वायु २३ आकाश २४ पुरुष २५ ई पची
स तत्व हैं अरु प्रकृतितें बुद्धिकी उत्पत्ति बुद्धितें अहंकार अहंकारतें
रूपतेंलेके मनलों सोरह की उत्पत्ति हैं गंधतें पृथ्वी रसतें जल रूपते
तेज स्पर्शतें वायु शब्दतें अकाश की उत्पत्तिहै अरु अपने निरूपाधिक
स्वरूप में जो स्थिति सो मोक्ष पदार्थहै ७ ॥ अथ पंचम सांख्य शास्त्र
याके आचार्य कपिल मुनि यामें प्रकृति पुरुष को विवेक विषय है अ
रु अत्यंत दुःखत्रय की निवृत्ति प्रयोजन है पचीस तत्व के ज्ञानतें वि
वेक होतहै पुरुष १ प्रकृति २ बुद्धि ३ अहंकार ४ रूप ५ रस ६ गंध ७ स्प
र्श ८ शब्द ९ चक्षु १० जिह्वा ११ नासिका १२ त्वचा १३ कर्ण १४ वाक १५ पाणि १६
पाद १७ गुद १८ उपस्थ १९ मन २० पृथ्वी २१ जल २२ तेज २३ वायु २४ आ
काश २५ ई पचीस तत्व हैं प्रकृतितें बुद्धिकी उत्पत्ति बुद्धितें अहंकार अहंका
रतें रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ शब्द ५ ई पंच तन्मात्रा की अरु चक्षु १ जिह्वा २
नासिका ३ त्वचा ४ कर्ण ५ वाक ६ पाणी ७ पाद ८ गुद ९ उपस्थ १० मन ११ ई
ग्यारह इन्द्रियन की उत्पत्तिहै अरु पंच तन्मात्रातें तेज १ जल २ पृथ्वी ३ वायु ४
अकाश ५ ई पंच स्थूलभूतन की क्रमतें उत्पत्तिहै अरु दिशा १ काल २ आकाश

तें सात्विक अहंकारतें एकादश इंद्रिय की अरु तामस अहंकारतें पंच
तन्मात्र की ई सब इंद्रिय अहंकारतें उत्पन्न हैं भूतनसें नहीं हैं अरु शरीरपु
रुष नहीं है पुरुष को भोगहेतु शरीर है अरु जाग्रत १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ ई तीन
अवस्था बुद्धिनिष्ठ हैं पुरुष इनको साक्षी है जन्म १ मरण २ सुख ३ दुख ४ बंध
५ मोक्ष ६ ई सब पुरुष के भिन्न भिन्न व्यवस्थातें पुरुष बहुत हैं अरु पुरुष में कोई ध
र्म नहीं रहतु पुरुष प्रकाश रूप है अरु असंग है ईश्वर नहीं है जो ईश्वर मानैंगे
तौ ईश्वर बद्ध है वह भयो तौ मूढत्व में सृष्टिकर्तृत्व का असंभव होइ गो जो
मुक्त मानौंगे तौ भी रागद्वेष के अभावतें सृष्टिकर्तृत्व का असंभव है
यातें ईश्वर नहीं है अरु ईश्वर प्रतिपादक जेती श्रुति स्मृति हैं सो सब मु
क्त पुरुष के प्रसंसापर हैं अरु सत्व १ रज २ तमोगुण ३ इनकी जो साम्य अव
स्था सो प्रकृति है प्रकृति अति सूक्ष्म है अरु परिणामी है अति सूक्ष्मत्व
में प्रकृति प्रत्यक्ष नहीं है किंतु बुद्ध्यादि कार्यतें अनुमेय है बुद्ध्यादि सृष्टि पुरुष
के भोग मोक्ष के हेतु है प्रीतितें सृष्टि होत है अरु वैराग्यतें मुक्ति होत है यज्ञादि
कतें मोक्ष नाहीं है मोक्ष प्रकृति पुरुष के बिबेकतें होत है बुद्धितें ज्ञान १ बै
राग्य २ धर्म ३ ऐश्वर्य ४ ई चार उत्पन्न होत हैं अरु पशु आदिक की बुद्धि रजतम
के संबंधतें विपरीत होत है यातें पश्वादिक के बुद्धि मो अधर्म १ अज्ञान २ अवै
राग्य ३ अनैश्वर्य ४ ई चारों धर्म रहतु हैं अरु सूक्ष्म में महाभूत उत्पन्न होत
हैं महाभूततें शरीर अरु काहू के मतमों पंच भूत को शरीर है काहू के आका
श रहित चार भूत को काहू के पृथ्वी १ जल २ तेज ३ तीन भूत को काहू के पृथ्वी
१ जल २ ई भूत को काहू के केवल पृथ्वी को शरीर है अरु पंच भूत का स्वाभाविक चै
तन्य धर्म नहीं है अरु प्रत्येक में भी चैतन्य धर्म नहीं यातें सूक्ष्म शरीरतें दुख
सुख जानि परत है जब लों विवेक ज्ञान नहीं होत तब लों सूक्ष्म भूत में आरं
भकत्व रहत है असत की उत्पत्ति नहीं होत सतकी उत्पत्ति होत है अरु कार
ण में जो लय सो नाश कहावत है सृष्टिकालमों धर्म अधर्म दोऊतें पुरुष ब
द्ध होत हैं प्रलय में धर्म अधर्म दोऊतें पुरुष बद्ध होत है प्रलय में धर्म अधर्मः
दोऊ सूते रहत हैं अरु सृष्टिकाल में पुनः फलोन्मुख होइ कै अधर्म धर्म दो
ऊ शरीर का आरंभ करत हैं अरु मुक्तकाल में धर्म अधर्म का नाश ह्वै जात है

सच्चिदानन्दई आत्माका रूपहै आत्माहैई सब जानतहैं और चिंदश में भी काहू को संदेह नही होत आनंदांश में सबको संदेहहै सांख्य के अभ्यास से क्रमतें झटिति आनंदलाभ होय जातहै कोई ऐसा मानत हैं सांख्यशास्त्र में आदि में अथ शब्दका प्रयोगहै यातें सांख्यमत में ईश्वर नित्य सिद्ध है ५ ॥ अथ षष्ठम वेदांत शास्त्र ॥ याके आचार्य वेदव्यास मुनि या में जीव ब्रह्मैक्य शुद्ध चैतन्य विषे हैं अज्ञान निवृत्ति आनंदप्राप्ति प्रयोजन है अरु साधन चार वैराग्य १ विवेक २ शमादि षट ३ मुमुक्षुता ४ ब्रह्मा इंद्रादि लोक के सुख को काकविष्टादि वत जानना वैराग्य १ ब्रह्म नित्य और सब अनित्य यह विवेक २ अरु शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ सदा वासना का त्याग सो शम बाह्य इन्द्रियन का विषयतें निरोध दम २ विषयतें पीठ उपरति ३ शीत उष्ण सहन तितिक्षा ४ गुरु वेदांत वाक्य में विश्वास श्रद्धा ५ चित्त एकाग्रता समाधान ६ संसार बंधनतें कब मैं छुटिहों यह दृढ निश्चय मुमुक्षुता ४ ए सब साधनयुक्त शान्त चित जितेंद्रिय श्रद्धावान याको अधिकारी है वस्तु में अवस्तु को आरोप सो अध्यारोप है जैसें रज्जु में सर्प को आरोपहै वैसेही ब्रह्म में जगत को सच्चिदानंद ब्रह्म वस्तु है अज्ञानादि सकल जड़ समूह अवस्तु है सत असत करके अकथनीय त्रिगुणात्मक ज्ञान का विरोधी भावरूप होय सो अज्ञान कहिये सो अज्ञान व्यष्टि अभिप्रायतें अनेक है अरु समष्टितें एक है व्यष्टि कहिये अनेक प्रकार समष्टि कहिये समूह जैसे बन में व्यष्टि अभिप्रायतें अनेक वृक्ष ई व्यवहार होतहै अरु अनेक वृक्षन में समष्टि अभिप्रायतें बन तैसें अनेकत्व करिकै भासमान जो जीवन को अज्ञान ताके नानात्व करिकै अनेकत्व व्यहार होतहै अरु जीवन को जो अनेक अज्ञान वामें समष्टि अभिप्रायतें एकत्व व्यवहार होतहै समष्टि उत्कृष्ट उपाधि करके शुद्ध सत्व प्रधान जो चैतन्य है सो सर्वज्ञ सब को नियामक अंतर्यामी जगत का कारन ईश्वर है याको आनंदमय कोश सुषोपति है और कोश पांच हैं ५ अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ विज्ञानमय ४ आनंदमय ५ व्यष्टि निकृष्ट उपाधि करके मलिन सत्व प्रधान जो चैतन्य है सो

अल्पज्ञ अनीश्वर प्राज्ञहै थाकेहूं आनंद मयकोश सखोप्तिहै अरु सुषोप्ति
काल मो चैतन्य करिकेप्रकाशित जो अति सूक्ष्म अज्ञानवृति ताकरिके
ईश्वर अरु प्राज्ञ एदोऊ आनंदका अनुभव करतहैं जैसे बनका वृक्षका
अभेद तैसे समष्टिव्यष्टि को अभेदहै अरु जैसे बन के आकाशको अरु
वृक्ष के आकाशको अभेदहै तैसे समष्टिउपाधि विशिष्ट ईश्वरको अरु
व्यष्टिउपाधि वसिष्ट प्राज्ञ को अभेदहै अज्ञान अरु अज्ञानोपाधि वि
शिष्ट चैतन्य एदोऊ का आधार जो उपाधि रहित चैतन्यसो तुरीयहै
अज्ञानकी द्वैशक्तिहैं एक आवरण दूसरी विक्षेप जैसे अल्पमेघ सूर्यमंड
लको आवरण करतहैं तैसेई अज्ञान आत्माको आवरण शक्ति विशिष्ट
जो आत्माहै वाको कर्त्तत्वभो क्तृत्वसुख दुःखादि संसारका संभवहै जैसे
अपने अज्ञानतें ढंपी जो रस्सीहै वामें सर्प को संभवहै १ अरु जैसे रस्सी को
अज्ञान अज्ञान सों ढंपी जो रस्सी है वा में विक्षेप शक्तितें सर्पका उत्पादि
कहै जैसे ई अज्ञानतें ढंपे आत्मा मों विक्षेप शक्तितें आकाशादिप्रपंच
को उत्पादकहै २ अरु तमःप्रधान जो विक्षेप शक्ति विशिष्ट अज्ञानतदि
शिष्ट जो चैतन्य तातें आकाश उत्पन्न होतहै आकाशतें वायुवायुतें अग्नि
अग्नितें जलजलतें पृथ्वी इन्हहीं आकाशादि सूक्ष्म भूतनतें पंचमहा
भूत औरसूक्ष्म शरीरकी उत्पत्तिहै सूक्ष्म शरीर जोहै सोई लिंगशरीर यामें
सत्रह १७ अवयव रहतहैं पांचज्ञानें द्रिय ५ पांच कर्में द्रिय ५ पांचप्राणा
दि बुद्धि १६ मन १७ निश्चयात्मक अंतःकरणकी जो वृत्ति सोबुद्धिहै संक
ल्पात्मक जो अंतःकरणकी वृत्ति सोमनहै चित्तको बुद्धिमें अंतर्भावहै
अहंकारको मनमें अंतर्भावहै १ बुद्धि अरु मन आकाशादिकोंके मिल
त सात्विक अंशतें उत्पन्नहैं ई जो बुद्धिहै सो ज्ञानेंद्रियके संयुत विज्ञान
मयकोश होतहै २ अरु विज्ञानमयकोश जोहै सो कर्त्तत्व भोक्तृत्वका अ
भिमानीहै यह लोक परलोक गामीहै सो व्यवहारमें जीव कहावतहै अरु
मन ज्ञानेन्द्रियके सहित मनोमय कोश होतहै ३ अरु प्राण वायु पांचहैं
प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ हृदयको वायु प्राण गुदा
को अपान सबशरीरको व्यान कंठको उदान नाभिको समान पांचों

प्राण कर्मेंद्रिय सहित प्राण मय कोश होतहै ४ आनंद मय कोशमें ज्ञान
अरु कर्तृत्व है मनोमय कोशमें इच्छा अरु कार्णत्व है प्राण मय कोशमें
क्रिया अरु कर्मत्व है ई तीनो को सूक्ष्म रूप कहावतहैं सूक्ष्म रूप समूह में ए
क बुद्धि विषयत्व करिकै वनसमूह ज्यु समष्टि है अरु सब सूक्ष्म शरीरमें अने
क बुद्धि विषयत्व करिकै व्यष्टि है अरु समष्टि उपाधि वसिष्ट जो चैतन्य है
सो सूत्रात्मा अरु हिरण्यगर्भ कहावतु है तहां ज्ञान १ इच्छा २ क्रिया ३ ई
तीनो शक्ति हैं विज्ञान मयादि कोश तीन जो हैं सो जाग्रत अवस्था के वास
नातें स्वप्न है स्वप्न कालमें सूत्रात्मा जो है सो मन के वृत्तितें सूक्ष्म विषय को
अनुभव करतहै आकाशमें शब्द वायुमें शब्द स्पर्श तेजमें शब्द स्पर्श रूप
जलमें शब्द स्पर्श रूप रस पृथ्वीमें शब्द स्पर्श रूप रस गंध हैं अरु पंच भूत
तें भूलोक १ भव २ स्वर ३ महर ४ जन ५ तप ६ सत्य ई सात लोक ऊपर के
उत्पन्न होतहैं अरु अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसा
तल ६ पाताल ७ ई सात लोक नीचे के उत्पन्न होतहैं एतत्त्व मूहो पाधि वि
सिष्ट चैतन्य विराट है अरु स्थूल शरीर जो है सो अन्न को विकार है यांतें अ
न्नमें कोश है सो स्थूल भोगतें जागतहै स्थूल देहकी जो अनेक उपाधि
तद्विसिष्ट जो चैतन्य सो विश्व है अरु अज्ञान विसिष्ट जो चैतन्य सो जीव है
ज्ञान विसिष्ट चैतन्य ईश्वर है भाग त्याग लक्षणातें अज्ञान का त्याग करो अरु
ईश्वर लक्षणमें ते ज्ञान को त्याग करो तो दोऊ चैतन्य एक है ब्रह्म सत्य है
और सर्व मिथ्या है ऐसी दृष्टि समुकतें जीव है सो ब्रह्म है इति शस्त्र ॥ अथ
वेद ॥ सो वेद अनादि सर्व पुराण शास्त्र संहितादि औ यावन्नू व्यवहार प
रिमाण को मूल है अरु सब आस्तिक सम्मत अपौरुषेय अगाध आशय
अनंत है तेहि हेतु कह संक्षेपसे लिखा वेदके भेद चार ऋग्वेद १ यजुर्वेद २
सामवेद ३ अथर्वनवेद ४ ऋग्वेदकी मुख्य शाखा आठ सो साकल १ वाष्कल २
ऐतरेन ३ ब्राह्मणारण्य ४ सांख्यायन ५ मांडूक ६ कौषीतकीय ७ आरण्यक ८
औ आठ स्थान हैं चर्चा १ श्रावक २ चचर्क ३ श्रवणीय पार ४ क्रमपार ५ क्रम
पद ६ क्रम जटा ७ क्रम दंड ८ आठ स्थान का क्रमसे अर्थ चर्चा कहिये अध्य
यन १ अध्ययन सुनावै सो गुरु श्रावक २ चचर्क कहिये शिष्य ३ वेद की सम्मा

त्रि सो आश्वलायनीयपाठ४ क्रम पाठसंज्ञा कहिये संहिता ५ संहिता का पद केद
जो पद नाम से ख्यात सो क्रमपद ६ संहिता की जटासो क्रम जटा ७ संहि
ता का दंड सो क्रम दंड ८ क्रम पाठादि चार स्थान के चारपारायणहैं १०५८०
ऋचा का एक पारायण होतहै संहिता का १ औ पद का २ ई दोई प्रकृतिपा
रायण जटा का १ औ दंड का २ ई दुई विकृति पारायण विकृति नवहैं ९ क्रम १
जटा २ माला ३ शिखा ४ लेखा ५ ध्वज ६ दंड ७ रथ ८ घन ९ इनके लक्षण
संहिता के पदन को अनुलोम विलोम पटना सो क्रम १ दुइ पद को वा तीन
पद को आदि औ अंत में अनुलोम अरु मध्य में संधि सहित विलोम =
पठना सो जटा २ जटा कहिये उसके आगे के पद को एक बार उच्चारन कर
तीन पद ससंधि कविलोम पढके पुनः अंत में तीनों पद अनुलोम पठना
सो घन ३ इत्यादि ॥ ऋग्वेद के अध्याय ६४ मंडल १० मंडल कहिये खंड
वर्ग २००६ सूक्त १०१७ पद १५३७९२ इति ऋग्वेद ११९ अथ यजुर्वेद॥
यजुर्वेद की शाखा ८६ वेचरक १ आह्वारक २ कट ३ प्राच्यकट ४ कपिश्ठ
लकट ५ आसपणीय ६ बासपणीय ७ वार्तांतेय ८ श्वेत ९ श्वेततर १०।
औपमन्यव ११ मैत्रापणीय १२ कासब १३ माध्यंदनीय १४ इत्यादि मैं
त्रापणीय शाखा के भेद ७ मानव १ दुंदुभेय २ चैकेय ३ वाराह ४ हारिद्रवेय
५ श्याम ६ श्यामायनीय ७॥ बाजसनेय शाखा के भेद १७ काण्व १ माध्यं
दनीय २ शापीय ३ स्थापायनीय ४ कापिल ५ पौंड्र ६ कात्यायनीय ७ इत्या
दि॥ वाजसनेय शाखा के मंत्र ॥ १९०० याही को शुक्ल यजु औ कृष्णयजू
कहत हैं मंत्र से चौगुन ब्राह्मण भाग है॥ तैत्तरेय शाखा के भेद २॥ औख्य १
कांडिकेय २ कांडिकेय के भेद ५॥ आपस्तंबी १ बौधायनी २ सत्याषाढी ३
हिरण्यकेशी ४ औधेयी ५ तैत्तरेय शाखा के कांड ७ प्रश्न ४४ अनुवाक
६५१ पंचाशी २१९८ पद १९२९० अक्षर २५३८६८ ब्राह्मण विषै वा
क्य की संख्या १९४८० अध्याय ४४ यह तैत्तरेय संख्या है एही रीति से =
और सब का भेद भाष्य से जाने॥ इति यजुर्वेदः २॥ अथ सामवेद॥ साम
वेद की शाखा १००० देश काल कलहादि निमित्त से बहुत शाखा लोप
सी है गई जो बचीं सो कहत हैं आसरायणीय १ चासुरायणीय २ वार्तां

तरीय ३ प्रांजल ४ ऋग्वैन विधि ५ प्राचीनयोग्य ६ एणापणीय ७ इत्यादि एणापरनीय शाखाकेनव भेद एणायनीयपशाआयनी २ शांत्यमुद्गल ३ खल्वल ४ महाखल्वल ५ लांगल ६ कैथुम ७ गौतम ८ जैमिनीय ९ इन्ह सोरह शाखा मों तीन शाखा विख्यात हैं सो प्रसिद्द नहीं हैं गुजरात देशमें कैथुमी शाखा प्रसिद्ध है १ कर्नाटक देशमें जैमिनीशा० प्र० २ महाराष्ट्र देशमें एणायनीयशा·प्र·३ कैथुमी शाखाके भेद ६। कौथुम १ आसुरायण २ वातायम ३ प्रांजलि ४ प्राचीनयोग्य ५ नैगमनीय ६ इति ॥ आग्नेयमंत्र १०८ पावमानमंत्र १०४ ऐंद्रमंत्र ६ आष्ट सुपर्णप्रेक्ष्य शाखा सहित वालखिल्यशाखा भेद ५० आरण्यक उपनिषद सहित आसुपर्णप्रेक्ष्य अरु वालखिल्यसहित सूर्य सूक्त के भेद ९०० ई सब साम समूहके हैं साम के आचार्य्य १३ इति सामवेद ॥ ३ ॥ अथ अथर्वनवेद ॥ अथर्वनकी शाखा नवहैं पैप्पल १ दांत २ प्रदांत ३ स्तौत ४ औत ५ ब्रह्मदा ६ शौनकी ७ देवदर्शी ८ चरणविद्य ९ सब शाखाके मंत्र १२००० कल्प पांचहैं नक्षत्रकल्प १ विधानकल्प २ संहिता विधिकल्प ३ अभिचारकल्प ४ शांतिकल्प ५ इति अथर्वन। ४। कर्म १ उपासना २ ज्ञान ३ तीनकोंवेद प्रतिपादन करतहैं एही सेंवेद त्रिकांड। विधि औ निषेध मारगतें मुख्य फल मोक्ष अरु अवांतर फल स्वर्गादि सुख कहतहैं। वेदध्यान पांचवी ताका अक्ष शरीर कमलनेत्र ऋग्वेद १ चारहाथका दीरघ ताम्रंग शरीर द्वर कनकनेत्र कपाली यजुर्वेद २ मालादंड धारी शांत दांत पवित्र बसन रविसमलोचन पांचहाथ शरीर सामवेद ३ तीक्ष्ण सुभाव कामी क्रोधी जगतप्रिय सातहाथका तनु अथर्वन ४ ऋग्वेदका अत्रिगोत्र ब्रह्मा देवता गायत्री छंदः १ यजु भारद्वाजगोत्र महादेव देवता त्रिष्टुपछंदः २ सामका काश्यप गोत्र विष्णुर्देवता जगतीछंदः ३ अथर्वनका वैतायन गोत्र इंद्र देवता अनुष्टुप छंदः चारोंवेदके अंग ६ ॥ शिक्षा १ ग्रह्यसूत्र २ व्याकरण ३ निरुक्ति ४ छंदशास्त्र ५ ज्योतिष ६ चारवेदके चार उपवेद। ऋग्वेदका आयुर्वेद उपवेद सो चिकित्सा शास्त्र १ यजुर्वेदका धनुर्वेद उ·सो युद्ध शास्त्र २ सामवेदका गांधर्व उपवेद-

सो सांगीत शास्त्र ३ अथर्वनका अर्थ शास्त्र ७ सो सिल्प शास्त्र सहित नीति शास्त्र ४ इति निगम संक्षेपः॥ ५ ॥ अथ तंत्र शास्त्र। याके कर्ता महादेव अनेक छंद देवता सहित मंत्र यंत्रादि शब्दार्थ सृष्टि यामें प्रतिपाद्य विषय है धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोक्ष ४ प्रयोजन हैं फल कामना युत याको अधिकारी है शिवके निर्गुण औ सगुण स्वरूप ज्ञानतें मोक्ष होतु हैं प्रकृति सें परे सो निर्गुण १ प्रकृति युत सगुण २ सृष्टि हुई हैं अकार उकार मकार नाद विंदु ई शब्द सृष्टि १ रुद्रादि अनेक देवता और चराचर जगत ई अर्थ सृष्टि २ याको क्रम परब्रह्मतें शक्ति भई शक्तितें नाद २ नादतें विंदु ३ शिव शक्तितें सूक्ष्म शब्द होत है एही को शब्द ब्रह्म कहत हैं परा शक्ति ही शरीर मों कुंडलनी नाड़ी रूप सों शब्द ब्रह्म रूप होयके परा १ पश्यंती २ मध्यमा ३ वैखरी ४ चार विधि बाणी होत है अकारादि शकारांत पचास वर्ण कुंडलनी रूप परा शक्तितें ही होत हैं शिव शक्तिते महतत्त्व १ महतत्त्वतें अहंकार अहंकार तीनि विधि सात्विक आदि भेदतें सात्विक अहंकारतें दशइंद्रियनके दश देवता वे दिशा १ पवन २ सूर्य ३ वरुन ४ आदि राजस अहंकारतें दशइंद्रिय १० तामस अहंकारतें तन्मात्रा द्वारा पंच महाभूत शब्दतें आकाश १ स्पर्शतें वायु २ रूपतें तेज ३ रसतें जल ४ गंधतें पृथ्वी ५ आकाश स्वच्छ रूप १ वायु श्याम २ तेज लाल ३ जल शुक्ल ४ पृथ्वी पीत ५ पांच भूतनके पांच मंडल हैं षट विंदु युत गोल मंडल आकाशको १ वायुका त्रिकोण स्वस्तिके चिन्ह युत २ अग्निका अर्द्ध चंद्राकार ३ जलका कमलके आकार ४ पृथ्वीका वज्र चिन्ह युत चौरस ५ पंच भूतनकी पंच कलानि इति १ प्रतिष्ठा २ विद्या ३ शांति ४ शांत्यतीता ५ चराचर जगत पांच भूत रूप है अचर पर्वत वृक्षादि भेदतें अनेक विधि १ चर तीन भेद को कृमि कीटादि स्वेदज १ सर्प पक्षी आदि अंडज २ मनुष्यादि जरायुज ३ मातृकाके अक्षरनतें सब मंत्रनकी उत्पत्ति मंत्र त्रिविधि पुरुष १ स्त्री २ नपुंसक ३ पुनः मंत्रके चार भेद ४ सिद्ध १ साध्य २ सुसिद्ध ३ अरि ४ मंत्रनके दोष ५ ७ छिन्न १ रुद्ध २ शक्तिहीन ३ पराङ्मुख ४ बधिर ५ नेत्रहीन आदि दोष युत मंत्रतें फल नाहीं होत॥

मंत्रनके संस्कार १० जनन १ जीवन २ ताड़न ३ बोधन ४ अभिषेक ५ विमलीकरण ६ आप्यायन ७ तर्पन ८ दीपन ९ गुप्ति १० मातृकाते मंत्र का उद्धार सो जनन १ प्रणव युत जपसो जीवन २ मंत्राक्षर लिखि चंदन जल से मति अक्षर छिरकनो सो ताड़न ३ इत्यादि ई इस संस्कारसे अवश्य मंत्र सिद्ध होतु है कूर्म चक्र ते सिद्ध आ साध्यादि भेद विचार करनो मंत्र जप के स्थान तीर्थ नदी तीर पवित्र वन देवता मंदिर आदि। गुरु लक्षन कुलीन सर्वागम शास्त्र को तत्त्व जाने जितेंद्रिय सत्यवादी आदि। शिष्य लक्षन कुलीन शुद्ध मन पुरुषार्थ युत वेद पठित जितेंद्रिय आदि। तंत्र शास्त्र मों = दीक्षा को ग्रहण मुख्य इष्ट देवता का गुरु से मंत्रोपदेश सो दीक्षा। पापनाश करि दिव्य ज्ञान देत हैं याते दीक्षा नाम भयो यांके भेद ४ चार क्रियामयी १ वर्णमयी २ कलामई ३ वेधमई ४ चारों के कर्ता गुरु नित्य कर्म कुंड मंडपादि करनो क्रियामई १ शिष्य देह मों वर्णादि न्यास २ निवृत्यादि पांच कला कों तेहि ३ अंगन मों योजन कदी ३ शिष्य शरीर मों चेतन शक्ति का व्यापक ध्यान सो वेध मयी दी ४ अध्वा छहैं कलाध्वा १ तत्वाध्वा २ भुवनाध्वा ३ वर्णाध्वा ४ पदाध्वा ५ मंत्राध्व ६ अध्वा कहिये रास्ता गुरु कोई षट अध्वा का साधन उचित है देवता पूजाका सात वा पांच आवरण हैं यही सब रास्ता सें जीव को मोक्ष होत है॥ इति तंत्र शास्त्र संक्षेप:॥ ॥इति मानसदीपिकायां पुराणादि शास्त्र निगमागम वर्णनं द्वितीय: प्रकार: २ अथ काव्य अंग॥ या रामायण मों श्रीगोसाईंजी जावत काव्य के अंग धरे हैं अरु बिना काव्य जाने बहुत जन बहुत ठौरों का करतु हैं ताते लक्षण और और काव्य के साधनके अरु उदाहरण या रामायण के सरल रीति से लिखे जाते हैं॥ अथ काव्य लक्षण॥ शब्द अर्थ सुंदर गुण युत दोष रहित अथ काव्य प्रयोजन जस संपति आनंद दारिद्र नाश चातुरता संसार अरु राम बस होवो अथ काव्य को कारण चित्तता के कारण तीन शक्ति १ वित पत्ति २ अभ्यास ३ शक्ति देव कृपा यथा जेहि पर कृपा करहिं जन जानी कवि उर अजर नचावहिं बानी १ विस्पत्ति पठन यथा गुरु गृह गए पढ़न रघुराई २ अभ्यास करें सिद्ध होय ३ यथा जलदाना जप तलम जाना। सो काव्य ३ भांति उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ अथ उत्तम जीन व्यं

6521.

ता प्रधान ॥ यथा नीक दीनहरि सुंदरताई १ टी॰ नीक को बुरो समक नो लक्षणा
तातें नारद को अनुचित व्यंग अथ मध्यम व्यंग वच्य बरावर यथा कहं कुंभज
कहं सिंधु अपार २ टी॰ इनको तेज देखाय रामको तेज सूचित कर संदेह =
इ रहो वो व्यंग अथ अधम जामें व्यंग नहीं सो द्वै भांति एक शब्द चित्र यथा
मारु मारु धरु धरु धरु मारु १ दूसरो अर्थ चित्र यथा नील सरोरुह नील म
नि नील नीरधर श्याम टी॰ उपमातें चमत्कार अर्थ है। अथ शब्द अर्थ =
निर्नय सुनाय सो शब्द बुझाय सो अर्थ सो शब्द द्वै भांति धुन्यात्मक बाजा
तें १ वर्णात्मक सुखतें २ सो तीन भांति वाचक १ लछक २ व्यंजक ३ अरु
अपर शब्द चारि भांति प्रभु सम्मित वेदादि १ मित्र सम्मित स्मृत्यादि २ कां
ता सम्मित पुरानादि सर्वो पकारक आगम ४ अथ वाचक जो सुनत
हीं जानै यथा जलतें पानी को बोध सो चारि भांति जाति १ देवादि इच्छा
२ भैया आदि गुन ३ श्यामादि क्रिया ४ स्वरादि आदि अथ लछक सु
धे शब्द में टेढो भाव यथा धिक धर्म ध्वज धंधक धोरी टी॰ है ऊंचो
पै नीचो बोधक है। अथ व्यंजक अधिक अर्थ बोधतें यथा सोरमनो =
रथ जानहु नीके बसहु सदा उरपुर सबही के टी॰ उरपुरतें सबके हृदय
में हमारी ऐसी मति देहु। अथ अभिधा लक्षणा बहुत अर्थके शब्द में
योगादिकतें एक अर्थ प्रतीति होय यथा काकपक्ष शिरतें जुलुफ मा
थको अरु भालतिलक सें ललाटको अथ लछना लछन सुख्यार्थ त्या
गि और अर्थ करे सो द्वै प्रकार एकान रूढी ध्वनि रहित यथा राम रावन
मंड पतव कीन्हा टी॰ मंड परूढि अथ योग रूढि यथा पंकज कोक लोक
सुख दाता टी॰ पंकज योग रूढि है अथ जौगिक यथा जापक जन प्रल्हा
द जिमि पालहि दल सुरसाल जापक जौगिक लक्षना निरूढि रूढि में
होत है अथ पूजे प्रयोजन वती यामें धुनि होय यथा व्याकुल नगर देखि
तब आये उबाल कुमार टी॰ नगरतें नगरवासी सो प्रयोजन वती छः
प्रकार की प्रथम उपादान परगुन लीन्हे यथा तब चले बान कराल =
टी॰ चला बलहार को गुन लीन्हो। अथ लछित २ जिन लक्षन और
देई यथा बीच बास करि जमुनहिं आए टी॰ जमुनातें यमुनातट =

अथ सारोपा और यापिये औरको यथा चिंता सापिनिको नहिं खाया टी·चिंताको सापिनि में आरोप अथ साध्य बसाना ४ उपमान तें उप मेयको बोध यथा मुकुर मलिन अरु नयन विहीना टी·मुकुर मन न यन ज्ञान वैराग्य अथ गौनी सारोपा ५ गुन सरिस आरोपतें यथा राम चंद्र मुख चंद छबि लोचन चारु चकोर टी·मुखचंद्र के आरोपतें सारोपा अरु चंद्रमाके प्रकाशत्व गुनतें गौनी अथ गौनी साध्य बसाना ६ केवल उपमान यथा अरुन पराग जलज भरि नीके टी·अरुन पराग सिंदूर जलज हाथ अथ व्यंजना जो शब्द अर्थतें अधिक अर्थ व्यंगमें सो द्वै भांति की शाब्दी १ आर्थी सो शाब्दी २ अभिधामूल ३ लक्षनामूल २ अथ अभिधामूल व्यंग वहुत अर्थके शब्द मो एककी प्रतीति संयो ग २ प्रसंग ३ विरोध ४ देश ५ समय इत्यादितें अरु लछनाको फल ल छनामूल व्यंगमों अथ संयोगतें यथा जनक पाट महिषी जग जानी टी· महिषी अनेकार्थ जनक संयोगतें रानी १ वियोगतें यथा कहेउ राम वियोगतब सीता टी·सीता अनेकार्थ राम वियोगतें जानकी २ प्रसंगतें यथा हरि हित सहित राम जब जोहे टी·हरि अनेकार्थ प्रसंगतें बाजी ३ विरोधतें यथा मत्त नाग तम कुंभ विदारी शशि केशरी गगन वनचारी टी·सिंह विरोधतें हाथी ४ देशतें यथा जीवन मुक्ति हेतु जनु काशी टी·मुक्ति अनेकार्थ काशी देशतें मोक्ष ५ समयतें यथा चकई सांझ समय जनु सोही टी· चकई अनेक सांझ समैते चकवा की ६ साहचर्यतें य था एहि विधि आइ विलोकी वेनी सुमिरत सकल सुमंगल देनी टी·वेनी अनेकार्थ सुमिरत मंगल देनी साहचर्यतें तीरथ वेनी ७ उचिततें यथा थनपय स्रवहिं नयन जल छाये टी· पय अनेकार्थ थन उचिततें दूध ८ सामर्थतें यथा तन महं प्रविसि निसरि सर जाहीं टी· अनेकार्थ प्रविस निसरि सामर्थतें वान ९ चिन्हतें यथा काम कुसुम धनु सायक लीन्हे टी·काम अनेकार्थ कुसुम धनु चिन्हतें मन्मथ १० अथ लछनामूल द्वै भांति एक छिप्यो गूढ़ व्यंग यथा तुम रहिं भाग राम वन जाहीं टी·तुम्हरे पदतें गौर द्विभुजताको मख्यार्थ वाध शेषमों लछना भार उतारवो व्यंग

गूढदूसरो प्रगट व्यंग यथा रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ टी॰ रघुबंशिन की बड़ाई प्रगट है व्यंग रहै याते अगूढ अथ तीनों शब्दते व्यंगवाचकतें यथा बरम्नु हार बरात न आई टी॰ बरकी कुरूपता बरातिन की सुंदरता व्यंग १ लच्छकते यथा कह अंगद सुलज्ज मनमाहीं टी॰ सलज्जतें निलज्जता व्यंग २ व्यंजकते यथा सेवत तोहि सुलभ फल चारी टी॰ देवीकी स्तुति में क्रपा कराइवो अंग आपनो कारज साधनो दूजो व्यंग इति शाब्दी अथ अर्थव्यंजक व्यंजकते जो अर्थ अधिक होइ ताको भेद बक्ता बोध्यादि बक्ता यथा कत सिखदेइ हमहिं कोउ माई टी॰ बक्ता मंथरा वचनतें राम राज नाश करिबो क्रिया छपावति है बोध्यते यथा पुनि आउब यहि बेरि आकाली टी॰ आउब जानकी पयबोधव्य २ व्यंग है काकु यथा बालमराल कि मंदिर लेही टी॰ काकु प्रगट है अरु वाक्य बसिष्ट प्रस्ताव बसिष्ट अन्य सन्निधि देश समय चेष्टा इत्यादि बहुत हैं इति व्यंग अथ ध्वनि मूल लच्छना सहू व्यंग प्रधान होय सो ध्वनि है है भांति अबिव च्छत १ विवच्छित २ अथ आवबच्छत कहूं बैयान चहै आपुहि तें ध्वनि होय यथा कहहिं सुसेवक बारहिं बारा अरु सब सेवक गनगरहिं गलानी टी॰ गलानि अविवच्छित बाक्य है। अविवच्छत में भेद है एक अर्थांतर संक्रमत वाच्य ध्वनि जो अर्थ औरसे मिलके है यथा जनु जुग जामिक प्रजाप्रान के टी॰ एक प्रजाप्राण भरत हू जो रकार मकार हू जो अत्यंततिरस्कृत वाच्य ध्वनि व्यंग की अधिकाई कहिबेको वाचक अपनो अर्थ छोड़ो यथा कुंदकली दाडिम दामिनि। इन्हों से अरु हर्ष सकल पाइ जनु राजू टी॰ हरष कैवो असंभव वाचकने अपनो अर्थ छोड़ो अरु तिहारे बैरिन को हर्ष हमतें नाहीं सह्यो जातु यह ध्वनि इति लच्छनामूल ध्वनि अथ अभिधायमूल ध्वनि विवच्छित जामें इच्छित अर्थ ध्वनित होय यथा बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू विवच्छत में भेद है असंलच्छ क्रम १ संलच्छ क्रम २ असंलच्छ ध्वनि में रसभावादिक अनेक प्रकार अरु संलच्छ में भेद तीन शब्द शक्ति १ अर्थ शक्ति २ शब्दार्थ शक्ति ३ यथा इहां कुम्हडब तिया कोउ नाहीं जो तरजनि देखत मरि जाहीं टी॰ इहां व्यंग सब विना सहाय जानो जातु है अरु क्रम नाहीं यातें असंलच्छक्रम अरु अलंकार जहां और परम धाम होय अरु रसमुख्य

होइ तो रसवत अलंकार और जहां भाव अंग होइ मुख्य और होय तहीं भा षित अलंकार अरु जहां भाव अंग होय मुख्य और होय तहां ऊर्जस अलं कार अरु जहां भाव सांतिकादिक अंग होय मुख्य और होय तहां समाहित अलंकार रस न कहिये जाने रस ध्वनि है एगुनीभूत व्यंग है सो मध्यम के प्रसंग में उदाहरन कहेंगे अब रस को स्वरूप कहत हैं रस को मूल भा व है तातें प्रथम हि भाव को लछन कहियतु है भाव सब तें बड़ो है बासना रूप जानिये सो चार प्रकार विभाव १ अनुभाव २ संचारी ३ अस्थाई ४ अरु भाव भेद सो सात्विक भाव जो है सो अनुभाव ही मों गानिए अथ विभाव लछन जातें अस्थाई भाव होइ सो विभाव १ अथ अनुभाव लक्षण थिरभाव को प्रगटै जो सो अनुभाव अरु संचारी ले सब रस में संचरै सो विभाव द्वै भां ति आलंबन १ जो थिरभाव को स्थान यथा सीतहिं पहिराए प्रभु सादर। दूसरो उद्दीपन सुधि आएँ तें सो द्वै भांति दैवीय यथा नव पल्लव फल सुमन सुहाए मानुषी २ यथा पट उरलाइ सोच अति कीन्हा यथा बोलवो देख वो टेढ़ो अरु सात्विक भाव जेते है अरु अलिंगन चुंबन इत्यादि यथा भापे लषन कुटिल भै भौंहें रदपट फरकत नयन रिसौंहें अरु सात्विक प्रकार ८ आठ अस्तंभ १ यथा रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी स्वेद २ यथा श्रम बिंदु सुख राजीव लोचन अरुन तन सो नितकनी रोमांच ३ य था श्यामल गात रोम भये ठाढ़े स्वरभंग ४ यथा पुलकित तनु सुख आव न बचना कंप ५ यथा थरथर कांपहिं पुरनर नारी विवरन ६ श्रीहत भये भूप धनु टूटे ६ अश्रु ७ तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जल नैन प्र लै ८ व्याकुल राउ सिथिल सब गाता के चित्त मत ज्रंभा यथा लरिका अ मित उनींद बस सयन करा बहु जाइ अथ संचारी भाव ३३ निर्वेद १ यथा सब परिहरि रघुवीरहिं भजौ भजहिं जहिं संत ग्लानि २ भई ग्लानि मेरे सुत नाहीं संका ३ सिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू असूया ४ जिन्हहिं से हाइन अवध बधावा ५ जग जो धाकौ सोहि समाना श्रम ६ द्वंद जुद्ध दस बहु स कल श्रमित भये अतिवीर आलस ७ रघुबर जाइ सयन तब कीन्हा दीन ता ८ आपनि दारुन दीनता कहेउ सबहि सिरु नाइ चिंता ९ चिंता कव

नेहु बात कर तात करिय जननिमोर मोह पुन्न अति बिकल मोह मति नाटी
स्मृति २२ सुधि न तात सीता केपाई धृति १२ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा लाज १३
गुरुजन लाज समाज बडि देख सीय सकुचानि अवेग १४ कादस्वायच
हकाय देखावा चपलता १५ मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई जड़ता १६ सुनिमग
मांझ अचल होइ बैसा हर्ष १७ जानि गौरि अनुकूल सियहि यहर्ष नजाइ
कहि गर्भ १८ भुज बल भूमि भूपबिनु कीन्ही विषाद १९ रामराम रट विक
ल भुआलू निद्रा २० लेइ सीय राम साय री सोए। अमर्ष २१ कंदुक इव ब्रह्मांड
उठावौ औत्सुक्य २२ बेग चलिय प्रभु आनिये भुज बल खल दल जीति अ
पस्मार २३ गद मूर्छा रामहिं सुमिर न्प फिरि करवट लीन्ह स्वप्न २४ दिन
प्रति देखहुं रात कुसुपने बोध २५ विगति निसा रघुनायक जागे उग्रता २६
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं नर बानर केहि लेखे माहीं प्रानमगनताम
रन २७ राम बिरह सागर महं भरत मगन मन होत ज्ञान २८ उपजा ज्ञान
बचन तब बोला व्याधि २९ देखी व्याधि असाधि न्प अवहित्था लाज
तें हर्ष शोक छिपे ३० तन सकोच मन परम उछाहू गूढ़ प्रेम लखि परइ न
काहू उन्माद ३१ लछमन समुकाये बहु भांती पूछत चले लता तरु पां
ती त्रास ३२ भानि रास उप जी मन त्रासा तर्क ३३ लंका निसि चर निकर
निवासा इहां कहां सज्जन कर वासा इति संचारी॥ अथ स्याई लछन॥ १
स्याई भाव बड़ो है अरु रस स्वरूप को हेतु है रति १ हांसी २ सोक ३ क्रोध ४
उत्साह ५ भय ६ ग्लानि ७ आश्चर्य ८ अरु अनुभाव विभाव संचारी ए
सब जब थाई भाव के अर्थ अनुकूल होइंगे तहां पूरनता रस की जानी
जातु है। अरु शृंगार १ हास्य २ करुना ३ रौद्र ४ वीर ५ भयानक ६ विभ
त्स ७ अदभुत ८ इति नाटक मते नवम सांति रस ९ कोउ कवि मानत है त
हां थाई निर्वेद अथ प्रथम शृंगार रस को देवता कृष्ण अरु वरन हू कृष्ण है सो देवतन
में श्रेष्ठ यातें यहू रसन में श्रेष्ठ है अरु सकल विभिचारि यामें चरितार्थ हो
तु है सो शृंगार द्वे प्रकार एक संयोग यथा सीतहि पहिराये प्रभु सादर अरु
दूसरो वियोग सो पांच प्रकार पूर्वानुराग १ यथा एक कहहिं न्प सुत तें
आली इहां ले दरस लागि लोचन अकुलाने रहीं...

चितकृपाल रघुराई अरु अहह नाथमोहि निपट बिसारी इहां तक विरह ३
यथा दुसह बिरह अब नहिं सहि जाई असूया ४ यथा शिव संकल्पकी
न्ह मनमाहीं स्राप ५ गौतम नारी शापबस उपल देह धरि धीर जहां
मिलवेकी आस सो वियोग शृंगार अरु जहां न मिलवेकी सो करुना
अरु कहूं विभाव ना संचारी भाव न्यारेहू रस प्रगट तु हैं परंतु प्रसन्नता =
बिलसो है अथ विभाव करि रस यथा दादुर धुनि चहुं दिशा सोहाई इहां
लौ नव पल्लव भय बिटप अनेका इहां तक अथ अनुभाव करि यथा भाषे
लषन कुटिल भई भौं हैं संचारी ही लिखे पूर्व है भ्रम मूर्छा इत्यादि अथ
हांसरस २ जहां अजोग को जोग उलटो काम अरु बुरो दीष बो अरु स्वर
बाजा ऊंचो नीचो होवो हास्य के हेतु होत है ब्रह्म देवता श्वेत रंग यथा ३
शिव समाज जब देखन लागे बिडरि चले बाहन सब भागे अथ करुना
रस ३ मित्र को दुख स्तक आप भाई अंधो दारिद्र रोदन कंपरो मरबो अ
नुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी सो काव्य अंगा होइ तब करुना रस य
म देवता कपोत रंग यथा सुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोक न हृदय समाहिं
मनहुं करुन रस कटक लेगतरी अवध अव जाइ अथ रौद्र रस ४ गारवें बोलि
बो शत्रु हथियार काढ़िबो देख क्रोध होवो ए विभाव टेढ़ा मोहे आंखेला
ल होंठ फरकैबो ए अनुभाव गर्भ चपलता इत्यादि संचारी रुद्र देवता
अरुन रंग यथा जो शत शंकर करहिं सहाई तदपि हतव रघुवीर दोहाई टी
इहां इंद्र जीत विभाव भुजादि फरकन अनुभाव गर्भ संचादि क्रोध थाई
तातें रौद्र अथ वीररस ५ थाई उत्साह सो चार प्रकार युद्ध १ दान २ दया ३
धर्म्म ४ शत्रु का बल समर ए विभाव अरु जो उग्र जीव हैं वचन उग्र बदन =
लाल अंग प्रफुल्लित अनुभाव गर्भ उग्रता असूइया संचारी इंद्र देवता पीत
रंग समता की सुधि लेलो वीर सम सुध भले तें रौद्र इन मो भेद इतनो यथा
युद्ध वीर एतना कहत नीति रस भूला रनरस बिटप पुलक मिस फूला दा
न वीर जो संपति शिव रावनहि दीन्ह दिये दिशमाथ सोई संपदा विभीष
नहिं सकुचदीन्ह रघुनाथ दयावीर औरको दुख देखि विभाव वाको दूरक
रिबो अनुभाव गर्भ धीरज संचारी यथा सुनि सेवक दुख दीनदयाला फर

किउठीं है भुजा विशाला धर्मवीर यथा शिवदधीचिबलि जोकछुभाषा तनधन तजेउ वचनपन राषा अथभयानकरस ६ भय विभाव कंपरोमांच प्रस्वेद अनुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारीभाव विष्णुदेवता श्वेतरंग ६ यथा डरपेगीध वचन सुनि काना अथवीभत्स रस ७ ग्लानि विभाव निषिद्ध कर्ज को देखिवो अनुभाव निंदा करिवो रोसकंपदुःख असूयासंचारि महाकाल देवता नील रंग यथा मज्जहिं भूतपिशाच वेताला अरुजनु वंनसी खेलहि चितहये इहांतक अथ अद्भुत रस ८ आचार्ज देखि अनहोनी विभाव ववलकंपरोमांच अनुभावहर्षडर मोह संचारी ब्रह्म देवता पीतरंग यथा देखरावा मातहि निज अदभुत रूप अखंड रोमरोमप्रति ९ लागे कोटिकोटि ब्रह्मंड अथ संतरस ९ सिद्धनकी मंडली तपोवनकया संसारतुच्छ एविभाव समता ज्ञान अनुभाव धीरजहर्ष संचारी विष्णु देवता स्वेतरंग यथा परिहरसकलभरोस रामहिं भजहिं तेचतुर नर अरु औरहू तीन रसगनाये हैं दास्य १ सख्य २ वात्सल्य ३ दास्य यथा चरणकमल चांपत विधि नानासख्य यथा सषा नीति तुम नीक विचारी वात्सल्य यथा ४ भइया कहहु कुशल दोउ बारे अथ रसनतें रसउत्पत्ति श्रृंगारतें हास्य करुनातें रौद्र वीरतें अदभुद विभत्सतें भय अथ रस शत्रु मित्र श्रृंगाररिपु विभत्स वीर रिपु भय अद्भुत रिपु रौद्र करुणारिपु हास्य अरु इनहींके विपरीततें मित्रता जानो इति रस ध्वनि अथ भाव ध्वनि संचारीतें थ्यंगदेवराजरत इनकी जहां प्रधानता होइ तहां भावध्वनि अथ संचारीभाव ध्वनि यथा घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रियाहीन डरपत मन मोरा अथ देव रति यथा प्रनवौं पवनकुमार खल बन पावक ज्ञानघन अथ राज रति यथा सुनहु महीपति मुकुटमनि तुम सम धन्य न कोउ रामलषन जाके तनय विश्वविभूषन दोउ अरु ऐसही मुनिपुन स्नेहतें भावध्वनि अथ रसाभास भावाभास रस अनुचिततें रसाभास अरु भाव अनुचिततें भावाभास अथ रसाभास यथा प्रभुलछमन पहँ वहुरि पठाई अथ भावाभास यथा हृदय विचारति वारहिं वारा कवन भांति लंकापति मारा टी· इहां चिंता अनुचित है अथ भावोदय यथा समाचार तेहि समय सुनि सी

चितकृपाल रघुराई अरु अहह नाथ मोहि निपट बिसारी इहां लक विरह३ यथा दुसह बिरह अव नहिं सहि जाई अरूया ४ यथा शिव संकल्प की न्ह मन माहीं स्ताप५ गौतम नारी शापबस उपल देह धरि धीर जहां। मिलिवे की आस सो वियोग श्रृंगार अरु जहां न मिलवे की सो करुना अरु कहूं विभाव ना संचारी भाव न्यारेहूं रसप्रगट तुहैं परंतु पूरनता= विलसी हैं अथ विभाव करि रस यथा दादुर धुनि चहुं दिशा सोहाई इहां लौ नव पल्लव भय बिटप अनेका इहांतक अथ अनुभाव करि यथा भाषे लषन कुटिल भई भौं हें संचारी ह्री लिखे पूर्व हैं भ्रम मूर्छा इत्यादि अथ हांसरस२ जहां अजोग को जोग उलटो काम अरु बुरो दोष वो अरु स्वर बाजा ऊंचो नीचो होवो हास्य के हेतु होत है ब्रह्म देवता श्वेत रंग यथा २ शिव समाज जब देखन लागे विडरि चले वाहन सब भागे अथ करुना रस ३ मित्र को दुख स्तक आप भाई अंधो दारिद्र रोदन कंपरो मरखडो अ नुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी सो काव्य अंग होइ तब करुना रस य म देवता कपोत रंग यथा सुख सुखाहिं लोचन श्रवहिं सोक न हृदै समाहिं मनहुं करुन रस कटक लै उतरी अवध जाइ अथ रौद्र रस ४ गार्व तें बोलि वो शत्रु हथियार कढ़िबो देख क्रोध होवो ए विभाव टेढ़ो मोहें आंखे ला ल होंठ फरकवो ए अनुभाव गर्भ चपलता इत्यादि संचारी रुद्र देवता अरुन रंग यथा जो शत शंकर करहिं सहाई तदपि हतव रघुवीर दोहाई टी इहां इंद्र जीत विभाव भुजादि फरकन अनुभाव गर्भ संचादि क्रोध थाई तातें रौद्र अथ वीर रस ५ थाई उत्साह सो चार प्रकार युद्ध१ दान२ दया ३ धर्म्म ४ शत्रु का बल समर ए विभाव अरु जो उग्र जीवे हैं वचन उग्र बदन= लाल अंग प्रफुल्लित अनुभाव गर्भ उग्रता असूइया संचारी इंद्र देवता पीत रंग समता की सुधि लै वीर सम सुध भूले तें रौद्र इनमें भेद इतनो यथा युद्ध वीर एतना कहत नीति रस भूला रन रस विटप पुलक मिस फूला दा न वीर जो संपति शिव रावनहि दीन्ह दिये दिशमाथ सोई संपदा विभीष नहिं सकुचदीन्ह रघुनाथ दयावीर औरको दुख देखि विभाव वाको दुख रिदो अनुभाव गर्भ धीरज संचारी यथा सुनि सेवक दुख दीनदयाल फर

कि उठी है भुजा बिसाल धर्मवीर यथा सिवदधीचिबलि जो कछु भाषा तन धन तजेउ बचन पन राषा अथ भयानक रस ६ भय बिभाव कंप रोमांच प्रस्वेद अनुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी भाव बिष्णु देवता श्वेत रंग ६ यथा डरपे गीध बचन सुनि काना अथ बिभत्स रस ७ ग्लानि बिभाव निषिद्ध कर्म को देखिबो अनुभाव निंदा करिबो रोम कंप दुःख असूया संचारि महाकाल देवता नील रंग यथा मज्जहिं भूत पिशाच बेताला अरु जतु बंत सी खेलहि चित्त ह्ये इहां तक अथ अद्भुत रस ८ आचार्य देखि अनहोनी बिभाव बचन कंप रोमांच अनुभाव हर्ष डर मोह संचारी ब्रह्म देवता पीत रंग यथा देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड रोम रोम प्रति १ लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड अथ सांत रस ९ सिद्धन की मंडली तपोबन कथा संसार तुच्छ ए बिभाव समता ज्ञान अनुभाव धीरज हर्ष संचारी बिष्णु देवता स्वेत रंग यथा परिहर सकल भरोस रामहिं भजहिं ते चतुर नर अरु औरहू तीन रस गनाये हैं दास्य १ सख्य २ बात्सल्य ३ दास्य यथा चरण कमल चांपत बिधि नाना सख्य यथा सषा नीति तुम नीक बिचारी बात्सल्य यथा ३ भइया कहहु कुसल दोउ बारे अथ रसन तें रस उत्पत्ति श्रृंगार तें हास्य करुना तें रौद्र बीर तें अद्भुद बिभत्स तें भय अथ रस शत्रु मित्र श्रृंगार रिपु बिभत्स बीर रिपु भय अद्भुत रिपु रौद्र करुणा रिपु हास्य अरु इनहीं के बिपरीत तें मित्रता जानो इति रस ध्वनि अथ भाव ध्वनि संचारी तें ब्यंग देव राजरत इनकी जहां प्रधानता होइ तहां भाव ध्वनि अथ संचारी भाव ध्वनि यथा घन घमंड नभ गर्जत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा अथ देव रति यथा प्रनवौं पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन अथ राज रति यथा सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम सम धन्य न कोउ राम लषन जाके तनय बिस्व बिभूषन दोउ अरु ऐसही मुनि पुत्र स्नेह तें भाव ध्वनि अथ रसाभास भावाभास रस अनुचित तें रसाभास अरु भाव अनुचित तें भावाभास अथ रसाभास यथा प्रभु लछमन पहं बहुरि पठाई अथ भावाभास यथा हृदय बिचारति बारहिं बारा कवन भांति लंकापति मारा टी॰ इहां चिंता अनुचित है अथ भावोदय यथा समाचार तेहि समय सुनि सी

य उठी अकुलाय जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिर नाइ टी॰ इहां
संका भाव को उदय अथ भाव संधि यथा सकुचन कहि न सकत गुरु =
पाहीं पितु दरसन लालच मन माहीं टी॰ इहां लाज हर्ष की संधि है अथ
भाव सबलता इत बचन रचना प्रय लागी प्रेम प्रताप वीररस पागी अथ
भाव सांति यथा जनक लहेउ सुख सोच बिहाई पैरत थके थाह जनु पा
ई टी॰ संका भाव को शांति रस सब ठौर प्रधान बड़ो है अरु कहूं भावो रा
रुता पावत है जैसे सेवक के घर स्वामी जाय यथा शंभु गए कुंभज ऋ
षि पाहीं इति असंलक्ष्य क्रम ध्वनि॥ शब्द अर्थ दोऊ ते जांइसी प्रती
ति व्यंग होतु तेहि साथही जहां क्रम ध्वनि अलंकार वस्तु व्यंग शब्द
ते शब्द ध्वनि अथ शब्द तें अलंकार यथा निसिचर अधम मलायत
न ताहि दीन्ह निज धाम अरु इहां इन सब्दन के अर्थ न व्याज स्तु ति
व्यंग है यथा धर्म हेतु अवतरेहु गुसांई मारेहु मोहि व्याध की नांई अ
य शब्द तें विरोधभास व्यंग जहां शब्द सों व्यंग होइ वस्तु सों वस्तु ध्वनि
है यथा गुरु विवेक सागर जग जाना तिनहिं विश्व कर बदर समाना टी॰
गुरु विवेक सागर विश्व कर बदर शब्दन तें व्यंग होतु है कि ऐसो गुरु इन
की का कहिये ए बड़ो हैं यह वस्तु अथ अर्थ ध्वनि अर्थ शक्ति तें बारह प्र
कार स्वतः संभवी ते वस्तु अलंकार चारि प्रकार अरु कवि प्रौढ़ो क्ति तें
चारि भांति अरु कवि निबद्ध तें चारि यों बारह भेद अथ वस्तु लक्षण॥
सूधो कहनाउत ते अलंकार न ठहरे ताको वस्तु कहिये अथ स्वतः संभ
वी लक्षन। ख्यात अर्थ तें उचित व्यंग होइ अथ स्वतः संभवी वस्तु त=
तें वस्तु १ यथा सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप बिद्यमान रण पा
इ रिपु कायर करहिं प्रलाप टी॰ सूर को अपने मुख बड़ाई न करनो स्वतः
वस्तु अरु कायरता जनाइबो परशुराम को दूसरो व्यंग अथ स्वतः संभवी
वस्तु ते अलंकार २ यथा तहां राम रघुवंश मनि सुनिय महा महिपाल भं
जेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल टी॰ भंजिबो प्रयास बिनु
बड़ाई वस्तु तें उत्प्रेक्षा व्यंग है अथ अलंकार तें अलंकार ३ यथा देखा भ
रत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि बिनु फर सायक मारेहु चाप

भवन लगि तानि टी॰ अनुमानते दूसरो विभावना ध्वंग अथ अलंका
रते वस्तु ४ यथा चंद किरन रस रसिक चकोरी रविरुष नयन सकैं किमि
जोरी। टी॰ इहां दृष्टांत अलंकारतें सुकुमारता वस्तु अथ कवि प्रौढोक्ति
वस्तु तें वस्तु ५ यथा नवपल्लव फल सुमन सोहाए। निज संपति सुर रू
खलजाये टी॰ सोहाइबो वस्तु दूसरी वस्तु व्यंग कवि प्रौढोक्ति कल्पसुर
रूषको लजाइबो अथ वस्तु तें अलंकार ६ यथा लता भवन ते प्रगट भे
जेहि अवसर दोउ भाइ निकसे जनु जुग विमल बिधु जलद पटल बिल
गाइ टी॰ लताते प्रगट होबो वस्तु करि उत्प्रेक्षा व्यंग युग ससि कवि क
ल्पित अथ अलंकारतें अलंकार ७ यथा आश्रम सागर सांत रस पूरनपा
वनपाथ सैन मनहुं करुना सरित लिये जात रघुनाथ टी॰ इहां रूप
कतें उत्प्रेक्षालंकार अथ अलंकारतें वस्तु ८ यथा नृप भुजबल बिधु
शिव धनु राहू गुरु अकठोर बिदित सबकाहू टी॰ समस्तरूपककरि
कठोरता सूचन कराइबो वस्तु शशि राहु कवि कल्पित अथ कविनिबद्ध
वस्तुते वस्तु ९ यथा चरन कमल बंदौ तिन्ह केरे पुरवहु सकल मनोर
थ मेरे टी॰ बंदना वस्तुतें मनोरथ पूरब वस्तु चरण कमल कविनिबद्ध
अथ वस्तु ते अलंकार यथा शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी राम चरि
त मानस कवि तुलसी टी॰ इहां हुलसबो वस्तु रामचरितमानस रूप
क व्यंग अरु अलंकारतें अलंकार ११ यथा अरुन चरन पंकज नख जो॰
ती कमल दलन्ह बैठे जनु मोती टी॰ सम रूपकते उत्प्रेक्षा व्यंग अथ ६
अलंकारतें वस्तु १२ यथा करि मुनि चरन सरोज प्रनामा आयसु पाइ की
न्ह बिश्रामा टी॰ इहां मुनि चरन सरोज सम रूपकालंकार अयसु पाइ बि
श्राम करिबो वस्तु अथ शब्दार्थकृत व्यंग शब्द अर्थ दोउ शक्ति मिल यं
गकहै याहू को उभय शक्तिहू कहत हैं यथा कवित विवेक एक नहिं मोरे स
त्य कहौं लिखि कागद कोरे टी॰ इहां शब्दार्थके चमत्कारतें अपनी नम्र
ता व्यंग अरु ध्वनि के ५१ भेद भइ हैं औ इनके बहुत होत हैं सब भेद सों ७
संकर संसृष्टि बिस्तार भयान हीं लिख्यो इति उत्तम काव्य अथ मध्यम
गुनीभूत व्यंग प्रकार ८ जहां वाच्यके चमत्कारतें व्यंग प्रधान नहोइ स

गूढ १ अरु परंगु २ तुल्य प्रधान ३॥ अस्फुट ४ काकु ५ बच्य सिंदागु ६ संदि
ग्ध ७ असुंदर ८ अथ अपरांगको अंगरसवत अलंकार यथा कृपावारि
धर राम खरारी पाहि पाहि प्रनतार तिहारी टी॰ इहां वीरको अंग करुना
रसहै सो राज रति भाव अंगहै अथ भावको अंगरस यथा श्री रघुबीरप्रता
पतें सिंधुतरे पाषानतें मतिमंद जे रामतजि भजहिं जाइ प्रभु आन टी॰
इहां देव रति भावको अंग सांतिरसहै अथ भाव अंग यथा आवा कपिलं
का जेहि जारी टी॰ वैरिनकोचिंता राज रतिभाव अंगहै अथ रसाभास ऊ
र्जस अलंकार यथा कविदल बिपुल सराहन लागा टी॰ शत्रु बड़ाई
करिबो अनुचित भाव सो वीररस अंगहै अथ भावको अंगभासभागे
भालुबली सुखजूथा टी॰ वीरको भागबो अनुचित भावको अंगभाव संति
अथ समाहित अलंकार यथा देत चांप आपुहि चलि गयेऊ परशुराम
मन विस्मय भयऊ टी॰ इहां गर्बकी शांति अथ भावको अंग भाव
उदय यथा रावन आवत सुनेउ सकोहा देवन्ह तके मेरु गिरि षोहा
टी॰ त्रास को उदय अथ भावको अंग भावसंधि यथा दुहुं मसाज=
हिय हरष विषादू टी॰ हर्षविषाद की संधि अथ भावको अंग भाव
सबलता यथा चले भाग कपि भालु भवानी विकल पुकारत आरत
बानी॥ विकलता आरत इन भावनको सबलता है सो राज रति को अंगहै
अरु अर्थहि देइ बताइ सो बाच्य सिंदांग व्यंग कहावे यथा असकस
कहहु मानमनऊ ना सुख सुहाग तुम कहं दिन दूना टी॰ इहां शब्दश
क्ति बारि आक्षेपको पोषक है अथ स्फुट व्यंग लक्षना कविमित्र हू कठ
न सो लषे यथा चकृत चितव मुदरी पहिचानी हर्ष विषाद हृदय अकु
लानी टी॰ इहां कठिनतातें व्यंग अधिक विचारतें किलकिंचित हाव४
अथ संदेही व्यंग यथा कीमैना ककिरवग पति हो इ टी॰ इहां एक जाने
बिना संदेह प्रधानतें व्यंग अथ तुल्य प्रधान जहां बाच्य व्यंग बराबर यथा
तोहि देषि सीतल भई छाती पुनि मोकहं सो दिन सो राती टी॰ इहां दिन रा
त्रि सो कहेतें व्याकुलता ध्वनि बाच्य ध्वनि बराबर है अथ काक पोछे कहि
आए अथ असुंदर लक्षन ध्वनितें बाच्य निको होय यथा कावर्षा जब कृषी

सुखानेसभय चूकि पुनि का पछताने टी॰ फेरचाप टूटै ऐसो समय मिलेगा व्यंगसो वाच्यतें सुंदर नाहीं इति मध्यमकाव्य अथ दोषलक्षणशब्द अर्थ के अधिकयतासे रस लवूक परै अंगनहींन रसयतिभंग अर्थ अपार्थ बनै प्रयोजन करन कटुपुन रुक्ति अंथ विरोधी बधिर पंगुनगन मृतक औरहू दूषन के प्रभेद बहुतहैं इ राम चरित्रहै सुहृदय मोततेदूषननहीं है अथ गुन लक्षण रसकी उत्कर्षता रचना सो गुन तीन भांति माधुर्य १ ओज २ प्रसाद ३ अथ माधुर्य जामे कटुबर्नन होइ मन रंजन करै यथा कं कन किंकिनि नूपुर धुन सुनि अथ ओज जामें संयोगी अक्षर होइ अक्ष मास वड़ो यथा चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीज हीं इत्यादि अथ प्रसाद जहां सुनत ही अर्थ जानो जाय अरु सब गुनमें रहतहै यथा ज्ञानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार केहिके लोभ बिड़ बना कीन्हन यह संसार अथ तीन वृति गुनतें हेतुहै उपनागरिका मधु र गुन १ पुरुषा डब्धत २ कोमला प्रसादयुत ३ अब गुनालंकार को भेद कहतु हैं इनोते बड़ाई होतहै अरु बिसर नहीं होत यामें गुनको अरु अलं कारको भेद कैसो जानै रसको बढ़ावै अनुप्रास उपमादि है अलंकार सुभ अ- थ नायका जाति पद्मिनी अति सुकुमारी १ चित्रनी उपभोगन में रुचि ते २ शंखिनी दयारोष नाहीतें ३ हस्तिनी उदरभरि भोजन चाबते ४ अथ नायका भेद स्वीया स्वामी में अनुरागतें १ परकीया छिपाय परपुरुष अनुरागतें २ सामान्या धन लोभतें ३ अथ स्वीयाव धा मुग्धा अंकुरित जोबना १ म ध्याक्ष मान लज्जा कामते २ प्रगल्भा केलिकला प्रवीन पति में ३ अथ मु ग्धा भेद है ज्ञात १ अज्ञात २ अरु नवोढ़ा लज्जा भय पराधीन रतितें ३ बिश्र ब्ध नवोढ़ा पति में कछु बिश्वासतें ४ मध्या प्रगल्भा मानव स्था में तीन प्रका र धीरा व्यंग कोप प्रकाशका १ अधीरा कोय अव्यंग प्रकाशिका २ धीराधीर व्यंगाव्यंग कोप प्रकाशिका ३ अरु ज्येष्ठा कनिष्ठा अधिक न्यून प्रीतिते धी रादि भेद एहिमें होतहै अथ परकिया भेद कन्या अनब्याही परपुरुष अनु रागतें १ परोढ़ा जो परनै बिबाह लयो २ अथ सुरत गुप्ता तीनि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ तें विदग्धा है बचना चातुरीते बचना विदग्धा १ रूपा चातुरीते

रूपा विदग्धा २ लछिता लछन नामेते कुलटा जो चाहे बहु नायक ने अनु
स्यना के तीन भेद संकेतना बासहोवेते १ संकेत नाशहो निहारतें २ संकेत
ते नायक ह्वै आयो आयन गई पछताय ३ मुदिता लछन नामेते द्रुति अरुग
निका लछन पूर्वलिखि आए हैं अथ साधारण नायका भेद अन्य संभोगा दुः
खिता बक्रोक्ति गर्विता भेद प्रेम गर्विता रूप गर्विताता अरु मान वती भेद
तीन लघु मध्यम गुरु मान ते इनसबको लछन नामेते प्रथम कहि जो नाय
का कहि आए हैं सो सब आठ प्रकारकी होतीहैं और बिरह तीभेद तीन प्रो
षित पतिका १ जाको कंत विदेश गयो प्रोष्यत पतिका जाको पति बिदेश जा
यगो २ प्रोषित पतिका जाको पति बिदेश को चलतु है ३ अरु आगत पति
का लछन नामेते एहू को कोऊ विरहती मानतु है पैय है नहीं खंडिता अन्यो
पभोग चिन्हित पति देखेते और कलहंतरिता अपमान कर पीछे पछता
य विप्रलब्धा संकेत मै पति न मिलेते व्याकुल होय उत्कंठता लछन नामे
ते वासक सज्जा आजु हमारे पति आवेंगे जानि रति साम प्रीते ब्यार करे
ते स्वाधीन पतिका लछन नामेते अभिसारिका अपने जाय या पीय वो
लायेते इति अष्टनायिका अथ उत्तमा मध्यमा अधमा नायका तीनोंका
लछन नामेते अरु अभय दिव्य अदिव्य दिव्यादिव्य विचार लिखतु हों दि
व्य इन्द्रानी आदिव्य नरतिय दिव्यादिव्य द्रोपदी आदि इन्हते भेद किये ब
हुत भेद होत हैं इति नायका सखी प्रीय नरमादि सिखावन धर्म दूती चु
रहारिनि गोसाइनि आदि अथ नायक भेद पति १ उत्पति २
वैसिक ३ इन्ह के लछन नामहि तें सखा भेद चार पीठमर्द १ वीट २
चेटक ३ विदुषक ४ अथ दरसन चारि भांति श्रवण १ प्रत्यक्ष
२ चित्र ३ स्वप्न ४ इति नायक मिलाय वो चारि भांति साम १
दाम २ दंड ३ विभेद ४ अथ हाव दस प्रकार लक्षण तरु निनके
अंगन ते प्रगट जे भाव होतु हैं ताही को हाव कहत हैं प्रथम
लीला हाव लक्षण बोलनि चलनि चितवनि मो सब भांति अनुरा
ग करे नायका १ विलास ल- पिय देखत मन हरवे की भाव करै २ विछित्त
लक्षण थोरा किये शृंगार पय शोभा अधिक होइ ३ विभ्रम लछन नामहि

ते ४ किल किंचितल· उरहै सिरोमहर्ष एकैबारहोय ५ मोअइतल·पिय
कथा मिलनको सुन चाहहोइ ६ कुटुमितल· अधर उरजके शनिन
कौधरैझूठी रूषी होय हियमें सुख पावै ७ बिंबोकल· आए आदरन करैल
लितल· अंगअंग भूषन सोहै ८ विहितल·लाज ते नबोलिसकै १० अथ १
शब्दालंकार छेकानु प्रास यथा भए प्रगट कृपाला परमदयाला कौशि १
ल्याहितकारी अथ वृत्तानु प्रास एकबरन बहु यथा कहि जय जय जय रघु
कुलकेतु अथ लाटानुप्रास एकपद बहुत बेर आवै यथा भव भव विभव प
राभव कारिनि वैदरभी गौनी पंचाली एहूरीति कवित मतेहै अथ यम
क एक शब्द है बार आवै यथा भएविदेह बिदेह बिशेषी अरु और यमक
भेद चारों चरन अर्ध अर्धको अर्ध इत्यादि अथ अर्थालंकार जाको बरन
यसो उपमेय जाको उपमा देइ सोउपमान समता कारक वाचक धर्म
इतो सोजो रहै चारों होइ तहां पूरन उपमा यथा तरुन अरुन अंबुज समचर
ना अरु एकद्वैतीन लुप्त ते आठभेद अथ वाचक लुप्ता यथा नव अंबुज अंब
क छबिनीकी अथ वाचक धर्म लुप्ता यथा विधुबदनी मृगशावक लोचनि
अथ वाचक धर्म उपमान लुप्ता यथा जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनैनी इत्या
दि लुप्ता अथ अनन्वै। उपमेय उपमा एक यथा इन सम येइ उपमा उरआ
नी अथ उपमालोपमेय परस्पर लगे यथा राम कथा मुनि बर्य्य बखानी
सुनी महेश परम सुख मानी रिषिपूछी हरि भगत सोहाई कही शंभु अधि
कारी पाई अथ प्रतीय प्रकार पांच उपमाने को उपमेय करै यथा उतरिन
हाथ यमुल जल जो शरीर समश्याम १ अथ उपमेय को उपमानते आद
र नहोय २ यथा नाघहिं खग अनेक वारीसा सूरन होंहि ते मनुस ठ कीस
अथ उपमान को उपमेयते आदर नहोय ३ यथा सिय मुख समता पाव ३
किमि चंद बापुरो रंक अथ उपमा जहां समता न करै ४ यथा सीय बदन १
सम हिमकर नाही अथ उपमान जहां वृथा होइ ५ यथा कोटकाम उपमा
लघु सोऊ। अथ रूपक है भांति एक तदरूप १ अभेद २ अधिक १ न्यून २ स
म ३ दोउन के तीन तीन भेद होतु है अथ अधिक तद्रूप यथा विष वारुणी बं
धु प्रियते ही कहिय रमासम किमि बैदेही अथ न्यून तद्रूप यथा रामा न लघु

नाम हमारा परन्तु सहित बड़ नाम तुम्हारा अथ समतद्रूप यथा ल
षन उतर आहुति सरिस इत्यादि अथ अधिक अभेद रूपक यथा नव विधु
विमल तात जस तोरा रघुबर किंकर कुमुद चकोरा उदित यदा अथ हिक
बहू ना घटिहि नजगान भदिन दिन दूना अथन्यून अभेद यथा अतिष
लजे विषयी बक कागा अथ सम भेद यथा संपति चकई भरत चक मुनि
आयसु खेलवार तेहि निशि आश्रम पिंजरा राषे भा भिनुसार अथ परि
नाम उपमान क्रिया करै उपमेय को यथा भाम वलोकय पंकज लोचन अ
थ उल्लेष है भांति बहुतन के एक उल्लेष यथा रहे असुर छल छोनिप बेश ति
न्ह प्रभु प्रगट काल सम देषा पुरवासिन देखे दोउ भाई नरनूपन लोचन सु
खदाई दूसरी यथा जय रघुवंश वनज वन भानू गहन दनुज कुल दहन
कृशानू अथ सुमरिन १ भ्रम २ संदेह ३ इनको नाम तें लछन सुमरिन यथा सि
य मुख ससि देखि सुख पावा भ्रम यथा बहुरि आय देखा सुत सोई हृदय
रूप सन धीर होई संदेह यथा कोतुभ तीन देव महं कोई नर नारी यण कौतुम
दोई अथ शुद्धापन्हुति और की आरोप करि सांचो धर्म छिपावे बंधुन होय
मोर यह काला अथ हेतापन्हुति जुक्ति तें छिपावे बस्तु यथा देषियत प्रग
ट गगन अंगारा अवनिन आवत एको तारा अथ पर्जस्तापन्हुति आन के
गुन आन में आरोपे यथा सुकृत न होहिं भूपगुन चारी अथ भ्रांतापन्हुति
भ्रम दूर करै यथा कह प्रभु हंसि जनि हृदय डेराहू लूक नि असनि केतन
हि राहू एकि रीट दशकंधर केरे आवत बालि तनय के प्रेरे अथ छेकापन्हु
ति युक्ति सों जहां बात दुरावे परसे यथा कछु न परी हालौन्ह गोसांई
कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाईं अथ कैतवापन्हुति एक को वनाकरि ब
नै आन यथा लखी नरेश बात सब सांची तियमिस मीचु सीस पर नाची
अथ उत्प्रेक्षा संभावना भांति तिन वस्तु हेतु फल ३ अथ वस्तु तें १ यथा
छच मेघडंबर सिरधारी सो जनु जलद घटा अतिकारी हेतु तें २ यथा प्रभु
कह गरल बंधु ससि केरा अतिप्रिय निज उर दीन्ह बसेरा फल तें ३ यथा चा
रू चरन नष लेखति धरनी नूपुर मुखर मधुर कवि वरनी मनहु प्रेम बस
विनती करहीं हमहि सीय पद जनि परिहरहीं अथ अति सयोक्ति रूपक

जहां उपमाननें। उपमेय प्रगटै यथा सिरस सुमन कन वेध अहीरा अथ
अपन्होक्ति और को गुन और पर ठहरावै यथा तव मूरति उर विधु बसत
सोई स्यामता भास अथ भेद कांति औरे पद जहां होय यथा मही सरिता
गर सर गिरि नाना सब प्रपंच तहं आनै आना अथ संबधाति सयोक्ति
अजोग को जोगता देइ यथा धवल धाम ऊपर नभ चुंबत अथ दूसरो वाके
विपरीत यथा नवपल्लव फल सुमन सुहाए निज संपत सुर रूख लजाए अथ
अक्रमाति सयोक्ति कारन कारज संगी सो होय यथा संधाने उप्रभु विसिख क
राला उठी उदधि उर अंतर ज्वाला अथ चपलाति सयोक्ति कारनतें होतु ना
मैं काज यथा बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा सुनत नसाइ काम मद दंभा
अथ अत्यंताति सयोक्ति पूर्वापर क्रम नाहीं यथा कह कपि सुनि गुर द
छिना लेहू पाछे हम सहिं मंत्र तुम देहू अथ त्रिविध तुल्य जोगता सम
सुभाव हित अहित यथा निंदा स्तुति उभय सम इत्यादि दूसरो बहुसों
एक बात यथा गति बिलोकि खग नायक लाजे तीसरो बहुसो समता
गुन करि यथा प्रभु समरथ सर्बज्ञ सिव सकल कला गुन धाम जोग
ज्ञान वैराग्य निधि प्रनत कल्पतरु नाम अथ दीपक निज गुन नते बर्नै
इतर यथा भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच अरु शब्द अर्थ दूनो के
फिरेते तीन अथ प्रथम शब्द वृत्ति यथा हे विधि मिलै कवन विधि बाला
अथ अर्था वृत्ति यथा कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा अथ पदार्था वृत्ति य
था राम साधु तुम्ह साधु सयाने अथ प्रति बस्तु उपमा जहं दूनो वाक्य
रा बर यथा राजन राम अतुल बल जैसे तेज निधान लषन पुनि तैसे अथ
दृष्टांतालंकार जहां बिंब प्रति बिंब होय यथा उभय बीच सिय सोहति कै
सी ब्रह्म जीव बिच माया जैसी अथ त्रिबिध निदर्सना प्रथम जहां वाक्य
अर्थ दूनो सम यथा संतहुं सगुन गहहिं पय परिहर वारि बिकार दूसरो
आन सों आन बस्तु आरोपै यथा अस कहि फिरि चित एहिं ओरा सिय
मुख ससि भे नयन चकोरा तीसरो कारज देख भलो बुरो फल कहै यथा रा
मानुज लघु रेख खिचाई सो उन हि ना घउ अस मनुसाई अथ सहोक्ति स
बएकै साथ बरनै यथा बल प्रताप बीरता बड़ाई नाक पिनाकहि संग सिधा

है अथ व्यतीक गुन होय गनि समता तजि एक व्यंग बरनै यथा ॥
कालकूट मुख पय मुख नाहीं अथहि विध विनोक्ति नीक बानि ॥
काम कछु दुरनै नहीं यथा राम कहा सब कौशिक याहीं सरल सुभाव छु
वा छल नाहीं दूसरो यथा बिधु बदनी सब भांति सवांरी सोह न बसन ॥
विना बरनारी अथ समासोक्ति जहां प्रस्तुत में अप्रस्तुति को ज्ञान
होय यथा सूरसमर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप अथ परिक
र विशेषन मों अभिप्राय यथा पति देवता सुतीय महं मातु प्रथमत
व रेख अथ परिकरांकुर साभिप्राय विशेष जहं यथा गुनहि लषनक
रहम पर रोषू अथ श्लेष बहुत अर्थ एक शब्द मों होय यथा साधु चरित
शुभ चरित कपासू निरस बिसद गुन मय फल जासू अथ अप्रस्तुत प्र
शंसा सो है प्रकार एक बरन प्रस्तुति दूसरो प्रस्तुति अंस प्रथम यथा
चहुं जुग तीन काल तिहु लोका भए नाम जपि जीव विशोका दूजा यथा
कवि कोविद अस हृदय विचारी गावहिं हरि जस कलि मल हारी अथ प्रजा
उक्ति के है भेद बात रचना ते कहे अरु मन भावतो काम बहाने ते साधिवो प्र
थम यथा तिन्ह कहं कहिये नाथ किमि चीन्हे देखिय रवि कि दीप कर लीन्हे दू
सरो यथा लषन हृदय लालसा बिशेषी जाइ जनक पुर आइय देषी अथ व्या
जस्तुति मिस निंदा यथा कोट बिप्र बध लागहिं जाहू आए सरन तजों नहि ता
हू अथ व्याज निंदा निंदा मिस बड़ाई यथा जननी तू जननी भई बिधि सन ॥
कछु न बसाय अथ आक्षेप तीन प्रकार एक निषेधाभास गुन दोष समता तें
दूसरो पहले आप कहे पुनि वाको फेरती सेर निषेध को बिधि बचनते छिपावे
प्रथम यथा राम करहु सब संजम आजू जौ बिधि कुसल निबाहइ काजू दूस
रो यथा जदपि कवित रस एकौ नाहीं राम प्रताप प्रगट हिय माहीं तीसरो राज
देन कहि दीन्ह बन मोहि न सो दुख लेस तुम बिनु भरतहिं भूपतेहिं प्रज
हिं प्रचंड कलेस अथ निरोधाभास नाम लक्षण यथा धूरि मेरु सम जनक ज
म ताहि व्याल सम दाम अथ विभावना षट प्रकार विना कारनै काज होइ १
यथा आनन रहित सकल रस भोगी दूसरो हेतु अपूरन ते काज पूरन होय २
यथा काम कुसुम धनु सायक लीन्हे सकल भुवन अपने बस कीन्हे तीसरो प्र

तिबंधक जद्यपितऊ कारज कीपूरता ३ यथा खवघोरहतिविघनउजारा दे
खततोहि अछैतेहि मारा चौथो अहेतुतें काजहोय ४ यथाभ एउतात निसिच
र कुल भूषण पांचवों कौनोकारनतें काज बिरुद्ध ५ यथा जेहितरुरहेंकरत ६
सो पीरा छठयोंकाहू काजतेंकारनहोय यथाशंभु बिरंचि विष्णु भगवाना उ
पजहिं जासु अंसतें नाना अथविशेषोक्ति कारनहोते काज नहोय यथातम
किताकित किशिवधनु धरहीं उठइन कोटभांतिबल करहीं अथ असंभा
वना अनहोवे लायक कारज कहे फल सिद्धितें यथा हृदय बिचारत व हिवा
रा काज अरुकारन न्यारे जहांहोइ १ औरठौर करे औरठौर को काम २ हितकर
ते अहित कोलाभहोइ ३ प्रथम परहितहानिलाभ जिनकेरे उजेहरषबिषा
द बसेरे दूसरो जोइ जोइ मनभावै सोइ लेहीं मनमुखमेलिद्धारकपिदेहींती
सरो करतनीक फल अनइस पावा अत्र त्रिविध बिषम अनमिलतकोसंग २
कारन कारज भिन्नहोइ २ भलो करतबुरो ३ प्रथम यथा कठिन भूमिकोमल
पदगामी दूसरो यथा स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहितेपानतोस
रे यथा भलेउ कहत दुखरौरहिलागा अथ त्रिविधि सम दोऊ अनुरूपतें १ का
रजमों कारन मिले २ विनाश्रमे कारजसिद्धहोय ३ प्रथम यथा जसदूलहतस
वनीबराता दूसरो यथाका आचरज भरत असकरहीं नहिंविषबेल अमिय
फलफरहीं तीसरो यथा दुंदुभि अस्थिताल देखराए बिनुप्रयास रघुनाथढ
हाए अथ विचित्र उलटे फलको जतन करनो। यथा राम कहेउ रिसितजि
य मुनीसा करकुठार आगेयहसीसा अथ द्विविधि अधिकजहां आधारतें
आधेय अधिक आधेयतें आधार अधिक १ प्रथम यथा सुनि पाती पुलके
दोउभ्राता अधिकसनेह समातनगाता दूसरो यथा व्यापक ब्रह्म निरंजन
निर्गुन बिगत विनोद सो अजप्रेम भक्तिबस कौशिल्याके गोद अथ अल्प
सूक्ष्म आधेयतें अति सूक्ष्म आधार यथा रोमरोम प्रतिलागे कोटि को
टि ब्रह्मंड अथ अन्यान्याय रस्पर उपकारतें यथा मुनिहिं मिलत अस
सोह कृपाला अथ त्रिविधिविशेष बे आधार आधेय २ थोड़ करतें सिद्ध बहु ३।
एक को अनेक ठौर बरनै १ प्रथम यथा गहिगिरिनिसिनभधावत भए
उ दूसरो यथा सब परम लघु जासु बसविधि हरिहर सुरसब तीसरो य

या मती दीखकौतुक मग जाता आगे रामसहित श्री भ्राता फिरचित
वा पाछे प्रभु देखा अथ व्याघात द्वि विधि औरकाजतें औरकाजकरै १
विरोधीतें कारज होइ २ प्रथम यथा देखहु तात बसंत सोहावा प्रियाहीन
मोहि भय उपजावा दूसरो यथा राखिअ औधजु अवधि लगि रहत
जानि अप्रान दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान अथ कारन
माला उतर उतर होय पूरब काज यथा बिनुसतसंग बिबेक नहोई रा
म कृपा बिनु सुलभ नसोई अथ एकावली जंजीरा जोरपद करे यथा बि
नुगुरु होइ किज्ञानु ज्ञान किहोइ बिरागु बिनु अथ माला दीपक दीपक
एकावल मिलके यथा जप जग रामराम जपजेही अथसार एकतें एक
अधिक यथा सबतें अधिक मनुज मोहि भाये अरु तिन्ह महु निगमध
र्म अनुसारी इत्यादि अथ न्यूनसार यथा एक मैं मंद मोहबस कुटिलहृदय अ
ज्ञान पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान अथ यथा संख्य बरनन बिषै
वस्तु अनुक्रमतें यथा बंदौं रामनाम रघुबरकोहेतु कृसानु भानु हिमकरको अ
थदि विध पर्याय अनेककोक्रमतें आश्रय एक २ पुनः एककोआश्रयअनेकप
थम यथा जनक लहेउ सुख सोच बिहाई दूसरो यथा नाम अनंत अनंत गुण अमित
कथा विस्तार अथ प्रवृत्ति कछु कछु को बदलनो यथा तारा बिकल देखि रघुराया दी
न्ह ज्ञान हरलीन्ही माया अथ परिसंख्या एक ठौर बरजि कै दूसरे ठौर ठहरै यथा म
नि मुक्ता मानिक छबि जैसी अहि गिरि राज सिरसोह नतैसी । नृप किरीट तरुनी
तन पाई लहहिं सकल सोभा अधिकाई अथ विकल्प यहहै किवह यथा कीत
न प्रान कि केवल प्राना अथ द्विविध समुच्चै भाव बहुत एक ठौर गूथे होइ १ एक का
ज चाहै अनेक अंग होय २ प्रथम यथा चकृत चितव मुंदरी पहिचानी हर्ष विषाद
हृदै अकुलानी दूसर यथा अब मैं कुसल मिटे भय भारे देखि रामपद कमल तु
म्हारे अथ कारकदीपक एकमें क्रमतें अनेक भाव यथा बारबार मुख चुं
बति माता नयन नेह जल पुलकित गाता अथ समाधि और हेतु मिल
कारज सुगम होइ यथा बचन सुनत कपि मन मुसुकाना भइ सहाय सार
द मैं जाना अथ काव्यार्थ पति यह कियो वह का यथा जितेउ सुरासुर तब
श्रम नाहीं नरबानर केहि लेखे माहीं अथ काव्य लिंग युक्तितें अर्थ समर्थ न होय

यथा सोनर कों दसकंध वालि वध्यो जेहि एक सर अथ अर्थांतरन्यास सामान बिशेष दृढ़ तें यथा राम एक तापस तिय तारी इहां ते नाम प्रसाद सोच नहिं सपने इहां लौ अथ बिकस्वर जहां बिशेष होय पुनि समान बिशेषय था सुमिरि पवनसुत पावन नामू अपने बस कर राखेउ रामू अपत अजामि ल राज गनकाऊ भए मुकत हरिनाम प्रभाऊ अथ प्रौढ़ोक्ति बरनन में अधिकाई अधिकार यथा काम कलभ कर भुजबल सींवां अथ संभावना ज्यों अयसा हो इ तो अयसा होय यथा जो छबि सुधापयोनिधि होई यह प्रसंग भर अथ मिथ्याधीसित झूठहिं कथै झूठी रीति यथा वारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल अथ ललित जो कहो चाहै ताही को प्रतिबिंब यथा पियतु मता हि जितब संग्रामा जाके दूत केर यह कामा अथ त्रिबिध प्रहर्षन बिनु जतन इच्छा फल होइ १ इच्छा तें अधिक फल बिना श्रम मिलै २ जा को जतन सी धे सो हाथ मिले प्रथम यथा चितवत पंथ रहेउं दिन राती अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती दूसरो यथा धरहु धीर होइहि सुत चारी त्रिभुवन बिदित भक्त भय हारी अथ तीसरो एहि बिधि मन बिचार कर राजा आइग एक पिसहित समाजा अथ बिषाद चितचाहे ते उलटा जो होय यथा लिखत सुधाकर गा लिखि राहू अथ उल्लास गुन औगुन और को और अ र यथा पर दुख दुख सुख सुख देखे पर अथ अवज्ञा और को गुन दोषन लगै यथा ऊषर बरषै तन नहिं जामा अथ लेस गुण में दोष देखै १ दोष में गुन देखै २ यथा मोहि दीन्ह सुख सुजस सुराजू कीन्ह कैकई सब कर काजू दूसरो यथा जो नहिं होत मोह अति मोही मिलतेउं तात कवन बिधि तोही अथ अनुज्ञा दोषे गुन माने यथा राम हि चितवसु रेस सुजाना गे तम श्राप परम हित माना अथ मुद्रा प्रस्तु त पद बिषै और अर्थ प्रकासै यथा पूछेउ गुनि न्ह रेख तिन्ह खांची भरत भुआल होहिं यह सांची अथ रत्नावली प्रस्तुत बिषै और नाम क्रम तें यथा बकु रिवच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात अथ तद्गुण आपनो गुन छोड़ और को लेइ यथा धूमौ तजे सहज करु आई॥ अगरु प्रसंग सुगंध बसाई अथ पूर्वरूप द्वि विध संगति को गुन लेइ तजि पुनः अपनो गुन लेइ १ जहां गुन न मिटै जतन हूं कियेतें २ प्रथम यथा

खलउवरहिंभलपाइ सुसंगू मिटइनमलिन सुभावअभंगू इसरो यथारा
कापतिषोडशउअहिं तारागनसगुदाय सकलगिरिन्हदवलाइअबिनु
रविरातिनजाय अथअतद्गुन आनके संगकुगुनलेइन आनको यथा
वायसपालहिं अतिअनुरागा होहिं निरामिषकबहुं कि कागा अथअन्य
गुनअपनोगुन औरके संगबढ़ावै यथा मज्जनफलदेखियततकाला
काकहोहिं पिक बकउमराला अथ मिलित समतातेदूजोन लखाइ यथा
बेनुहरितमनिमय सब कीन्हे सरलसपर्बपरहिंनहिचीन्हे अथसमानभि
न्नोरूपसैं बिसेषनपाइये यथा रामलषन सखि होहिं कि नाहीं अथउनमि
लतसादृश्यतेभेदकैसोखुले यथा बय बपुबरनरूप सोइ आली सील स
नेह सरिससमचाली बेपुनिसोसखिसीयनसंगा आगेचली अनीचतुरं
गा अथगूढ़ोक्ति अभिप्रायसेउतरदेय यथा अबकहु कुसल बालिकहंअ
हई बिहंसिवचन तवअंगदकहई दिनदसगरवालिपहंजाई बूझेउकुसल
सखाउरलाई अथप्रश्नोत्तर प्रश्नउत्तरजामेंहोय यथा कहदसकंठकवनतैंबंदर।
मैंरघुबीरदूतदसकंधर अथचित्रप्रश्नउत्तरएकपदमांहोय यथा कावरषा
जबकृषीसुखाने समयचूकिपुनिकापछताने अथसूक्ष्म कवनोभावते
मनकीबातजाने यथा सीतहिं सभयदेखिरघुराई कहाअनुज सन
सैन बुझाई अथपिहित छिपीबातबतायदेइ यथा अंगदनाम बालिकार
बेटा तासों कबहु कि भई हि भेटा अथव्याजोक्ति आकार छिपाय और बि
धि कहै यथा जिन्ह हिं बिरचि बड़ भएउ बिधाता महिमा अवधि रामपि
तुमाता अथगूढ़ोक्ति औरकेबहाने औरकोउपदेशकरै यथाबहुरि गौरि
कर ध्यान करेहू भूपकिशोर देखकिनलेहू अथ बिघ्नोक्ति श्लेष मोछि
पैको प्रकाश करै यथा प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि
आहि जो मृगपति वधि मंडुकनि भलकि कहै कोउताहि अथयुक्ति क्रिया
करिवरन छिपावै यथा बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी पियतनचितइ भौंह
करि बांकी खंजन मंजु तिरीछेन यननि निजपति कहेउ तिन्हहिं सिय सैननि
अथलोकोक्ति कछु वचनते प्रवाद लेइ यथा भासहिं दसमहनाथन आवा तोपुन
मोंहि जियतनहिं पावा वक्रोक्ति सधीबातमोंटेढ़ाभाव यथा मैं सुकु

मरनाथ बनजोगू तुम हिं उचिततपमोकहं भोगू अथ सुभावो निज हांसु
भाव बरनो जाइ भोजन करतचपल चितैइ तउत अवसर पाइ भागचले
किलकातमुख दधि ओदनलपटाय अथ भाविक भूत भविष्या दिज
हां प्रत्यक्ष लखाय यथा भय उनुग्रह इन अबहों निहारा भूपभरत
जसपिता तुम्हारा अथउदात अथलक्षन अधिकारी देसो भिये यथा
बालिन कबहुं गाल असमारा मिलतपसिन्ह तें भयउलबारा अथात्यु
क्ति बहुतबढाय के कहे यथा जो संप दानौबिगरह सोहा सो बिलो कि सु
रनाथ कमोहा अथनिरुक्ति जहांयोगतेंनाम को औरै अर्थकल्पयथानामतुमार
प्रताप दिनेश्वा सत्यकेतु तव पिता नरेश्वा अथ प्रतिषेध जहां निषेध को
बखाने यथा मुकुट नहीं हिं भूपगुन चारी अथ बिधि फेर कै अर्थ साधे
यथा वा को फल पावहुगे आगे बानर भालचपेटन लागे अथ हेतु द्विविध
कारज कारन एक संगे होइ कारन कारज बरु एके २ प्रथम यथा उ
यउ अरुन अवलोकहु ताता पंकज कोक लोक सुखदाता द्वितीय यथा स
कल अमानुष कारम तिहारे केवल कौसिक कृपा सुधारे इति अर्थालंकार
अथ संकर संसृष्टि एक छंद मों जहां बहुत अलंकार परै तिल तंदुल न्याय यथा
चलीं ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त
कुंजर गामिनी कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाज हीं मंजीर
नूपुर कलित किंकिनि ताल गति बर बाजहीं टी॰ कुंजर गामनी मों रूपक ध्यान
संगे मों आन्यो कि लाजहिं तीतरी प्रतीप अथ संकर दो तीन अलंकार मिलें तें छीर
नीर न्याय यथा जिनके जस प्रताप के आगे ससि मलीन रबि सीतल लागे टी॰
यामों यथा शेष प्रदीप को संकर हैं एक सुक अंगते समान हो प्रधान अरु कहूं
संदेह तें संकर को तीन प्रकार और अलंकार बहुत हैं बिस्तार काव्य के ग्रंथन
मों देखिलेंगे अथ कछु पिंगल यातें कि काव्य शरीर छंद रीति ही है अथ गुरु
लघु बिधि संयोगी के आदि गुरु यथा सत्य अरु बिसर्ग यथा कः अरु दी
र्घमात्रा बिंदुयुक्त यथा का की कू के को कौ कं अरु पाद अंत मों बिकल्प ए
पांचों बिधि गुरु अथ लघु मात्रा रहित लघु अरु इउ मात्रा लगे हूं लघु अरु का
हूं आदि संयोगी के लघु को लघु ही रहत है भार न परै तें जैसे नाम प्रेम पीयूष ह्रद इ यहि

द्वि अथ प्रस्तार मात्रावृत्त को मात्रावृत्त के गन पांच हैं टगन छ कल ठगन पांच कल डगन चारि कल ढगन तीन कल णगन है कल अथ प्रस्तार रीति मात्रा को नवमें गुरु के नीचे लघु बनावे पुनः सम पांति करै उबरै जो गुरु लघु तें पूरण करै सब लघु लों अथ पांचो मात्रा गन पंट कललों उदाहरण अथ बरण प्रस्तार रीति प्रथम गुर के तरे लघु धरै फिर अंत को पाती बराबर करै जो घटै तो गुरही ते पांति पूरन करै तब प्रस्तार को अंत जानै अरु बरन के प्रस्तार में बरन की गिंती होत है अरु मात्रा प्रस्तार में कला गनती युत मों ही भेद है यथा मात्रा वृत्त संख्या वरन

णगन२	ठगण३	डगन४	ढगन५	टगन६
ऽ	।ऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ·ऽ
।।	ऽ।	।।ऽ	।ऽ।ऽ	।।ऽऽ
	।।।	।ऽ।	।। ऽ।	।। ।ऽ
		ऽ।।	ऽऽ।	ऽ।।ऽ
		।। ।।	।। ऽ।	।। ।।।ऽ
			।ऽ ।।	। ऽऽ।
			ऽ। ।।	।। ।ऽ।
			।। ।।।	।। ।।ऽ।
				ऽ ऽ ।।
				।।ऽ ।।
				।ऽ।। ।
				ऽ।। ।।
				।। ।।

नल लघु ग गुर आयुध पंच कल तुरग चार कल करन है गुरु द्विज बर चारि लघु प्रिय है लघु धुज लघु गुर हार एक गुर दंड एक लघु बरन वृत्त गन नाम संज्ञा मनयभसुगन

वरण३रूप		गनदेव	फलगन
ऽऽऽ	मगन	भूमि	मंगल सुख
।ऽऽ	यगन	जल	बुद्धि वृद्धि
ऽ।ऽ	रगन	अग्नि	अंगदाह हानि
।।ऽ	सगन	पवन वा काल	उचाट मीचु
ऽऽ।	तगन	आकास	फल सुन्न
।ऽ।	जगन	भानु	रोग
ऽ।।	भगन	चंद	कीरति
।।।	नगन	नाग	बुद्धि सुख

रसज तकु गन अथ गन बिचार संज्ञा मगन नगन मित्र यगन भगन दास जगन तगन उदासीन रगन सगन शत्रु द्विगन फलाफल मित्र मित्र सिद्धि मित्र दास बिजय मित्र उदास गोत दुःख मित्र शत्रु प्रियनाश दास मित्र सिद्धि दास दास हानि दास उदास पीड़ा दास शत्रु हारि उदास मित्र अल्प फल उदास दास दुःख उदास उदास बिफल उदास शत्रु सुख हानि शत्रु मित्र फल सून्य शत्रु दास तियनाश शत्रु उदास संका शत्रु शत्रु फलाफल नाश इति गनागन अथ षट चरचा नदड्ढिष्टादि अथ मात्रा वृत्तिन टल क्षण जप कला में जितनो भेद पूछे ते तो कला कला लिखे ता पर दूनों अंक धरै जैसो एक है

तीन द्वै तीन पांच तीन पांच आठ रे सो क्रमतें पुनः पूछे अंक को अंत अंक मों घटाइ कै जो बचै रे जा को और अंक लिखियोंघटाइ कै ताके नीचे आगली कला ले कै गुरु करै जैसे सप्त कला मों दशमों भेद अस्मता को उत्तर यथा अथ मात्रा नदिष्ट लिखकर पूछे तापर दूनो अंक धरै लघु के मांथे पर अरु गुरु के ऊपर नीचे गुरु मांथे को अंक जोरि कै अंत के

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	ऽ		ऽ		।

॥ ऽऽ ।

अंक मों घटावै जो बचे सो भेद कहै यथा अथ मात्रा मेरु प्रयोजन जो जानो चाहै कि इतने के प्रस्तार मैं कै इक गुरु के दु गुरु के तिगुरु के परैंगे इत्यादि प्रश्न

१	२	३	८	२१
।	।	ऽ	ऽ	।
		५		१३

दशयों भेद

है तु मेरु है ताके लक्षण प्रथम द्वै द्वै कोठा बनावै बराबर तब अंत में कोठन मों एक अंक लिखि आवै अरु आदि कोठन मों एक एक कोठा बीच देइ कै एक एक अंक लिख आवै एक एक के खाली मों द्वै से गिनती लिखै तब जो खाली कोठा है ता मों अंक धरै या क्रम तें कि मांथे पर के अंक ताके मांथे को पर अंक लेइ कै दूनो जोरि भरि देइ ॥ पूरन अरु खंड मेरु की रचाइ बे मों भेद है अंक रीति एकै है अथ मात्रा मेरु रूप यथा अथ मात्रा पताका

प्रयोजन के प्रस्तार मैं इक गुरु द्विगुरु २ तिगुरादि को ये कोथे स्थान पर रहै ता हेतु है ताको लक्षन जे कला को पताका बनायो चाहै तेई कला को गेरु ४ को खंड अलग कर कै ताही संख्या ते कोठा बनावै तब ५ ८ प्रथमें आदिष्ट अंक की रीति ऊपर के कोठा भरि ६ १३ आवै तब अंत अंक अंत के कोठा को ताते ७ २१ एक एक घटा के घरे सो दु गुरु पंक्ति एक गुरु पंक्ति दुइ दुइ अंक ले

	१	१	
	२	१	

१	३	१
२	४	१

१	६	५	१
४	१०	६	१
गु०३	गु०२	गु०१	ल०

मों लिखे एही रीति तें जहां लौं चाहै अथ मात्रा रूप पताका यथा अथ मात्रा मर्कटी प्रयोजन जो पूछै इतने प्रस्तार मों कितने वृत्ति भेद मात्रा बरन लघु गुरु हैं ताके हेतु है ताके लक्षन छ पंक्ति कोठा खड़ा लिये पुन वृत्ति भेद मात्रा बरण लघु गुरु क्रम तें कोठा के बाहर लिखै पुनः आदि कोठन एक एक लिखि जा दु गुरु तिग सून्य लिखै फिर चौठाई वृत्ति कोठन मों दुइ आदि गनती अंक भरै

१	३	८
२	२१	१३
४	६	१६
६	७	१८
गु-३	१०	१९
	११	२०
	१२	
	१४	
	१५	
	१७	

२१ अरुभेदकोष्टनमें उदिष्ट अंक भरे पुनः दृतिभेद गुरुके मात्रा पंगतिमों भरे पुनः लघु पंक्ति में जो एक अंक है सो गुरु पंक्ति सून्य के आगे लिखे ताही को मात्रा पंक्ति में घटाय वाकाव रण कोठा में भरे सोई बरन पंक्ति में घटाय वा को लघुपंक्ति मों भरे पुनः ताही को गुरु पंक्ति में आन के घ लय यौं याहीरीति से जितनो चाहे तितनो बनावे अथ मात्रा मर्कटी समकालको य-

या अथ मात्रा सूची प्रयोजन जो पूछै प्रस्तार मों कि कितने भेद परल घु लघु गुरु अंत है ताके हेतु है ताके लक्षण जितने अंक परप्रस्ता रको अंत है ताके पाछे को अंत लघु अंत ताके पाछे को अंक गुरु अंत सूची यथा बरण वृति नष्ट पूछै की आधा करै सम आवे तो लघु ले

गुरु
आवै विषम आवे तौ
गुरु

१२ ३ ५ ८ १३ २१	
गु. अं. ल. अं.	

लि
खिफि

रिफि

एक मिलाय भागे रोस ही क्रमते करतौ यथा पांच बरण प्रस्तार व भेतेर हो न ष्ट अथ उदिष्ट बरण वृति को जो पूछै लिख के ता पर दूने दूने क्रमतें अंक धरै

वृति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
बरन	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१
गुर	०	१	२	५	१०	२	३८

१ २ ४ ८ १६ ३२ जैसे जो अंक लघु सिर पर होइ ता को जोरि के और

ऽऽ ॥ ऽ

एक मिलाइ के जितना होइ सोइ भेद जानो यथा बरण मेरु लक्षण प्रथम है कोठा पुनः चारि ऐसी रीति से बनावे तब आदि अंत के कोठन में एक एक अंक लिख आवे तब मांधे के अंक तें अंक जोरि जोरि के खाली कोठा भरे

				२	१	१	१
			४०	१	२	१	२
		८	१	३	३	५	३
	१६	१	४	६	४	१	४
३२	१	५	१०	१०	५	१	५
	गु.५	गु.४	गु.३	गु.२	गु.१ल.		

यथा अथ बरण पताका लक्षण प्रथम से उद्दिष्ट के समा वरण मेरु न अंक धरि आवे

१ २ ४ ८	१६
ऽ ऽ ॥	ऽ

पुनः पूरब के अंक लेइ के भरै पर अंक ते अरु आयो अंक न आवै अथ ब रण पताका यथा अथ बरण मर्कटी लक्षण छह कोठा बनावे आदि मों क्र मतें अंक एक द्वै तीन चारि इत्यादि दूसरे मों उदिष्ट रीति अरु पहले कोठा में दूसरे

नगुन करि कै

चौथे कोठा में भरै तब चौथे कोठा के आधा पंच एछठ स कोठा में लिखदेइ तब पांचये अरु चौथे कोठा तें जोरि कै तीसरा में अंक धरिदेइ यथा अथ वरणसूचीलक्षण जितनें अंक पर प्रस्तार को अंत होतहै ताके आधेपर गुरु अंत तितनोई लघु अंत है॥

	२	४	८	१६	३२
गु॰५	३	६	१२	२४	ल॰
	५	७	१४	२८	
यथा	९	१०	१५	३०	
धाक्ष	१७	११	२०	३१	
और		१३	२२		
गु४		१८	२३		
भई ध७		१९	२६		
लोगऔर		२१	२७		
अथछंद		२५	२९		
		गु३	गु३		

अथ दए आठ ह १ घ३ ग४ ख५ ङ७ र८ और कवि हूं धरेहे॥

छं॰	१	२	३	४	५	६	७
मे॰	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
मा॰	३	१३	३६	९६	२४	५७६	१३४४
व॰	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६
ल॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८
गु॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८

रीति। श्रीगोसांई तुलसीदासजू या रामायणमें १३ प्रकार के छंद कहे हैं तिनहीं कौं लक्षण लिखतुहैं तेरह छंद में नाना वृति के ६ प्रकार अरु बरण वृति के सात प्रकार अथ मात्रा वृति छंद लक्षण प्रथम दोहा लक्षण प्रथम तुक तेरह मात्रा को दूसरा ग्यारह ऐसेई पुनः तेरह ग्यारह करै तुक चार लैं यथा बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय बिशाल १ अरु दोहा के तेरह न में एक एक कला घटाये ते दोहा छंद होतहे अरु द्वै द्वै बढ़ावे तें दोहा होतहै यथा तात चरण गहि मांगो राखहु मोर दुलार सीता देहु राम कहँ अहित न होइ तुम्हार॥ अरु कहूं कहूं दोहा में कला एक घट बढ़ होतुहै पाद

	गु॰ अं॰	
१२४८	१६	३२
	लघु॰ अं॰	

अंत बिकल्प करि घट यथा सुनत बिनीत बचन अति कह कृपालु मुसकाइ जेहि बिधि उतरे कपि कटक तात सो करहु उपाय अथ बर यथा रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥ अथ सोरठा लक्षण॥ दोहा को उलटो पढै ग्यारह तेरह करि सोरठा होतुहै यथा भरत कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि बचन अमिय जनु बोरि॥ ॥ ॥

देतउचितउत्तर सबहिं २ अथ रूप चौपाई लक्षन रूप चौपाई सोरह १६ कला की यात्रा ॥ जबतें राम व्याह घर आये नित नव मंगल मोद बधाये ताही में बिद्युन्माला चंपक माला पादाकुलिक भ्रमर बिलसतादि सब हो तुहें एक घटाय पंद्रह १५ मात्रा की में आदि चौपई हंसी उज्जलादि नाम होत हैं एक बढ़ाय १७ सत्रह की में धारी वालादि नाम होत है २ अथ त्रिभंगी छंद लक्षण प्रथम यथा दस मात्रा पर बिश्राम फेर आठ पर पुनः छःमात्रा पर यथा पर सत पद पावन १० सोक नसावन ८ प्रगट भई तप ८ पुंज तही ६। ५। अथ चौपई या छंद लक्षण दश मात्रा प्रथम पुनः आठ पुनः बारह सब कला ३० यथा भये प्रगट कृपाला १० परम दयाला ८ कौसल्या हितकारी १२ इत्यादि अथ हरिगीत छंद लक्षण अंत गुरु सब मिलि मात्रा अट्ठाईस २८ को यथा मन जाहि ५ राचौ मिलिहि ७ सो बर ४ सहज ३ सुंदर ४ सांवरो ५। ६। इत्यादि अथ वरण छंद लक्षण अथ मगन स्वरूप नी आठ अक्षर लघु गुरु नमते यथा नमामि भक्त बत्सलं कृपाल सील कोम लं १ इत्यादि अथ तोमर छंद लक्षण सगन एक जगन द्वै नव अक्षर को रूप ॥ ऽ। ऽ। ऽ। यथा स हिमा उदार अपार २ इत्यादि ॥ अथ तोटक छंद लक्षे ण चारि सगन बारह अक्षर को ॥ ऽ। ऽ। ऽ। ऽ यथा जयराम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे ३ अथ भुजंग प्रयात लक्षन ॥ चारि सगन बारह अक्षर को ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यथा नमामी शमीशान निर्वाण रूपं। बिभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥ अथ अनुष्टुप् लक्षण ॥ पंच वा बरण लघु चारों चरण में छठयां गुरु सत मों लघु नेम दूसरो चौथे चरण मों पहले तीसरे चरण मों सतयां गुरु अक्षर आठ यथा योददाति सतां शंभुः कैवल्यम पि दुर्लभं खलानां दंडकृद्योसौ शंकरः शंतनोतु मे ५ अथ शार्दूलबिक्री डित लक्षण प्रथम मगन सगन जगन सगन तगन द्वै अंत मों अंत एक गुरु अक्षर १९ को ऽऽऽ॥ऽ।ऽ। ऽऽ। ऽऽ।ऽ यथा शांतं शाश्वतमप्रमेयम नघं गीर्वाणशांतिप्रदं ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुं ॥ रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं बंदेहं करुणाकरं ९

रघुबरंभूपालनमणिं १ अथबसंततिलकलक्षण तगन भगन जगन है गुरु हैं तमों अक्षर चौदह ऽऽ।ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽऽ यथानानास्ट हा रघुपते हृदये सत्यं बदामि च भवानखिलांतरात्मा ७ इत्यादि इतिपिंगलत ॥ अथचित्र ॥ चित्रको भेद बहुत है कछु या रामायण के भेद चित्र उदाहरन देखअतु हैं॥ चित्रमें प्रथम मनिरोष्टजामें ओष्ट न लगे यथा अगज जीवनागनर देवानाथ सकलजगकालकलेवा अथ अंतरलापिकाजको अर्थ छंद के भीतर ही निकरै यथा छप्पै कहगनपतपितु नाग दे ल अर्पित का कहिये सज्जन को काकहत कौनहिय आनंद रहिये कौन चरित सुखदेइ कहांते सरजू आई छंद बद्ध कोकरत रानजसभाषागाई यामें यह चौपाई निकसतु है संभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी रामचरितमानसकवितुलसी इति इति अंतर लापिका अथ बहिर्लापिका जो अर्थ वाहर ते आवे यथा कह्यो नाम विपरीत कौ जामें भयो प्रसिद्ध सो अनादि सम ह्वैगयो जान लेउ करि सिद्ध यामें यह चौपाई उलटा नाम जपत जग जाना वालमीक भए ब्रह्म समाना अथ चित्र अश्वगति चक्र नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शील कोमलं भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं अथ सीप बंध अरुन पराग जलज भरि नीके ससिहिं भूष अहि लोभ अमीके॥

न	मा	मि	भ	क्त	व	त्स	लं
कृ	पा	लु	शी	ल	को	म	लं
भ	जा	मि	ते	प	दां	बु	जं
अ	का	मि	नां	स्व	धा	म	दं

अथनालबंध
अथत्रिशूलबंध
भवभव
विभवप
राभवका
रिनि
नागबंध
बंदौपवनकुमारखलबन
पावक ज्ञान घन। जासुहृदै
आगार बसहिं राम सर
चाप धर॥

इतिछत्रबंध
आगेचलेबहुरिरघुराया
रिष्यमूकपर्वतनियराया

मा·दी· टी·५२॥
इतिकिरीटबंध
भरत कमल कर जोरि धरम धुरन्धर धीर धरि बचन अमियजनु बोरत
उचित उत्तर सबहिं
जगकारन तारन भव भंजन धरनी भार॥
की तुम अखिल भुवनपति लीन्ह मनुज अवतार।
इति मयूरबंध
इति मानसदीपिकायां काव्य अंग वर्णन तृतीयो प्रकाश: ॥ ३॥
अब आगे पर्यायकील रहे हो सिये पर टीका लिखी जायगी ॥
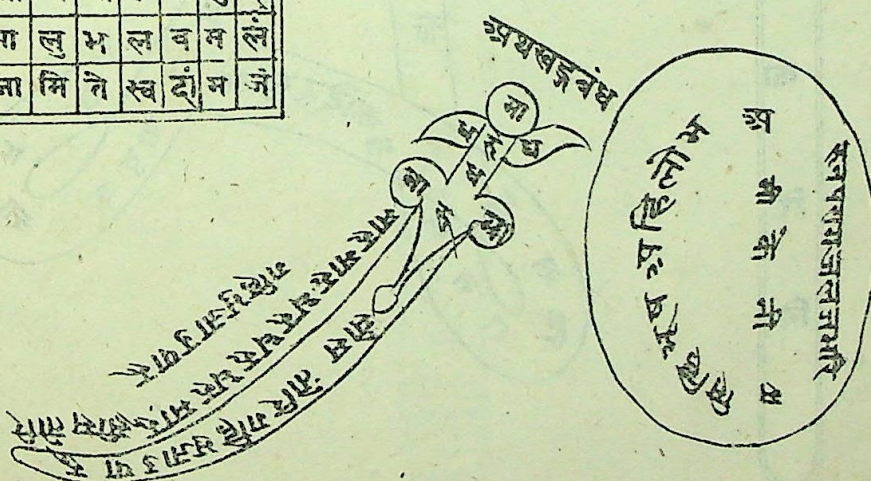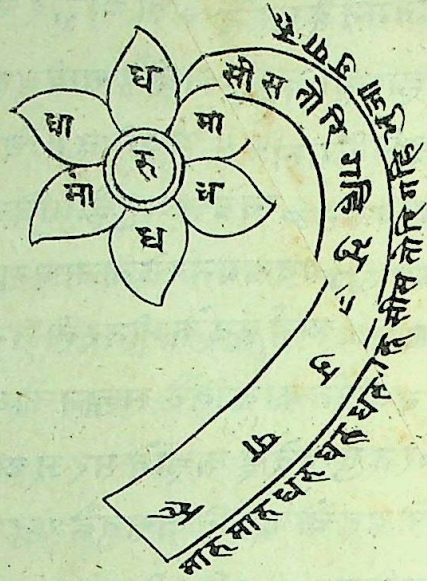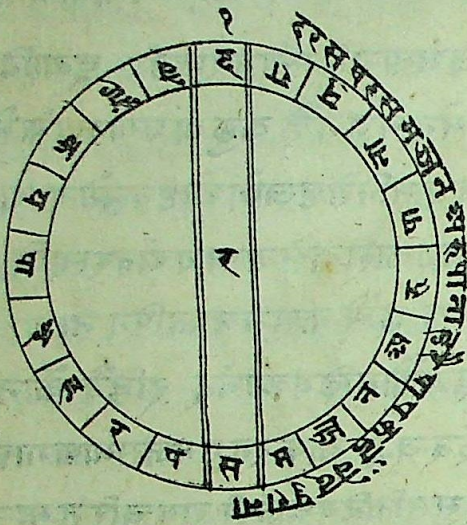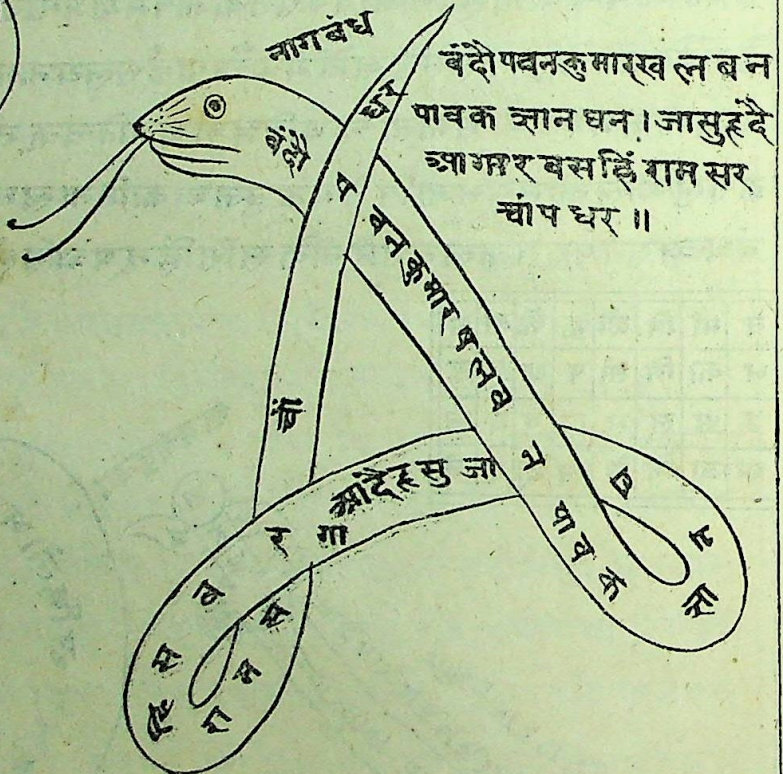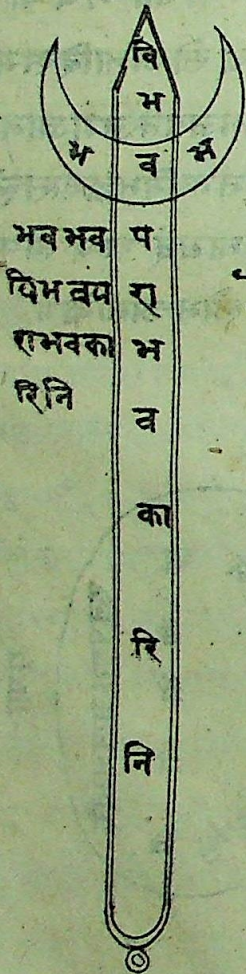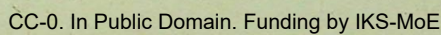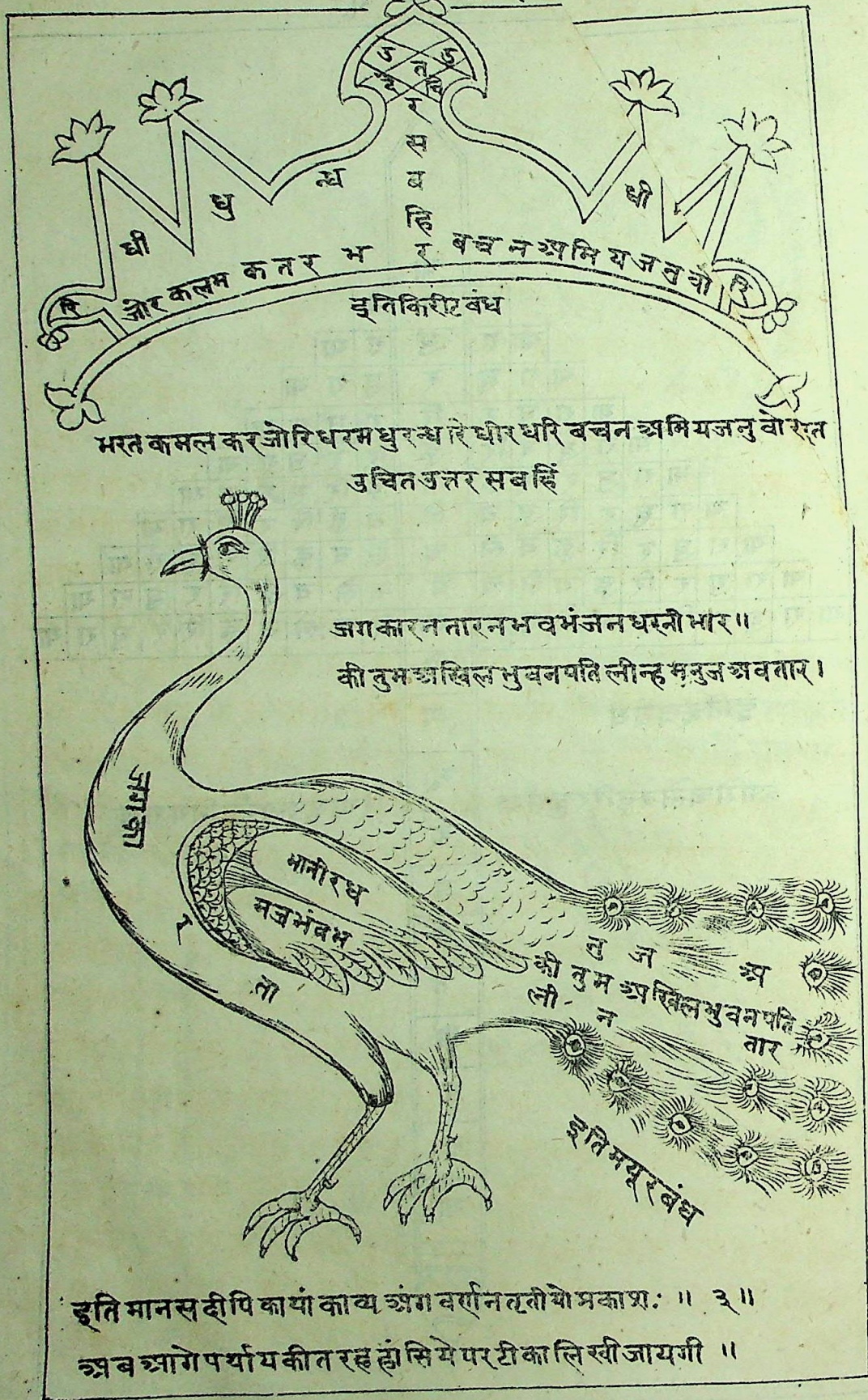
अथ शंकावली

श्रीजानकी बल्लभो विजयते । ए गोसांई जी की रामायण बिचार तें सर्ब शंका रहित है जाते पूर्ब परल गाए तें इसी ग्रंथ में समाधान बाहुल्य ते मिलत है परंतु इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है यातें बहुत लोग शंका करत हैं तातें कछु लिखत हैं शंका भाषा बद्ध करब मैं सोई प्रतिज्ञा तें बिरुद्ध कांड के आदि संस्कृत कवि काहि लिखे॰ उत्तर। देव बानी अति मंगल रूप जानके वा भाषा के खद्दलक्षन में संस्कृत हू चाहिये १ सं॰ निज इष्टदेव त्यागि प्रथम गणेश बंदना किए उ॰ गणेश का प्रथम पूजन सर्ब सम्मत वा प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं॰ गोसांई जू अनन्य द्विभुज रघुबर उपासक नारायण जू को उर में बास ए काहे को उ॰ दोऊ का अभेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्रीकंता ३ सं॰ माया जीव ब्रह्म जगदीशा ये सब अनादि हैं बिधि ने कैसे बनाये उ॰ उपजाने में तात्पर्य नहीं है गुण औगुण का प्रकरण है वा प्रार्थना तें बिधि ने उपजाये प्रमा॰ जय जय सुर नायक इत्यादि प्रार्थना और तुमहिं लागि धरि हौं नरबेषा ४ सं॰ पूर्ब अनेक बंदना करि आये अब बंदौं प्रथम मही सुर चरणा यह कैसे बने उ॰ चारों वर्ण में प्रथम कही आदि ब्राह्मण ५ सं॰ बंदौं प्रथम भरत के चरण कैसे बने उ॰ तीनों भाइन में प्रथम भरत वा श्रीराम भक्तन में मुख्य ६ सं॰ नाम बंदना में चाप भंग मे कहि दंडकबन पावन कहा यामें कांड क्रम भंग दोष होत है उ॰ बिवाहादि शेष बालकांड चरित्र चाप भंग अंतर गत है प्र॰ टूटत ही धनु भयो बिवाहू इत्यादि औ समग्र अयोध्याकांड आधा आरण्य दंडक वन पावन में गतार्थ है प्र॰ मुनि गण मिलन बिशेषबन इत्यादि वा सप्त कांड में तात्पर्य नाहीं किंतु वाके प्रतापादि बर्णन में है ७ सं॰ गोसांई जी कहूं कबित होइ कहत हैं कहीं कवि तुलसी यामें काहेतु उ॰ कबित होइ निज दीनता में कवि शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी इत्यादि ८ सं॰ अघ तो प्रसिद्ध है बिन अघ तजी सती यह कैसे उ॰ इहां अघ शब्द दुःख बाचक है सती त्याग में शिव जू के कछु दुःख

वर्णन भयो दुःखी भयउं वियोग प्रभु तोरे यह भक्ति विरह तें कहे पत्नी भाव ते नहीं १८ सं॰ प्रजा सहित रघुबंश मणि निज धाम गये यह प्रश्न के उत्तर न दिये सो क्या उ॰ उपासकन के नित्त अवध बिहार सम्मत है तातें बक्ता मौन रहे वा उत्तर में गुप्त उत्तर दियो। गये जहां शीतल अमराई बाग से फिर गृह आगमन लिखे १० सं॰ जो प्रभु मैं नहीं पूछौ सोभी कहना सो शिवजू कहा कहे उ॰ औरों एक कहों निज चोरी इत्यादि ११ सं॰ सती मोह तो आरण्य कांड में भयो फूल बाटिका में गिरिजा नाम से पूजन कैसे करे उ॰ देवता अनादि हैं इन में सब नाम सदा प्रसिद्ध हैं प्र॰ गुरु अनादि जिय जानि १२ शं॰ निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका उभय घरी में रात दिन कैसे बने उ॰ कोक निश ही में भोग करने लगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको पुर्ष का दुखी यह निज पत्नी संबंध के मर्यादा न रही १३ शं॰ काम की चढ़ाई तो संकर के विजय हेत है विश्व विजय गाये सो काहेतु उ॰ विश्व विजयी काम के संहार से शंकर के अति बड़ाई में तात्पर्य है १४ शं॰ मनुसत रूपा के बरदान समय में युगल प्रगटे बरदान राघव दियो किसोरी जी न बोली सो क्याहेतु उ॰ दोनों का अभेद है प्र॰ देखत भिन्नन भिन्न १५ शं॰ भानुप्रताप धर्मात्मा ज्ञानी सो श्राप तें राक्षस भयो यामें क्या हेत। जीव के प्रारब्ध कर्म मुख्य हैं प्र॰ तुलसीजस भव तव्यता इत्यादि १६ शं॰ रावण के बरदान में बानर मनुज दुई और मरो एक मनुज राघव हाथ से दूसर बर का क्या हेत उ॰ रावण बध में राम जू प्र॰ आपन बध मानव करबाची हंस्यो राक्षस बध में ये दोऊ भिन्न भिन्न कारण हैं १७ शं॰ जन्म एक दुइ ए तीन कल्प की कथा पहिले शिव जू कहे चतुर्थ कल्प के प्रसंग में मन प्रकरण तें आकाश बानी तें कहे कश्यप अदिति महा तप कीन्हा पुनः नारद बचन सत्य सब करिहौं यह पूर्ब कल्प के कथा इहां कहां ते आई उ॰ भेद से इहां। व्यवस्था प्र॰ कल्प भेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनीसन गाये इत्यादि १८ शं॰ श्रीरामादि चारों भाइन्ह के नाम करण में क्रम भंग है उ॰ इहां पाठ क्रम तें अर्थ क्रम बली है वा राम तापनी मांडूकोपनिषद में क्रम विपर्य यहै बाल लक्ष्मण के बिशेष गुण कहिने थे यातें भरत के लिखे नहीं सत्रुघुन की आड़ से लिखे १९ शं॰ माता को पै ले अलौकिक विवेक दिए रहे अब सो भूली ए बिश्वरूप दिखाये या में क्या हेतु उ॰ वात्सल्य की अधिकता से माता भूली प्रभु विश्वरूप दिखाइ के पूर्व विवेक दृढ़ कराइन्ह २० शं॰ बिश्वामित्र पहिले ही जानते रहे तव ऋषि निज नाथ चीन्हे यह कैसे बने उ॰ राह में ऋषि

बाल बिनोद देखि भूले ताड़का बध से पुनः ईश्वर जाने प्र. गीतावली प्रगट च
रित सुहाये इत्यादि २१ सं ऋषि दोऊ भाइन्ह को यज्ञ रक्षा हेतु ल्याये राजाज्ञा
बिना मिथिला को क्यों ले गये उ. अब मुनि ही पिता हैं प्र. राजा बचन तुम मु
नि पिता आन नहि कोई २२ शं. मिथलेश जू प्रथमही बिश्वामित्र से राम प्रता
प जाने रहे तब सभा में अनादर बचन सब के साथ क्यों कहे उ. राम रूप मोह
नी तें जनक जू राघव का ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है २३ शं. सीय
स्वयंबर देखिय जाई यह नाहीं बनत जाते शिवा जू स्वतंत्र बर नाहीं बरा उ. स्व
यंबर दुइ विध है प्रन स्वयंबर द्रोपदी आदिका स्वतः स्वयं बर द्रोपदी दमयंती
आदि २४ शं. जनक बाम दिशि सोह सुनैना और स्मृति में अरु लोक में द
क्षिण दिशि पाइयतु है सो क्या हेतु उ. वाम कही शिव शिव कही कल्याण दि
शि अर्थ तें कल्याण दिशि आवत है वा जनक की वाम पत्नी सुनैना सोह
दिशि दक्षिण दिशि अथवा जनक है वाम दिशा जेहि के ऐसी सुनैना २५ शं.
जब ते राम व्याहि घर आये तब तें अयोध्या में सब आनंद बसे तो आगे क्या
आनंद नहीं है उ. आल्हादनी शक्ति सीता जू ने हि तें आनंद पूर्ण भयो यह भाव है २६

इति संक्षेप तें बालकांड शंकावली

अयोध्याकांड शंकावली शं. पूर्व बाल कांड मैं श्री श्रीगुरु पद रज तें बिवेक ने
त्र बिमल करे पुन इहां निज मन मुकुर सुधार काहे लिखे उ. भरत महिमा वर्णन
अति अगम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह॰ प्र॰ भरत परम महिमा सुनि रानी
जानहिं राम न सकहिं बखानी। अयोध्या कांड में मुख्य भरत चरित्र प्र. भरत
चरित करि नेम इत्यादि वा महाराज दशरथ आदि सबका मनोरथ भंग इस का
ंडमें बिचार रजते सो कमल दूर कीन्ह २७ शं. दशरथ जू राम जू को बिश्वा-
मित्र साथ भेजे तब तनु त्याग न करे बन यात्रा में कीन्ह सो क्या हेतु उ. बिश्वा
मित्र के साथ गये तहां बशिष्ठ जू बचन ते संदेह नाश और मुनि सहायक
और ऋषि तनु के नृप निज प्राण धारण करि बचे प्र. तुम मुनि पिता आन
नहिं कोऊ पुनः सुत उर लाइ मृतक जनु भेंटे बन में सब बिपरीत तेहि तें तनु
त्याग २८ शं. श्रीजानकी जू बन यात्रा समय में सेवा करै को कहा और
ग्रंथकार सेवा न लिखे सो क्या हेतु पिता बचन में तात्पर्य प्राणपति के सा
थ जाने को है वा प्रत्यक्ष सेवा भी लिखे बट छाया बेदका सुहाई इ
त्यादि २९ शं. राम जू के कैकेई बरदान तो तापस बेष बिशेष उदा

सी हैं तो धनुषबाण धारनो रथ चढ़िवो मृगया आदि कैसे बनेउ· कैकेई का बरदान व्याज भरि है अवतारि धरि स्वतंत्र लीला करिवो मुख्य रामज नम जग मंगल हेतू वा मुनि व्रत औ स्वधर्म दूनो निवाहे ३ शं· प्रयागवा सी भरत की बड़ाई करत हैं राम गुण ग्राम सुनि वो कैसे उ· निज बड़ाई सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण रससुरत हैं वा बेनी के फूल में हरिकथा से राम गुण ग्राम सुनत चले ३१ शं· भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और सब राम प्रेमी मुनि चारेक बटु संग दिये में का हेतु उ· सीता रामादि चारि बटु भी वा चार सब ते अधिक सुकृती चार वा चार बेद यथारथमरग ज्ञाता ३३ शं· श्रीराघव का शिव पूजन अयोध्या औ लंका में लिये और में नाहीं सो क्या हेतु उ· श्रीराघव जू के कुल देव रंग जू हैं और संकट में आराध्य शंकर जू या मे अनेक प्रमाण एही प्रथम में बाल उत्तर में संकट है नहीं आरण्यादि में सीता विरह सों राम जू बिकल ३३ शं· श्रीराघव के बन यात्रा में पग में फूल का न लगाये भरत के कहे सो क्या हेतु उ· राम गवन पर्यंत है औ बसंत ऋतु भरत के यात्रा ग्रीषम में और बिरह संताप तें ३४ शं· भरद्वाज भरत के पहु नाई में ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु उ· भरत के बैराग्य की परीक्षा अर्थ यथा रथ भई प्र· मुनि आयसु खेलवार ३५ शं· भरद्वाज से भरत की भेट गाये महा मुनि बालमीक सो नाहीं सो क्या हेतु उ· भरत जी बिरही हैं राम दरशन में अति त्वरा है भरद्वाज पहुनाई वत कदाचित बिघ्न करे तातें कवि भेट न गाये ३६ निषाद राज तो यमुना तीरही सें फिरा भरत यात्रा में देखावत हैं कि ये पय सरित समीप रघुबर परण कुटी है तो ए कहां तें जान्यो उ· निषा द फिरो तो बीचही ते ये बर्ष भर के भीतर कैक बार गयो वा सेवकन द्वारा प्रति दिन की खबर लगाये रह्यो राम जू के भरतागमन को पै ले बिचार पुनः निश्चय है खलन के बल हृदय खभारे लखे या में क्या हेत उ· लक्ष्मण राम प्रेमांध हैं राघव का कलेश नाहीं सह सकत प्र· मातु पिता नहिं जानउं काहू ३७ ॥ इति अयोध्याकांड शंकावली ॥ अथ आरण्य शंका लक्ष्मण जू प्रथम निषाद को ज्ञान बैराग्य भक्ति उपदेश कीन्ह फिर राम जू से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु उ· सब बात के ज्ञाताभी बड़ेन को प्रश्न करते हैं वा आगे रघुपति ललित नर लीला करेंगे सब बात पूछ राखें तातें मो ह न होय ३८ शं· सूर्पनखा तो परम सुंदरी बन के गई लक्ष्मण जू रिपु

भगनी कैसे जानी उ॰ अगस्त के बचन सें वा सूपनखा के बचन तें तीन लोक में खोजेउं नाहीं मिला तातें अबलगि कुआरी रही इत्यादि बचन ४० राम जू सूपनखा ने लक्षमण को कुंवारे कहे ए नो विवाहे हैं उ॰ हास्यरस और विवाह राजनीति आदि नें कूठ का दोष नहीं कुमार अवस्था ४१ शं॰ काम लो आदि कोई रीति सों जीव सन्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तो सूपनखा कैसे कर त्यागी बिरूप करि उ॰ सीता विरोधनी अति वृद्धा शत्रु भगनी रही ४२ शं॰ मारीच तो कपट मृग रहा ताको चर्म राम जू कैसे ल्याये उ॰ प्रभु सत्य संकल्प हैं तातें मृगै तन रहा प्र॰ रामकीन्ह चाहैं सो होई ४३ शं मृगछाला लाये कि नाहीं यह कुछ कवि न लिखे सो क्या हेतु उ॰ जेहि प्रिया के अर्थ चर्म ल्याये सो चोरी गई तातें कवि चर्म ग्रंथ में प्रगट न कहे अवसर पाइ के कहे प्र॰ तापस रुचिर सुदल मृगछाला ४४ शं॰ रावण तो मन में अनुमान कीन्ह गीधराज सुनत धायो यह कैसे बने उ॰ सुनत पद में रावण कछु कटु बचन कहे यह जानब। ४५ शं॰ राम जू गीधराज से कहे कि सीताहरण पिता सों न कहिना जो मैं राम तो कुल सहित रावण कहै गो यामें क्या हेतु उ॰ सीता हरण सों पिता के स्वर्गों में अति दुःख होइ गो रावण तो मेरे पर कहै गो तातें सीता प्राप्ति शत्रु बध आदि से अति सुख होइगो ४६ शं सेवरी को राम जू न बधा भक्ति कहे सो भागवत आदि ग्रंथ से विरुद्ध है उ॰ यह ग्रंथ नाना पुराण गम निगम है ॥४७॥ इति आरण्यशं॰

अथ किष्किंधा शंका॥ हनूमान बिप्र रूप धरि क्षत्री को राम को माथ नायो सो क्या हेतु उ॰ राम तेज न सहि सके वा नेत्र मुख द्वारा कपट लखि परै गो तातें माथ नीचे कीन्ह ४ शं॰ लक्षमण तें दूना प्रिय हनूमान को काहे कहे उ॰ लोक रीति सों कि हमारे माणहू तें तुम अधिक हो वा कपि के बल दुख में सहायक है लषण सुख दुख में वा लषण राम के सेवक हैं ए दोनों के सेवक वा लषण द्वारा प्रिया बियोग इन द्वारा प्राप्ति शं॰ महाबीर ने ए प्रभु कैसे पहिचाने ऊ॰ दशरथ के जाये इत्यादि बचन तें ये बड़े पंडित हैं ५ शं॰ राघव अरु सुग्रीव अनेक देव छाड़ कै पावक साखी क्यों दिये उ॰ मित्रता बचन द्वारा वागिंद्रिय को देवता अग्नि वा शुद्धता औ सपथ अरु साक्षी यों अग्नि मुख्य प्र॰ तो कृशानु सब के गति जाना। ५। शं॰ राघव एक रूप दोऊ भाइन्ह के कहे निज में भ्रम

सो माला मेली ए सब में क्या हेतु उ· नरनाट्य में सब बनत है ५२ शं· रा
म जू प्रथम बाली बध के एक बाण से प्रतिज्ञा कीन्ह फिर दूसर बाण चढ़ाये
सो क्या हेतु उ· बानर राज बाली जेहि के सहायक निवारणार्थ बाण की अ
मोघता राम संकल्प के अधीन ५३ शं· राम जू सर तान के बाल के हृदय मर्म
स्थान में मारयौ जलदी न मरयौ सो क्या हेतु उ· राम रूप दर्शन संभाषण अं
गद सों पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ शं· जेहि शायक तें में बाली मारा
तेहि बाण ते मैं काहू मूढ़ को हतों या में सत्य प्रतिज्ञा और शरणागत
पालत्व कैसे बने उ· वोही दिन सुग्रीव आय आय मिले ५५ शं· और
दिशा में छोटे बानर सात समुद्र पार गये दक्षिण में सब सुभट तहां निज
निज बल कहे अंगद आइ वे में संशय कहा सो क्या हेतु उ· अति बली रा
वण को भय वा गुप्त मुद्रिका देन आदि हनूमान को जानत हैं इति किष्किंधा
शंकावली ॥ अथ सुंदर शंका ॥ महाबीर अशोक बाटिका में सीता रह
व संपाती से सुना रहा महल में खोजे काहे गये उ· अशोक बाटिका इन्ह
की नहीं जानी याते बिभीषण कहे गे ५७ महाबीर के लंका जात पुर्ष बा
धक न मिले तीन स्त्री ए मिली सो क्या हेतु उ· भव सागर के पार जात मुमु
क्षू के तीनो लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की बासनी सिंहि
का मृत्यु लोक के लंकिनी ५८ गयो दशानन मंदिर माहीं इह आना के एक
एक शिर याके दश क्यों भये उ· ब्रह्म बिचार कीन्ह बिद्या १४ हमारे मुख
चार दश विद्या के अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव मुरारी नाटक में वा परमार्थ
रामायण में रावण मोह रूप है दश इंद्रिय आनन है ५९ शं· राम लक्ष्मण
ण तो राक्षसी माया ते बन गये और माया ते अस रचि नहिं जाइ यह कैसे
उ· सुंदरी में राम नाम है नाम कूनो ब्रह्म ते बड़ा है ६० शं· सुग्रीव को बाल बध
करि राज दीन्ह और बिभीषण को रावण जीवत तिलक सारे या में क्या हेतु उ·
सीता जी के धैर्य अर्थ वा जीवत शव सम चोदह प्राणी वा निशाचर हीन करौं
महीं या प्रतिज्ञा ते ६१ शं· समुद्र राम दूत के तो मैनाक द्वारा सेवा कीन्ह और राम
के तीन दिन बीते न आयो न सेवा या में क्या हेतु उ· दूत का पराक्रम देखा और राम
के नरनाट्य बचन ते भ्रम भयो वा साठ हजार उत्तर तट वासी आभीरों के बध में
तात्पर्य है। ६२। इति सुंदर कांड शंकावली। अथ लंका कांड शंका। समुद्र
के यह पार शंभु थापना में क्या हेतु। उत्तर सबै तीर्थ में समुद्र औ अष्ट बैकुंठ

अंतर्गत द्रविड़ देश जान कै वा रावण शंभु भक्त है शंभु के एहि पार राख जाते उस्का पक्ष करैं ६३ शं॰ पहले सेतु के हेतु तीन कहे जलधि १ नलनील २ राघव ३ सेतु बांधे पर श्रीरघुबीर प्रताप तें पाषाण तरे सो क्या हेतु उ॰ और उपाय साधारण मुख्य हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर वा मारत लरत सुभट विजय मालिक राजा ६४ शं॰ सेतु बांधकै फेर तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु उ॰ भव सागर पार के तीन मार्ग कर्म ज्ञान उपासना ३ जलचर कर्म मार्ग आकाश निरालंब ज्ञा॰ सेतु सम उपासना शं॰ सुबेल पर राम जू के सयन औ सिथलता कहे और रावण के नृत्यादि औ राजश्री सो क्या हेतु उ॰ राघव बिरही वह राज श्रीयुत वा राम जू दैवी संपति युत शांत आसुरी संपति वालो वह चंचल वा राम के रावण कुछ माल नहीं जग महं सखा निसा वा छिपाइ कै श्रीराम कहे सो चंद्र बर्णन औ छत्र भंग से अस्पष्ट ६६ शं॰ फिरैं राम सीता मैं हारी सीता हारने वारे कौन उ॰ राम निंदा सुनि रोष तें साहस वा राम प्रताप समुझ के ६७ शं॰ लक्ष्मण के प्रथम शक्ति लगी तब बड़ो दुख बड़ो उपाय दूसरी शक्ति में कछु नाहीं या में हेतु उ॰ प्रथम में नरनाट्य दूसरे में ईश्वरता बालपन की भूमि औ दीनता यथा संख्य ६८ शं॰ महाबीर राम कार्य के अर्थ औषधी लेने चले तहां अनेक दुःख पाये मरते बचे सो का हेतु उ॰ स्वामी के आगे बल भाषि अभिमान तें चले ६९ शं॰ माया सर में मकरी कहां रही उ॰ सर तो पूर्व को रह्यो रचना बिशेष माया तें एही हेतु मूल में बर पद दीन्ह प्र॰ सर मंदर बर बाग बनावा ७० शं॰ राघव लषण को सहोदर कहे पुनः निज जननी के एक कुमार कहे यह कैसे बने उ॰ सहोदर प्रताप तें प्र॰ प्रभु प्रलाप सुनि कान बानर तें वा पिता संबंध तें वा कौशिल्या उदर में लषण भी प्रथम रहे बल देवकी नाईं प्र॰ शेष उपनिषद एक कुमार एक पद से मुख्य ७१ शं॰ बिभीषण राम शरण भये पर कुंभकरण के पांय जाइ परे सो क्या हेतु उ॰ भेद करि मिलावै सो अर्थ वा निज वृत्तांत कहि शुद्धता अर्थ ७२ शं॰ अंगद हनूमान सुभट शिरोमणि सो मेघनाद के कोप के मारे वा को धावन औ मरे न तब फिर चले औ कुंभकरण रावण १ मुष्टिका से भूमि में गिरे या में क्या हेतु उत्तर एके ओर को बिजय कहे तो रण शोभा नहीं होय वा मेघनाद के उत्कर्ष तें लषण के उत्कर्ष में तात्पर्य ७३ शं॰ रावण कुंभकरण के बाण द्वारा लंका में पठायो औ मेघनाद के हनूमान लंका द्वार पर धर आये सो क्या हेतु उ॰ लषण के मेघनाद सम शत कोटि योधा न उठाए और मेघनाद को एके दास हनूमान उठाय लंका द्वार पर धरे यह

उत्कर्ष ७४ शं. बिज्ञानी बिभीषण समर में बिकल होइ कै रथकी इच्छा करी सो क्या हेतु उ. नर नाट्य देख भूले रहे राम जू परमारथ उपदेश तें पुनः सावधान कीन्ह जैसे अर्जुन प्रति गीता ७५ शं. शिव जू आरण्ये ते ८७ हजार बर्ष समाध में रहे हम हूं उमा रण चरित्र देखे यह कैसे बने उ. ईश्वर अनेक रूप तें समर्थ ७६ शं. प्रतिज्ञा तो प्रति बिंव कै ताको जरिवो कहे तो पतिव्रत कैसे बने उ. सत्य सीता कै प्रगटै में तात्पर्य प्रति बिंव को बिंवमें लय ७७ शं. बिभीषण पुष्पक कुवेर को न दियो राघव को दियो सो क्या उ. बर्ष १४ मे थोरिक दिन बाकी रहे भरत देखवे की अति जलदी जानी पुनः राघव कुवेर को दिये ॥ इति लंका शंकाव.

अथ उत्तर शंकावली ॥ पहले महावीर के बचन सुनि भरत बोले नहीं दूसरे बचन में बोले सो क्या उ. दूसरे में बिशेष रिपु रण जीत सीता अनुज सहित प्रभु आवत पहले में यह नाही ७८ शं. जिन्ह कपिन्ह को निज देह गेह आदि सों अधिक प्रिय कहे ते बिदा किये जे सामान्य प्रिय कहे ते राम जू समीप राखे यह कैसे उ. नीति बिचार तें वा प्रीत मुख्य चाहिये दूर समीप ब्यौहार गौण ८० शं. दुई सुत सीता जाये पुनः दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे और राम जी को नाम न लीन्ह सो क्या उ. भरतादि के पुत्र अयोध्या में भये तेहि तें नातें पिता नाम तें ख्यात सीता के पुत्र वाल्मीकि आश्रम में नैहर के पुत्र भये तें कंन्या नामसे फलानी के बेटा भयो है सुनि के सीता जू में कन्या भाव गीतावली में प्रसिद्द ८१ शं. अंगद अनेक भांति दीनता भाषे कृपाल राघव पास में न राखे सो क्या उ. राज गादी इन की परंपरा भ्रष्ट न होवे ८२ शं. शंकर जू भुशुंडी से कथा प्रत्यक्ष रूप तें न सुने मराल तनु से सुने सो क्याहेतु उ. सब श्रोता मराल देखे वा गुप्त रूपतें कथा स्वाद अधिक वा शंकर भुशुंडी आचार्य हैं प्रगट में संकोच वा सत असत का निर्णय मराल सों ८३ शं. गरुड़ जू भुशुंडी प्रति कहे महा प्रलय में भी तुमारो नास नाहीं सो कैसे उ. लोमस बरदान तें प्र. काम रूप इच्छा मरण इत्यादि कबहूं काल न व्यापिहि तोही यह श्रीराघव बरदान वा उपासना मत में भगवत भागवतादि सब नित्य ८४ शं. राम उदर में भुशुंडी के अनेक कल्प बीते बाहर दुइ घरी सो क्या उ. राम प्रेरित यामें सब बनत है ८५ शं. भुशुंडी के मोह से भरतादि अनेक रूप देखे राघव एके रूप है तो भ्रातादि नित्य कैसे बनैं गे उ. कौतुक के भरतादि में नित्य बिचार नाहीं ८६ शं. लोमस के प्रकरण में बिना आज्ञान हैन होते नाहीं और शिव जू

भुशुंडी की प्रमाण है तही कहे सो क्या उ॰ भक्ति रहित ज्ञान को अनादर भक्ति सहित को आदर दूनो पक्ष में यथा संख्य प्र॰ निज प्रभु मय देखिय जगत इत्यादि ८७ शं॰ ज्ञान सिद्ध भये पर ग्रंथि खोलब लिखे वाकी कौन ग्रंथि रही उ॰ अभ्यास की दृढ़ निवृति में तात्पर्य ८८ प्र॰ औरो एक गुप्त मत इत्यादि ८९ शं॰ पाछे कौन गुप्त मत कहे जाते यहां औरों गुप्त मत कहतहैं और हाथ जोरे में का भाव अरु शंकर भक्ति साधन और रामभक्ति साध्य के कवार ग्रंथिकार लिख आये पुनः इहां काहे लिखे उ॰ अद्वैत मत में ज्ञान बिना मोक्ष नाहीं यह सिद्धांत वाको गौण करि भक्ति से मोक्ष औ रभक्ति के आधीन ज्ञान विज्ञान यह गुप्त मत पाछे कहे बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन या प्रमाण से सभा में मुख्य गुरु तेहि ते कर जोरे वा राम जू को शील हेतु वा धर्म के अंगी करने को तात्पर्य ग्रंथकार वर्तमान समय में परस्पर शैव वैस्नवन का महा विरोध बिचार के परम धाम यात्रा के अंत सभा में श्रीराम बचन द्वारा शंकर भक्ति मुख्य साधन औ श्रीराम भक्ति साध्य फल यह सिद्धांत किये या को कोई बिरले जानत हैं ताते गुप्त कहे या रीति से कछु संदेह नहीं है प्र॰ बहुत जन्म के सुधि मोहि आई इत्यादि ९० शंका जन्मांतर स्मृति रहती है। पुराणन में तो इतिहास लिखा है परंतु इतिहासन में तात्पर्य है कि जो जल जल में मिले वा थलका ओही फिर आवेगा एही ते जीवन में अनेक वाद हैं। काल भी एक है परंतु केतना विस्तृत हीन है सो चारों युगन के व्यवस्था में ख्यात क्या चारों युगन में धर्म येवी चले हैं कुंडलिया॥ प्रथम काल एकै रह्यो बहु बिधि किमि ह्वै जाइ युग सूक्ष्मस्थूल सुन सुन एकै दरसाइ आय गत अंक न देखो एकै नव निगन जाय दशा फिर सून्य परे खो डोल यंत्र इति बेद युग कालहि अंतर खोल पितामह एक में कवहू जगमन्वंतर ४ श्रीस्वामीजी काट कही प्रभु चार युगन के सतयुग ब्रह्मा चहू मुख चारों बेद रहे त्रेता द्वापर बिस्नु जीव आनंद लहै १ रुद्र आय कलि ह्वै के चौदह भुवन दहे जीव लहा बिश्राम जहां अस भाव अहे २ मुख ते बिनु साधन जे निर्मल ज्ञान चहें सो कलि के दोषन को निज मन लाइ गहे गुण मैं कलि को रूप लोक बिपरीति कहे देख दया बिन कैसे केउ गुणहिं गहे अब कलियुग आवा घट घट पालक छाया कलि को प्रथम चरण जिन जानों द्वापर अघ को है चरण बखानो प्रथमहि को तिसरो कर मानो चौथोल

बजावा कूठ पखड अकर्म अदाया पाप चरण को चौखल खाया चरण धर्म को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिव लेइ पराने धरम करम के रूप हे राने कलि के डर साधन यहराने नामें पार लगावा २ नाम प्रताप स दोत जागा जाके डर कलि को तम भागा बाढ़त देव चर्ण अनुरागा जासो यश श्रुति गावा ४ बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव के जन्म नाहीं होत और चारि अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जात हे जैसे बाल वृद्ध इत्यादि कोई सिर्फ़ लड़का देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखे गा सो नहीं पहचाने गा और जन्म संसार का नाम हे और चारो युग का जो भेद कहते हैं सो प्रमाण लो समान जानव याही ते धरमन में विरुद्ध भासत है जैसे समान औ विशेष सो सब मतन में सामान्य विशिष्ट पायो जात है औ विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखो परै हे जैसे मांस भक्षन में विंध्य के दक्षिण वासी न को आज्ञा उत्तर वासी पतित होत हैं हनन धातु ते जीव में चरितार्थ नहीं होत जैसे घट मठ आकाश को नाश पावत है याही ते जीव व्यापक जानो जात है और जन्म सूक्ष्म स्थूल शरीर कर के भासतु है जैसे ८४ लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संस्कार और काल को धर्मन को मुख्य जान वो साम आयो दो· मान युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार बोध रहत निज मोह बस शंका करत उदार २ मानस मान अनेक युत मानी मन गम नाहिं। मम साहस शंकावली क्षमब साधु माहि माहिं ॥ २॥

इति सप्त कांड शंकावली संक्षेपः ॥
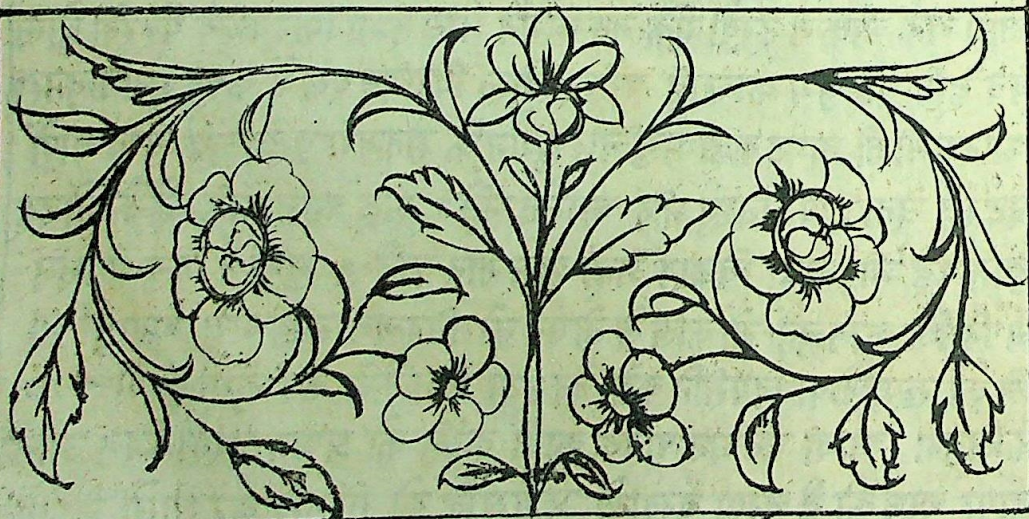
श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बिश्राम अंग प्रारम्भः ॥

बिश्राम नाम धर्यो ताको हेतु दोहा बिषै आप आकाश महं मन मटका जिमि चंग। याहि सूउत्तर बिचार मग प्रेरक कर थिर अंग १ अथ रामायण के परमार्थ पक्ष को बिचार। दो.। रामायण द्रुम मोक्ष फल गायत्री गउ बीच रामतु रक्षा अंकुरित बेद मूल शुभ बीज २ बेद बेद्य परब्रह्म भो दशरथ तन यह धार बालमीक ते बेद भो रामायण अवतार ३ कुंभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यो अनूप रामायण अरु बेद को भिन्न न जानो रूप ४ भक्तमाल बर ग्रंथ में कीन्हो यह निरधार बाल्मीक तुलसी भये कुटिलजीव निस्तार ५ बेद मूल हृद तें चली कथा भूमि के द्वार आतम ज्ञान तरंगिनी पान करत सुख सार ६ वार्ता याते गूढ़ाशय बेद रूप यह रामायण कथा भाग ते सगुणलीला प्रति पादन करतु है। अरु अंतर आशय तें परमार्थ पक्ष ऐश्वर्य छिपाइ के कहत है यथा मानुष देह ब्रह्मांड जानो मुक्त मार्ग सोइ लंक दुर्ग सो मन रूप मया सुरने रच्यो है नाना मनोरथ ते लंका में सुंदर मंदिर समूह जानो अविद्या समुद्र है सो राग द्वेष आदि मकर नक्र सर्पन ते पूरण भयंकर बिस्तीर्ण अथाह अति दुस्तर है अनेक संकल्प बिकल्पता में भंवर है बिषय आसा अंत तरंग है मोह रावण है अहंकार वाको भाई कुंभ करण है काम मेघनाद है क्रोध देवांतक गर्व नरांतक लोभ महोदर दुष्ट मत्सर अति कायबीर है कपट अकंपन है द्वेष दुर्मुख बीर मद सूल पाणी दंभ महा पार्श्व अधर्म दूषण असत्य कुंभ है पाषंड निकुंभ है असत्संग १ आलस्य २ बिक्षेप ३ आदि मोह राय के मंत्री जानो सत रज तम गुण सेनापति जानो अयश अनर्थ भ्रम संसयादि धूम्राक्ष यूपाक्ष शोणिताक्ष इत्यादि मुख्य बीर यथा योग्य जानो विद्या मद धन मद आदि अनेक मोह रावण के राक्षस सेना हैं ममता सूपनखा असत् वासना लोलुपता ईर्षा हिंसा तृष्णा अश्रद्धा आदि अनेक मोह भूपति की रानी हैं भृष्टता धृष्टता चिंता कृपणता कामना अनेक बिषय आसा आदि अनंत राक्षसी जानो जीव बिभीषण है सो दुष्टन के समूह में चिंता ग्रसित बसतु है इहां बिवेक राम जू बिचार लक्ष्मण ब्रह्म बिद्या सीता जू ज्ञान दशरथ भक्ति कौशिल्या बिषय बन भंजन हार अरु प्रवृति लंका दहन में प्रवीण जो बैराग्य सो हनूमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सतिसंग जाम्बवान ३ शील नील ४ संतोष नल ५ धीरज केशरी ६ अभ्यास गंध मादन ७ जप तप संयम श्रवणादि दिध्यासनादि आदि के मोक्ष के सब सावधान कुमुद १ द्विविद २ मयंद ३ सरभ ४ गंज ५ गवाक्ष ६ गवय ७ ऋषभ ८ सुषेन ९ देगदर्शी १०

आप बानर भालु बीर यथा योग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारना ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदि देव वृंद जानो मोह लंकेश ने सब सासीत करु दुखी ॥ इति संक्षेपः ॥ दो० चल्यो महा दल साज के नृप बिवेक इति बीर पहिर कवच श्रुति शास्त्र को अचल महा रण धीर १ सैन साज इत मोह नृप आयो रण भूधाय। अति विचित्र सब सुभट सुत मंत्री बंधु सहाय २ ठाढ़ो भयो बिवेक नृप मनसा भूमि मझार बहुत सुभट जूरु जहां बही रुधिर की धार ३ वार्ता तब असत्संग मंत्री के मंत्र तें मोह नृप अहंकार को जगाय के रणभूमि में पठायो सिंहनाद करत महा सेना लेइ चढ़्यो ता समय महा कोलाहल भयो बैराग्य सत्य धर्म आदि सब बीरन को घायल करि बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो तब बिवेक राय आत्म चिन्तन सर तें अहंकार को शिर काट गिरायो तब सेना में महा हाहाकार भयो दो० समाचार सुनि मोह नृप ह्वै गयो निपट उदास। शोक अगिनि उर में जरत दीरघ लेत उसास १ वार्ता उत तें मोह को सुत महाबली अति धूर्त मदन बीर महा सेना लेइ चढ़्यो इत तें बिवेक राय की आज्ञा तें बिचार कुंवर बैराग्य सत शीलादि बीर सेना ले चढ़ो परस्पर महायुद्ध भयो मोहन सोषन उच्चाटन आदि अनेक बाणन तें बिचार कुंवर को मार्‍यो ता पाछे असत्वासना बरछी उर में मार के बिचार को मूर्छित कियो दो० तब बैराग्य बिचार करि दीनो सतो अनूप अहो बंधु सोचत कहा सोधो शुद्ध स्वरूप १ जग मिथ्या रज्जु सर्प वत सत्य ब्रह्म निरधार छुद्रानन्द नित धरो हरो अनंग बिचार २ वार्ता तब बिचार बीर सावधान होइ के मदन को ललकार्‍यो दो० रे निर्लज्ज पापी कुटिल दुरबुद्धी धिक तोहि कहा वस्त्र ले बस करत लेत कृपण जन मोहि १ वार्ता या रीति तें परस्पर प्रचारत पुनः महायुद्ध भयो तब बिचार बीर ने मदन महा भट को मार गिरायो दो० समाचार सुन मोह नृप भयो सो निपट अधीर हृदय दाह अति शय भयो बिलपत कंप शरीर १ गई आस मोहि राज्य की मरो पुत्र वर बीर कुलमंडन अति काम सो दूजो बीरन धीर २ वार्ता तब अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन्ह के मंत्र तें सजग ह्वै कै मोह नृप बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो दो० उह युद्ध भो परस्पर सो बरण्यो नहिं जात कबहू दबत बिवेक नृप कबहू मोह सकात १ राजा मोह बिवेक को युद्ध भयो बहु काल नृप बिवेक बल अधिक लहि भो मन मोह बिहाल २ श्रवण मनन निध्या सवर निज आयु

ध लै हाथ गुरु श्रुति बचन प्रमाण सर हने मोह के माथ ३ मरो देखि नृप मोह को बहुतक कटक पराइ बहुत सुभट जूके तहां पाछे धस्यो न पाय ४ वार्ता मोह नृपति को रण भूमि में मरो देखि ममता तृष्णा चिंता ईरषा आदि नारि भ्रांति शोक युत बिलपि करत भई इहां दोहा । सत्य शील बैराग्य लौं मुदित सकल परिवार सुरनर मुनि जय जय कियो बाढ़ो मोद अपार १ वार्ता जीव स्वराज्य पायो तब धर्म सत्य बैराग्यादि बीरन सहित अरु बिचार बंधु सहित बिवेक राय ब्रह्म विद्या लेइ के निज राज धानी में अकंटक राज्य करत भयो विवेक चक्रवर्ती भूपति को जब ते प्रताप रवि उदय भयो तब ते काल कर्म गुण स्वभाव कृत दोष दुख काहू को न भयो तीनों लोक में प्रकाश भयो तम कहूं न रह्यो अविद्या निसा नाश भई अघ उलूक छिप गये क्रोधादि कैरव सकुचे मत्सर मानादि चोरन को अभाव भयो सुख संतोषादि कोक गये विगत शोक भये प्रबोध चन्द्रोदय नाटक आदि सद ग्रंथन के सम्मत से यह परमारथ पक्ष अति दृढ़ परम प्रमाणीक जानो और नाटक अनेक दोष गुण के प्रधानता कर के यथा बिवेक मोहादि करके नाम अनेक ता नाम में शंका न चाही ॥

॥ इति समाप्त श्रीतुलसीकृत बिनय पत्रिका ॥ यथा देव देहि अवलंब कर कमल कमला रमन दमन दुख समन संताप भारी ज्ञान राकेस ग्रासन विधुंतुद दलन काम करि मत्त हरि दूषनारी १ देव बपुष ब्रह्मांड सु वृत्ति लंकापति दुसा रचित मन दनुज मय रूप धारी विविध कोसौध अति रुचिर मंदर निकर सत्व गुण प्रमुख त्रय कटक कारी २ देव कु नृप अभिमान सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह दुस्तर अपारं नक्र रागादि संकुल मनोरथ सकल संग संकल्प वीची बिकारं ३ देव मोह दस मौलि तद भ्रात अहंकार पाकारि जित काम बिश्राम हारी ४ देव द्वेष दुर्मुख दंभ पर अकंपन पट दर्प मनुजाद मद सूल पानी अमित बल परम दुर्जय निशाचर चमू सहित षट वर्ग जो यातु धानी ५ देव जीव भव दंघ्रि सेवक बिभीषण बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता नियम जम सकल सुर लोग लोकेश लंकेश बस नाथ अत्यंत भीता ६ देव दीन उद्धारण रघुबर्य करुणा भवन समन संताप पापौघ हारी बिमल बिज्ञान विग्रह अनुग्रह रूप भूप बर बिबुध नर्मद खरारी ७ देव विश्व बिख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्व मर्याद व्यालारि गामी ब्रह्म बरदेव बागीश व्यापक बिमल बिपुल बलवान नि

वाए स्वामी २ देव सर्व मेवात्र त्वद्रूप भूपाल मणि व्यक्त मव्यक्त गत भेद बिष्णो भुवन भव दंस कामारि बंदित पद द्वंद मंदाकिनी जनक जिष्णो ३ देव प्रकृति मह तत्व शब्दादि गुण देवता व्योम मरु दग्नि अवलांबु उर्वी बुद्धि मन इंद्रिय प्राण चितातमा काल परमाणु चिच्छक्ति गुर्वी ४ देव आदि मध्यांत भगवंत त्वं सर्व गत मीश पश्यंति ते ब्रह्म वादी यथा पट तंतु घट मृत्तिका सर्प स्रग दारु करि कनक कट कां गदादी ५ देव गूढ़ गंभीर गर्व घ्न गूढ़ार्थ वित गुप्त गोतीत गुरु ज्ञान ज्ञाताज्ञ यज्ञान प्रिय प्रचुर गरिमा गार घोर संसार पर पार दाता ६ देव सत्य संकल्प अति कल्प कल्पांत कृत कल्पना तीत अहि तल्प वासी बनज लोचन बनज नाभ बन दाम बपु बनचर ध्वज कोटि लावण्य रासी ७ देव सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्य सन हर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गातिहर्ता बेद गर्भर्भका दम्र गुण सर्वक पर गर्व निरबाय कर्ता ८ देव भक्त अनुकूल भव शूल निर्मूल करि तूल अघ नाम पावक समानं तरल तृष्णा तमी तरणि धरणि धरन सरनि भय हरण करुणा निधानं ९ देव बहुल वृंदार का वृंद वंदारु पद वंदि मंदार मालोर धारी पाहि माहीस संताप संकुल सदा दास तुलसी प्रणत रावनारी १० देव संसार कांतार प्रति घोर गंभीर घन महान तरु कर्म संकुल मुरारी वासना वल्लि खर कंटका कुल बिपुल निविड़ विटपाटवी कठिन भारी ११ देव विविध चित्त वृत्ति खग निकर सेनो लूक काक कट गृध्र आमिष अहारी अखिल खल निपुन छल छिद्र निरखत सदा जीव जन पथिक मन खेद कारी २ देव क्रोध करि मत्त मृग राज कंदर्प मद दर्प वृक भाल अतिउग्र की महिष मत्सर क्रोध सूकर हर फेरु छल दंभ मार्जार धर्मा ३ देव कपट मर्कट बिकट व्याघ्र पाखंड दुखद मृग व्रात उत्पात कर्ता । हृदय अवलोकि यह शोक शरणागतं पाहि मां पाहि भो विश्व कर्ता ४ प्रबल अहंकार दुर्घट महीधर महा मोह गिरि गुहा निबिडांध कारं चित्त वैताल मनुजाद मन प्रेत गण रोग भो गौघ वृश्चिक विकारं ५ देव बिषय सुख लालसा दंस मसकादि खल झिल्लि रूपादि सब सर्प स्वामी तत्र आक्षिप्त तव बिषम माया नाथ अंध भय मंद व्यालाद गामी ६ देव घोर अवगाह भय आपगा पाप जल पूर दुःप्रेक्ष्य दुस्तर अपारा यक षड वर्ग गो नक्र चक्रा कुलं कूल शुभ अशुभ तीव्र धारा ७ देव सकल संघट्ट पोच शोच बस सर्वदा दास तुलसी बिषम गहन गस्त त्राहि रघुवंश भूषण कृपा करि कठिन काल

बिकराल कलि काल नसे ८ प्रमाण श्रीस्वामी जू राम चरित कछु का
हि लगाय सुनि मति हूं भरमाय त्रिभुवन भावै प्रगट होइ के राघव जन्म
कहाय भावन हूं को राम प्रकासत ए तो पद ठहराय १ कोप मुनिन की
सिखा रूप धरि प्रगट जनकपुर आय रामप्रिया बन काज साधि पुनः
बन में गयो समाय २ राम सिया को जनम करम नहिं तिनहीं उदित सु
भाय ते कैसे जानि हैं जे मदिरा अंचे रहें बैराग्य ३ देव भाव बानर भालू
तन धारि के भये सहाय त्रिभुवन भावै त्रिभुवन धनी बन रहा अवध में
छाय कुंभकर्ण अहंकार राम गर्व प्रहारी जाको छुवत गिरत ब्रह्मादिक
ज्ञानी होत असार परब्रह्म हू निर्गुण भासा लगत अकारह कार १ श्री
रा ऊंचाई भुज बल सों इठ पद गत हिकचार सब को दुख दायक अति नि
र्भय अंग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके भुज काटे तब शिर काटप
चारि पद काटे तब हूं धर दौरत डारी सिंधु मझारि ३ तजै उंचाई मान
गैर तन धरिये दीन बिहार देव मुदित श्रीरामचंद्र पर बर्षत सुमन अ
पार ४ इंद्र जीत जो काम है सबही सतावत छल के मारत परगट मारत वी
रन में सरनाम जाको नाम सुनत ही कांपैं ब्रह्मादिक सरधाम मुनि व्रत नहिं
नसावत १ ज्ञानी योगी बैरागिन को मोल लेत बिनु दाम ज्ञान ध्यान
सब बिसर जात है चमकत आछो चाम तब नाच नचावत लषण यती जा
हि २ हनुमंतो ब्रह्म चरण विश्राम काम शत्रु इनहीं को पठवा काम हनन को
राम तब मा मन भावत ३ इंद्र जीत छल बल करि हारा लक्ष्मण एक वा
णतें मारा बाज रहा है रेतन गारा मिटा जगत को घाम लागे गुण गावत
४ इत्यादि दोहा बेद रटन पुनि शास्त्र सब आगम सकल पुराण एक वा
क्य ता सबन के बेद्य एक भगवान १ अस दशामहं बिषमता किन समै न
बिरोध तहं दुविधा कहं पाइयतु जहं निज पूरण बोध २ जैसें लहरि समु
द्र में पृथक् भाव दरसाय पलट मिलत जब सिंधु में एक भाव है जाय ३
जैसे पुरवासी सकल कहूं बैर कहुं भीति कठिन परै जब नगर को तब सब
एकै रीति ४ एक पिता के पुत्र बहु करत परस्पर रारि सुनि निंदा निज तात के
सबहि होहिं हितकारि ५ एक नगर के बहुत पथ सकल कुटिल बल जात
अंत प्राप्य एकै नगर नाहिं बिरोध कछु तात ६ जैसे नाना देस तें चली नदी
बहु भांति भई अभेद मिल सिंधु में जैसे मति की पांति ७ आदि मध्य

अरु अंत लौं ज्यों तरु बीज सरूप लघु दीरघ त्यौं ग्रंथ सब व्यापक वेद अनूप ८ निगमागम बहु मत कहत यदपि कांड त्रय भेद एक वाक्य ताके भये एकै प्राप्य अखेद ९ प्रकृति दोष तें मोह तम छायो मति संसार। जल्पित कल्पित भेद बहु मत मदिरा मतवार १० गुरु श्रुति बचन बिचार रवि उदै दोष निर्मूल। एक वाक्य ता ज्ञान लहि मिटत मोह मय शूल ११ वार्त्ता यह ले रामायण की शंका में एक सत्यत्व दूसरे प्रसंग भेद में लिखा सो सत्यत्व में नाटक रीति कर के और प्रसंग काल युगादि की एक वाक्य ता करके कल्प भेद औ देव न में अभेद तें संशय नहीं जानो गयो सोरठा रामायण सिद्धांत ज्ञान भक्ति संपुट कियो नाम रत्न विख्यात प्रेम भक्ति मणि लेस तें। वार्त्ता प्रथम प्रकास में ज्ञान भक्ति संपुट में नाम रत्न को स्थापन कियो दोहा। स्थान सर्ग बिसर्ग पुनि पोषण आदि बिचार दस लक्षण सु पुराण के प्रथम हि कहे उदार २ वेद अर्थ के बोध कह अंग शास्त्र षट मान। शास्त्र अंग में सबन को भाष्यो अर्थ सुजान ३ पूरब मीमांसा बिषे धर्म तत्व प्रति पाद्य स्वर्गादिक फल धर्म को ज्ञान प्रयोजन साध्य ।४। वैशेषिक शास्त्र हि कियो सु मुनि कणाद अनूप। सप्त पदारथ ज्ञान फल भावा भाव सरूप। न्याय शास्त्र गौतम ऋषि भाष्यो तर्क प्रधान प्रमाणादि षोड़श अरथ बोध प्रयोजन जानि ६ योग शास्त्र पातंजली मुनि कीनो सुख कंद जावत वृत्ति निरोध तें टूटत भव को फंद ७ सांख्य शास्त्र को बिषय सुख प्रकृति सु पुरुष विवेक हनि त्रिविध दुख मुक्ति सुख कपिल मुनि मति टेक ८ वेद व्यास बेदांत को आचार जबर लेखु जीव ब्रह्म के एकता बिषय मोक्ष फल देखु ९ बहु शाखा साखी सुखद वेद अपौरुष वाक चार बेद त्रय कांड फल मोक्ष अवांतर नाक २० तंत्र भाव में शिव कियो यंत्र मंत्र प्रति पाद्य शंभु शक्ति के ज्ञान तें मोक्ष आदि फल साध्य २१ वार्त्ता द्वितीय प्रकाश में पुराण शास्त्र बेद तंत्र को सिद्धांत अर्थ लिख्यो दोहा। भरत आदि साहित्य के आचारज मति चारु कथित तासु दस कर्म फल रामायण सिंगारु २२ वार्त्ता तृतीय प्रकाश में यावत्काल व्यंग निरूपन कियो चतुर्थ प्रकाश में प्रसंग अंग कर के यावत् रामायण तात्पर्य और छंद दोहा चौपाई को नेम कियो दो॰ लंका शंका दहन को हनुमत बुद्धि उदार मुख्य प्रश्न उत्तर लिखो समुझै सुमति उदार २३

वार्ता पंचम प्रकाश मे मुख्य मुख्य शंका समूह को समाधान कियो
दोहा । अमर सिंह आदिक जिते कोश कार सउदार बिषम शब्द के अ
र्थ को परकाशक उपकार २५ वार्ता छठे प्रकाश मे कोश अंग करके बि
षम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में बिश्राम अंग
करके नाटक रीति भाव प्रधान सें रामायण जू कथा भाग से सगुण प्र
ति पादक औ अंतर आसय ते परमार्थ पक्ष सत्यत्व प्रति पादक यह
निरूपण कियो औ प्रसंग के भेद मे देवतन को अभेद जनाय के अन
त शक्ति प्रभु में सब अधिरूढ़ जानो चाहिये और कलियुग व्यवस्था
इत्यादि समदरसायो और प्रथम लिख आये ते मुख्य अर्थ है सो ए
ही अक्षरन सों ज्ञात हैं और जो शंका करत हैं यह जो सप्तम अंग लि
ख आये याते प्रगट बाध होइ गो एतेहु में जो शंका करैं तहां प्रमाण
चौ० एतेहु पर करहिं जे शंका मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका । इति
दोहा । करि प्रसंग के अंग तें हरि यश हेतु जनाय यथा भानु समता लि
षे खद्योतो गनिजाय १ रामायण सर सिज सरिस चहियत भानु प्रकाश
यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सकत विकाश २ रामायण के अर्थ को
को समर्थ मति वंत यथा सिंधु खग चोंच भरि तृप्ति लहत नहि अंत ३
को तुलसी भाषा कवन कौन बेद को सार कौन कोश तिहिं तिलक कोना
ही कहत गंवार ४ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर । रामायण
जाने कहा पर धन पर तिय चोर ५ कवि कोविद रघुबर भगत मानस मा
न सुजान कीसन सिंधु गंभीरता मंदिर गिरि पहिचान । मानस पाराव
र को पार वार को जान मंदिर गिरि बूड़त जहां मम मति की परमान
७ अष्टादश षट संहिता यामल तंत्र विचार धर्मनीति श्रुति सागर हि
तुलसीकृत बिस्तार ॥ बरवै ॥ श्रीकाशी पति पितु की आज्ञा पाइ द्वी
गज राज कथनि नभ मेल मिलाइ ९ चौ० सरल अरथ आखर की थोरी
सहत प्रमान सांत रस बोरी हर देश दरसावन हारी । जैनक सग निधुवि मल
तमारी ॥१०॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपिका
टीकायां बिश्राम अंग सप्तमः ७ प्रकाशः मानस दी
पिका समाप्ताः संवत १९३० कार्तिक शुक्ला ११ शनिवासर ॥

विज्ञापन पत्र

यह पुस्तक अर्थात् रामायण तुलसीकृत जो अति प्रसिद्ध और बहुधा देहली और मेरठ और बनारस के यन्त्रालयों में छपी है इस छापेखाने में प्रथम बार पद २ पृथक् २ करके छपी है - कि हजारों अशुद्धियां जो पहिली छपी हुई में वर्तमान थीं अनेक प्रतियों से यन्त्रालय के पण्डितों ने यथा शक्ति शुद्ध की और कोश उसका क्रिया पद सहित अति श्रम से रचना किया गया कि जिस का हाल देखने और पढ़ने वाले बिचार करें गे -

उक्त रामायण के विशेष हमारे यन्त्रालय की पहली छपी हुई रामायण जो अति शुद्ध और सब भारत वर्षीय भर में अति विख्यात और प्रचलित है अबतक ५०००० पुस्तकें छपी हुई वर्तमान हैं -

विशेष इन रामायणों के एक और रामायण बहुत श्रेष्ठ और बहुत मोटे अक्षरों की जो आज तक हिन्दुस्तान के किसी यन्त्रालय में नहीं छपी मुद्रित हो रही है कि जिस को बालक और वृद्ध भी दूर से बांच सके हैं जिस को दरकार हो हमारे छापे खाने से पत्र की द्वारा महसूल अदा कर के मंगा ले -

और जो इस रामायण को सौदागरी तौरपर ख़रीद करें गे उन को कमीशन भी दी जावे गी -

उक्त रामायणों के विशेष बहुधा फ़ारसी, अरबी, और उर्दू पुस्तकें इस यन्त्रालय अर्थात् मुंशी नवल किशोर लखनऊ और कानपुर में छपी हुई वर्तमान हैं जिसकी फ़िहरिस्त छपी हुई वर्तमान है जिस मनुष्य को लेना मंज़ूर हो पत्र के द्वारा मंगाले और हर तरह का काम शिला-क्षर और सीसाक्षर और फ़ारसी और अरबी इस छापे खाने में मु-द्रित हो सक्ता है -

और महाभारत भाषा जो अनेक छन्दों में काशी नरेश महाराजाधिराज की आज्ञा से कलकत्ते के किसी छापे खाने में छपी थी हमारे टैप के कारखाने में उत्तमता से छप रही है और शीघ्रही वह महासागर १८ पर्व्व सब लोगों को जो इस के इच्छिक हैं प्रगट होगा जिन को ख़रीदना मंज़ूर हो मुन्शी नवल किशोर के यन्त्रालय से दरख़्वास्त करें